हिन्द पॉकेट बुक्स की परम्परा रही हैं कि अपने लाखों-करोड़ों पाठकों को सुन्दर, सस्ती एवं सुरुचिपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध कराते रहें। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए प्रगति पुस्तक माला का आयोजन किया गया है जिसमें ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणाप्रद, रोचक एवं मनोरंजक पुस्तकों का विशिष्ट आकार एवं नयनाभिराम रूपसज्जा में सतत् प्रकाशन किया जा रहा है।

घंटाघर का शैतान

अमेरिका के विश्वविख्यात कथाकार, जिनकी रहस्य में डूबी कहानियों के करोड़ों पाठक हुए और आज लगभग 100 साल बाद भी ललक है। कथा की इस शैली को साहित्य में मान्यता दिलानेवाले शिल्पी।

प्रगति पुस्तक माला

Rs. 15/-

ISBN 81-216-0504-0

हिन्द पॉकेट बुक्स

AHW HPB HINDI SERIES

एडगर एलन पो

घंटाघर का शैतान



एडगर एलन पो

घंटाघर का शैतान

हिन्द पॉकेट बुक्स

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

घंटाघर का शैतान (रहस्य-कथाएं)

प्रथम संस्करण : 1996
आवरण : धर्मवीर
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
दिलशाद गार्डन, जी.टी. रोड (शाहदरा), दिल्ली-110 095
टाइप सेटिंग : एस.पी. प्रिंटेक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110 092
मुद्रक : बालाजी ऑफसेट, दिल्ली-110 032

GHANTAGHAR KA SHAITAN (Stories of Suspense)
EDGAR ALLAN POE
ISBN 81-216-0504-0

क्रम

नाक की महिमा

मैं हूं–मेरा मतलब है, मैं था–एक बड़ा आदमी, किन्तु मैं न तो किसी महाग्रंथ का लेखक हूं, न तो कोई नकाबपोश हूं। मेरा नाम टामस स्मिथ है, और मैं गप्पनगर में किसी जगह पैदा हुआ था। अपने जीवन में पहला काम, जो मैंने किया था, दोनों हाथों से अपनी नाक पकड़ ली। मेरी मां ने इसे देखा और मुझे प्रतिभावान कहकर पुकारा; मेरे पिता तो मारे ख़ुशी के रो पड़े; उन्होंने नासिका विज्ञान पर एक पुस्तक मुझे ख़रीद दी। चड्ढी पहनने लायक़ होने के पहले ही मैं न केवल उस पुस्तक को चाट गया था, जो इस विषय (नाक) पर प्लिनी, अरस्तू, अलेक्ज़ेण्डर रास, मान्यूटियस फेलिक्स, हरमैनस पिक्टोरियस, डेल रायो, बार्थोलिनस तथा सर टामस ब्राउन जैसे विद्वानों ने लिखा था।

अब मैं इस (नासिका) विज्ञान की गहराइयों को समझने लगा था,

और शीघ्र ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुंच गया कि यदि किसी आदमी के पास काफ़ी बड़ी नाक है, तो वह सिर्फ़ उसका अनुसरण करके प्रसिद्धि प्राप्त कर सकता है, किन्तु मेरा ध्यान केवल सिद्धान्तों तक ही सीमित न था; हर रोज़ सुबह एक-दो घूंट चढ़ाने के बाद मैं अपनी नाक को बड़ी करने के लिए दो-चार झटके देता था। जब मैं बालिग़ हुआ, मेरे पिता ने एक दिन मुझसे अपने पढ़ने के कमरे में आने के लिए कहा।

जब हम दोनों वहां पहुंच गए, उन्होंने कहा–"मेरे प्यारे बेटे! तुम्हारे जीवन का मुख्य लक्ष्य क्या है?"

मैंने कहा–"पिता जी, नासिका विज्ञान का अध्ययन।"

वह बोले–"क्या कहा, टामस, नासिका विज्ञान?"

मैं बोला–"हां, नासिकाओं का विज्ञान।"

उन्होंने पूछा–"तुम मुझे बता सकते हो कि नाक का मतलब क्या होता है?"

मैंने कहा–"पिताजी, करीब एक हज़ार लेखकों ने नाक की विविध प्रकार से व्याख्या की है (मैंने अपनी जेब घड़ी निकालकर देखी), इस समय दोपहर है, या उसके आसपास समझ लीजिए। आधी रात तक उन सबके विषय में बातचीत करने के लिए अभी काफ़ी वक़्त हमारे पास है। अब मैं शुरू करता हूं। बार्थोलिनस के अनुसार नाक वह उभार, वह शोथ, वह मांसपिण्ड है, जो..."

वृद्ध पिता बीच में ही बोल उठे–"बस टामस, इतना काफ़ी है। मैं तुम्हारे ज्ञान-विस्तार पर आश्चर्यचकित हूं...सचमुच चकित हूं टामस। यहां आओ (उन्होंने मेरी बांह पकड़कर थपथपाई)। अब तुम अपनी शिक्षा को खत्म हुआ समझो। और अब वक्त आ गया है कि तुम अपना रास्ता नापो (उन्होंने मुझे सीढ़ियों के नीचे धकेलकर दरवाज़े के बाहर निकाल दिया)। दूर हो मेरे घर से, भगवान तेरा भला करे।"

चूंकि मैं अपने अन्दर ईश्वरीय प्रेरणा का अनुभव कर रहा था, इसलिए मैंने इस घटना को और कुछ न समझकर अपने लिए कल्याणप्रद समझा और अपनी नाक का अनुसरण करने का निश्चय कर लिया। मैंने उसे दो-एक झटके दिए और नासिका विज्ञान पर पुस्तिका लिख डाली। सारे गप्पनगर में तहलका मच गया।

"आश्चर्यजनक प्रतिभा!" त्रैमासिक ने लिखा।

"सर्वश्रेष्ठ शरीरशास्त्री।" नवीन मासिक का कहना था।

"श्रेष्ठ लेखक।" एडिनबरा ने कहा।

"महामनाव।" ब्लैकउड ने कहा।

"यह कौन हो सकता है?" श्रीमती वाग्चन्द्रिका ने कहा।

"यह क्या हो सकता है?" बड़ी कुमारी वाग्चन्द्रिका बोली

"यह कहां हो सकता है?" छोटी कुमारी चन्द्रिका ने कहा।

किन्तु मैंने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया और एक चित्राकार की दुकान में प्रवेश किया।

रानी आत्मसुखी वहां बैठी अपना चित्रांकन करवा रहीं थीं, सरदारनी अमुक रानी की कुतिया को पकड़े बैठी थी, कुंवर यह और वह उनसे हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे, और राजा लंजाधुर उनकी कुर्सी के पीछे खड़े थे। मैं चित्राकार के पास चला गया और मैंने अपनी नाक उसके आगे कर दी।

"आह, कितनी सुन्दर!" रानी ने निःश्वास लेकर कहा।

"बड़ी ही ख़ूबसूरत।" सरदारनी तुतलाई।

"भयानक।" कुंवर ने कराहकर कहा।

"घृण्य।" राजा बड़बड़ाया।

"इसके लिए तुम क्या (पारिश्रमिक) लोगे?" चित्रकार ने पूछा।

"हज़ार पौण्ड? नाक को रोशनी की ओर घुमाते हुए उसने पूछा।

"निश्चय ही।" मैंने कहा।

"सुन्दर।" नाक की ओर देखते हुए वह बोला।

"हज़ार पौण्ड।" नाक को एक तरफ़ मरोड़ते हुए मैंने कहा।

"प्रशंसनीय।" वह बोला।

"हज़ार पौण्ड।" मैंने फिर दोहराया।

"आपको मिलेगा," उसने कहा—"कैसी बढ़िया चीज़ है!"

इसके बाद उसने मुझे दाम चुका दिए और मेरी नाक का एक चित्र बना लिया। मैंने एक अच्छे मुहल्ले में मकान ले लिया और सम्राज्ञी को अपनी पुस्तिका 'नासिका विज्ञान' का निन्नानवेवां संस्करण भेंट किया, इसके साथ लेखकं की नाक का एक चित्र भी था। राजा लजाधुर ने मुझे राजकीय प्रीतिभोज में बुलाया।

वहां सब बड़े-बड़े लोग और अन्वेषणकर्ता उपस्थित थे।

इस्ताम्बूल से एक अतातुर्क आए थे। उन्होंने सुनाया कि फ़रिश्ते दरअसल, मुर्ग़े और वृषभ थे, छठी जन्नत में किसी के सत्तर हज़ार सिर और सत्तर हज़ार जिव्हाएं हैं और आसमानी नील रंग की एक गाय अपनी चार सौ सींगों पर धरती को उठाए हुए है।

वहां एक सर निश्चित विरोधाभास थे। उन्होंने कहा कि सब मूर्ख तत्त्वज्ञानी होते हैं और सब तत्त्वज्ञानी मूर्ख होते हैं।

एक सदाचारशास्त्र के लेखक भी थे। उन्होंने अग्नि, ऐक्य एवं अणुओं के सम्बन्ध में बातें कीं, फिर उभयांग एवं पूर्वजीवित आत्मा, ममत्व एवं विषमता, आदिप्रजा आदि के विषय में बोलते रहे।

एक पुराणशास्त्री थे, जिन्होंने यूसेबियस एवं एरियेनस, किंवदन्तियों, नाइस की धर्मपरिषद्, ईसा के अन्तिम भोज में रक्त

की विद्यमानता के सिद्धान्त (कानसब्सटैंशियलिज़्म), समजननांशी इत्यादि विषयों पर लेक्चर झाड़ा।

फ्लोरेंस (इटली) से आए थे एक महाशय टुनटुनिया, जिन्होंने आर्पिनो, कार्पाशियो, आर्गेस्तिनो, टीटियम की स्वर्णिम महत्ताओं इत्यादि पर लंतरानी की।

उनमें थे फेल्ज़पार नाम के भूगर्भशास्त्री। उन्होंने आन्तरिक अग्नियों, तृत निर्मितियों, गैसीय, तरल एवं ठोस वस्तुएं, स्फटिक एवं अवमृद, परतदार चट्टान एवं शार्ल, सेलखड़ी और ग्रेनाइट, अभ्रक-पट्टिका और मृदु प्रस्तर के विषय में हमें बताया।

गप्पनगर विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भी उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि चांद को थ्रेस में बेंदिस, मिस्त्र में बूबैस्तिस, रोम में दियान और यूनान में आर्तेमिस कहा जाता है।

वहां थे डेलफ़ाइनस बहुभाषी। उन्होंने बताया कि एसचाइलस के तिरासी लुप्त दुःखान्त नाटकों का ईसोइयस की चौवन वक्तृताओं, नाइसियाज़ के तीन सौ एक्यानवे भाषणों, थ्रियूफ़्रेस्तस के एक सौ अस्सी निबन्धों, अपोलिनियस के शांकव भाग की आठवीं पुस्तक, पिण्डार के भजनों तथा लघु होमर की तैंतालीस दुःखान्तिकाओं का क्या हश्र हुआ।

एक आधुनिक अफ़लातूनमतवादी आए थे। उन्होंने पारफ़ाइरी

आयमाब्लिकस, प्लाटिनस, प्रोक्लस, हायरोकिल्स, मेक्ज़िमस टायरियस एवं साइरियानस इत्यादि विचारकों से अनेक उद्धरण सुनाए।

अब आई मेरी बारी। मैं पिक्टोरियस, डेल रायो, अलेक्ज़ेडर रास, मान्यूटिस, बार्थोलिनस, सर टामस ब्राउन तथा नासिका विज्ञान पर बोला।

"चमत्कारपूर्ण, चतुर मानव!" राजा ने कहा।

"परमश्रेष्ठ।" उनके अतिथियों ने दोहराया।

दूसरे दिन रानी परमश्री आत्मसुखी ने मुझे दर्शन दिए और मेरी चिबुक स्पर्श करके मुस्कराते हुए मुझसे पूछा कि 'नृत्यशाला' में आना आप पसन्द करेंगे?

"ख़ुशी के साथ।" मैंने उत्तर दिया।

"नाक के साथ?" उन्होंने पूछा।

"सब कुछ जैसा मैं हूं।" मैंने उत्तर दिया।

"तब यह आमंत्रणापत्र है। क्या मैं लोगों से कह सकती हूं कि आप वहां आएंगे?"

"प्रियदर्शिनी, सच्चे हृदय के साथ।"

"शित्, नहीं, अपनी पूरी नाक के साथ?"

"हां, हां, बिल्कुल नाक के साथ।"

समय पर मैंने अपनी नाक को दो-एक झटके दिए और

नृत्यशाला में पहुंच गया। कमरे ठसाठस भरे हुए थे; सांस लेना मुश्किल था।

"वह आ रहा है।" किसीने सीढ़ी पर से कहा।

"वह आ रहा है।" उससे और ऊपर खड़े किसी ने दोहराया।

"वह आ रहा है।" उसके भी आगे के किसी आदमी ने कहा।

"वह आ गए।" रानी ने कहा–"वह आ गए मेरे नन्हे दोस्त।" उसने मुझे दोनों हाथों से पकड़ लिया और मेरी नाक पर नज़र गड़ा दी।

"क्या खूब।" फ्रांस की मादम अंकुरिता ने कहा।

"जैसे लंगूर।" स्पेन के डान ख़ंजर ने कहा।

"हां, हां, भरपूर।" इटली के काउण्ट मकर ने कहा।

"क्या खूब शक्ल है।" जर्मनी के बैरन भयंकर ने चिपकाया।

आर्केस्टा गाने लगा–"जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ।"

सब तालियां बजा-बजाकर एक साथ चिल्ला उठे–"बहुत खूब। कैसा मनोहर! कैसा मनोरंजक!" (ज़ोर की तालियां।) मेरे लिए यह सब असह्य हो उठा। इसमें वास्तविकता नहीं थी। वह बहुत बुरा था। मैं सह न सका, मुझे गुस्सा आ गया।

मैंने बैरन से कहा–"तुम हो लंगूर।"

"महोदय", उन्होंने ज़रा ठहरकर कहा–"आप गधे हैं।"

इतना काफ़ी था। मैंने भी तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया। दूसरे दिन छः बजे मैंने उसकी नाक उड़ा दी और तब अपने मित्रों के बीच पहुंचा।

"मतिहीन।" पहले ने कहा।

"मूर्ख।" दूसरे ने कहा।

"गंवार।" तीसरे ने कहा।

"अनाड़ी।" चौथा बोला।

"बुद्धू।" पांचवे ने कहा।

"गधा।" छठा बोला।

"भग यहां से।" सातवें ने कहा।

इन सब बातों से मैंने अपने को अत्यन्त अपमानित अनुभव किया और अपने पिता से सलाह लेने गया।

मैंने कहा–"पिताजी, मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है?"

उन्होंने उत्तर दिया–"मेरे बेटे! अब भी वही नासिका विज्ञान का अध्ययन तुम्हारा उद्देश्य है, किन्तु बैरन की नाक पर आघात करके तुमने निशाने के बाहर चोट की। यह सत्य है कि तुम्हारी नाक सुन्दर है, किन्तु बैरन भयंकर की तो अब नाक रही ही नहीं। तुम उस क्षेत्र में अब मृत हो, अब वह आज का प्रधान आकर्षण बन गया है। इस गप्पनगर में बड़ी एवं ऊंची नाकवाला महान् है, किन्तु जिसे नाक ही नहीं है, वह उससे भी महत् है।"

आदमी जो चुक गया!

(पिछले बगाबू एवं किकापू युद्धाभियान की एक कहानी)

इस समय याद नहीं आ रहा है कि उस वस्तुतः सुदर्शन के ब्रेवेट ब्रिगेडियर जनरल जॉन ए.बी.सी. स्मिथ के साथ मेरा प्रथम परिचय कब और कहां हुआ था। इतना तो निश्चित है कि किसी ऐसी सार्वजनिक सभा में, जो निश्चिय ही किसी बड़े महत्त्वपूर्ण विषय को लेकर हुई होगी, और जिसके स्थान का नाम मैं अकारण ही भूल गया हूं, किसीने मेरा परिचय उनसे कराया होगा। दरअसल बात यह है कि इस परिचय के समय मैं इस प्रकार की थरथराहट और घबराहट से भर उठा था कि समय और स्थान की कोई निश्चित छाप ही मन पर नहीं रह गई। शरीर-रचना से ही मैं घबरा जाने वाला हूं–मेरे साथ यह एक पारिवारिक दोष है, और मैं इसे दूर नहीं कर पाता। विशेषतः जहां कोई भेद की बात होती है, कोई ऐसी बात जिसको मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता, वहां मुझमें उत्तेजना की दयनीय स्थिति पैदा हो जाती है।

यहां मैंने जिस व्यक्ति का उल्लेख किया है, उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में कुछ विलक्षणता थी, हां, विलक्षणता, यद्यपि यह शब्द भी मेरे आशय को पूर्णतया प्रकट करने में असमर्थ है। यह कुछ क्या था, इसे बता सकना मेरे लिए असम्भव था। शायद वह ऊंचाई में छः फ़ुट रहा होगा, और उसकी उपस्थिति अनोखे रोबवाली थी। उस सम्पूर्ण मानव में विशिष्टता की मुद्रा थी, जिससे उसके श्रेष्ठ संस्कार एवं उच्च वंशगौरव का पता लगता था। इस विषय पर–स्मिथ के शरीर-दर्शन विषय पर–मुझे सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का वर्णन करने में एक प्रकार विषयादयुक्त सन्तोष होता है। उसका केश युक्त मस्तक ऐसा था जो ब्रूटस को भी सम्मानित कर सकता था–उससे अधिक समृद्ध रूप से लहराते या कान्तिमान केश कहां से मिल सकते हैं? यह केशसमूह काला स्याह था–और यही रंग, या कहिए कोई रंग नहीं, उसके अकल्पनीय गलमुच्छों का भी था। आप देखते हैं इन गलमुच्छों के बारे में तो जोश के बिना बात ही नहीं कर सकता। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि इस पृथ्वी पर वे युगल गलमुच्छें सबसे सुन्दर थीं। वह मुंह को घेरे हुए थीं और कभी-कभी मुंह, जो उनके परिणाम में आसमान था,

उनमें अंशतः छिप जाता था। जैसे दांतों की कल्पना की जा सकती है, उनमें उसके दांत बिल्कुल मोती की लड़ी-से और अत्यंत कान्तियुक्त तथा धवल थे। प्रत्येक उपयुक्त अवसर पर, उनके बीच से होकर अत्यंत स्पष्ट, सुरीली और शक्तिमती वाणी निकलती थी। आंखों के मामले में भी मेरा परिचित व्यक्ति विशेष रूप से समृद्धशाली था। उसके नयन-युगल में से एक-एक अनेक सामान्य नयनों के बराबर था। वे आंखें गहरे कपिश वर्ण की, बहुत बड़ी-बड़ी–आयतकार और प्रकाशपूर्ण थीं। और उनमें जब-तब उपयुक्त मात्रा में वह आकर्षक वक्रता प्रकट होती रहती थी जो अभिव्यक्ति को सार्थक बनाती है।

जेनरल का वक्ष, उन सब वक्षों में निश्चित रूप से सर्वोत्तम था, जिन्हें मैंने देखा है। आप ज़िन्दगी-भर लगे रहकर भी उसके अद्‌भुत समानुपात-सुडौलपन–में कोई दोष नहीं निकाल सकते। इस दुर्लभ विशिष्टता के कारण युगल स्कन्ध ऐसे बन गए थे जो संगमर्मर की अपोलो (मूर्ति) को अपनी लघुता की चेतना की लज्जा से भर देते। मुझे सुन्दर कन्धे देखने की एक झक है और मैं कह सकता हूं कि इससे पहले मैंने उन्हें परिपूर्ण रूप में कभी नहीं देखा। उसकी भुजाएं भी प्रशंसनीय रूप से गठित हुई थीं और चूंकि दाहिनी भुजा स्लिंग या गलपट्टी में बंधी हुई थी, उससे बाईं

का सौन्दर्य और बढ़ गया था। फिर उसके अधोअंग कुछ कम सुन्दर न थे। ऐसे मामलों के प्रत्येक पारखी ने स्वीकार किया था कि पांव बहुत अच्छे हैं। उनमें न तो मांस की बहुत अधिकता थी, न बहुत कमी थी–न उनमें कठिनता थी, न भंगुरता। उसकी जंघास्थि से अधिकं सुन्दर मोड़ की मैं कल्पना ही न कर सकता था, और जो बहिर्जंघास्थि समानुपातिक पिंडलियों की रचना करती है उसके पश्चाद्‌भाग में भी बस उतनी ही उठान थी जो उचित है। मैं तो ईश्वर से यही कामना करता हूं कि मेरा तरूण एवं प्रतिभाशाली मित्र मूर्तिकार चिपनचिपिनों ने ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए. बी.सी. स्मिथ के पांव देखे होते।

किन्तु यद्यपि ऐसे पूर्णतः सुन्दर-सुदर्शन मनुष्य उतने सुलभ नहीं हैं जैसे सुलभ तर्क या कृष्णबदरियां (कालींबेरे) हैं, फिर भी मैं अपने को यह विश्वास न दिला सका कि जिस कुछ के विषय में मैं उल्लेख कर चुका हूं उसका एक मात्र कारण उसकी शरीर-सम्पत्ति की अत्युतकृष्टता है। शायद उसका स्त्रोत, उसका ढंग, उसका बर्ताव हो–किन्तु मैं फिर भी निश्चित रूप से नहीं कह सकता। उसकी चाल में कठोरता नहीं थी; एक प्रकार का तकल्लुफ़ था–उसके प्रत्येक पद-संचार में एक प्रकार की नपी-तुली, और मैं वैसा कह सकूं तो, आयताकार सूक्ष्मता–निश्चितता थी, जो किसी

और नाटे आकार के व्यक्ति में होती तो उसमें कृत्रिमता, प्रदर्शन, आडम्बर या विवशता की दुनिया की गंध आती किन्तु उसके जैसे आयामवाले भद्र जन में देखकर उसे प्रशंसनीय कोटि की गम्भीरता और प्रगल्भता अर्थात् संक्षेप में महत् समानुपात की मर्यादा के खाते में ही रखा जा सकता था।

जिस कृपालु मित्र ने मुझे जनरल स्मिथ के सामने परिचय के लिए उपस्थित किया था, उन्होंने उसी क्षण मेरे कान में उस मनुष्य के विषय में धीरे से कुछ शब्द कहे थे। "वह एक विलक्ष्ण आदमी है–बहुत ही विलक्षण आदमी, बल्कि इस युग का सबसे विलक्ष्ण आदमी कहो। वह औरतों में विशेष रूप से प्रिय है–मुख्यतः अपने साहस की उच्च ख्याति के कारण।"

"उस विषय में तो वह अप्रतिम है–अत्यन्त दुस्साहसिक है–प्रचण्ड द्वन्द्वयोद्धा है, इसमें ज़रा भी गलती न समझना।" मेरे मित्र ने कहा, फिर अपनी आवाज़ बहुत धीमी कर दी–अपने स्वर-रहस्य से मुझे कम्पित करते हुए।

"हां, प्रचण्ड द्वन्द्वयोद्धा। मैं कहता हूं कि इसे उसने दक्षिण के भयानक दलदली युद्ध में, जो बगाबू तथा किकापू, इण्डियनों के साथ लड़ा गया था, अच्छी तरह साबित कर दिया है। (यहां मेरे मित्र ने अपनी तर्जनी उंगली अपनी नाक की ओर रखकर अपनी आंखें कुछ

फैला दीं) हे भगवान! बस खून और बिजली की कड़क! शौर्य में अद्‌भुत। तुमने सुना ही होगा? हां, ज़रूर सुना होगा?...यही है वह आदमी...."

इसी बीच खुद जेनरल ने नज़दीक अया देख, मेरे मित्र का हाथ पकड़ लिया और हमारी बातचीत में हस्तक्षेप करते हुए कहा–"अरे ज़िन्दा आदमी! तुम क्या कर रहे हो? कैसे हो?" जब मित्र ने मुझे परिचय के लिए पेश किया तो उसने किंचित कड़ाई परन्तु गहराई के साथ अभिवादन किया। उस समय मैंने सोचा (और मैं अब भी वैसा ही समझता हूं) कि मैंने उससे स्पष्ट और उससे शक्तिमती वाणी कभी नहीं सुनी, न तो कहीं उससे बढ़िया दंतावली ही देखी। किन्तु इतना मैं ज़रूर कह देना चाहता हूं कि चूंकि मित्र-द्वारा फुसफुसाकर कही गई बातों के कारण मेरी दिलचस्पी बगाबू एवं किकापू युद्धाभियान के वीर नायक में बहुत बढ़ गई थी इसलिए उस वक्त उस बातचीत में बाधा पड़ जाने से मुझे दुःख हुआ था।

किन्तु इसके बाद ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए.बी.सी. स्मिथ की मजेदार बातें सुनकर मेरा वह असन्तोष बहुत कुछ दूर हो गया। इस समय मेरा मित्र कहीं चला गया और हम दोनों काफी देर एकान्तवार्ता करते रहे। मुझे उस बातचीत से न केवल खुशी हुई

बल्कि सचमुच ज्ञान भी प्राप्त हुआ। मैंने इससे पहले ऐसा धाराप्रवाह बोलनेवाला वक्ता, या इससे अधिक सामान्य जानकारी रखनेवाला आदमी, नहीं देखा था। किन्तु उस समय मेरे मन में जो बात सबसे ज़्यादा प्रमुख रूप से उठ रही थी–मेरा मतलब है बगाबू युद्ध की रहस्यमयी परिस्थितियों से–उसके विषय में उसने संकोच के कारण कुछ नहीं कहा, और जहां तक मेरा सम्बन्ध है मेरे मन में बार-बार उस विषय को छेड़ने की उत्सुकता होते हुए भी शिष्टाचारवश मैंने उसे नहीं उठाया। मैंने यह भी देखा कि उस वीर सैनिक को दार्शनिक विषयों पर तथा वैज्ञानिक एवं यांत्रिक अविष्कारों की तीव्र गति के बारे में वार्ता करने में ज़्यादा दिलचस्पी है। मैं चाहे जो बातचीत छेड़ता और चाहे जिस तरफ भी उसे ले जाने की चेष्टा करता, घूम-फिरकर वह इन्हीं विषयों पर आ जाता था।

वह कहता–"इसके समान और कुछ नहीं है। हम एक अद्भुत जाति के लोग हैं और एक अद्भुत युग में भी जी रहे हैं। पैराशूट एवं रेलपथ, मानुषजाल एवं स्प्रिंगदार बंदूकें! हमारी वाष्पचालित नौकाएं प्रत्येक सागर में हैं और लन्दन तथा टिम्बकटू के बीच नसाऊ बैलूनों की नियमति यात्राएं शुरू ही होनेवाली हैं (और एक तरफ का किराया सिर्फ बीस पौण्ड–लगभग तीन सौ रुपये–मात्र होगा) और विद्युतीय चुम्बकत्व (इलेक्ट्रोमैगनोटिक्स) के महत् सिद्धान्तों

के लागू होने पर तुरन्त जो परिणाम निकलेगा और उनका जो महत् प्रभाव सामाजिक जीवन पर, कलाओं पर, व्यापार पर, साहित्य पर पड़ेगा, उसका हिसाब कौन लगा सकता है? फिर मैं आपसे कहता हूं, बात इतने तक ही नहीं है, अविष्कारों की प्रगति की सचमुच कोई सीमा नहीं है। सबसे विलक्ष्ण, सबसे चमत्कारपूर्ण, और मुझे उसमें इतना और जोड़ने दीजिए, मिस्टर-मिस्टर थामसन, मेरा ख्याल है यही आपका नाम है, कि सबसे उपयोगी, निश्चित रूप से सर्वाधिक उपयोगी वे यांत्रिक रचनाएं हैं, जो नित्य कुकरमुत्तों की तरह या मैं और अलंकारिक भाषा में कहूं तो टिड्डों की तरह–हां टिड्डों की तरह हमारे चतुर्दिक् पैदा होती जा रही हैं, मि. थामसन!"

यह तो निश्चित ही है मेरा नाम थामसन नहीं है, किन्तु कहने की आवश्यकता नहीं कि जब मैं जेनरल स्मिथ से विदा हुआ तो उस मनुष्य के विषय में मेरी दिलचस्पी बहुत ज़्यादा बढ़ गई थी और उसकी वार्ता-शक्ति के बारे में मेरे मन में प्रशंसा के भाव थे तथा मैंने यह भी गम्भीरता के साथ समझ लिया था कि यांत्रिक अविष्कार के इस युग में जीते हुए हम कैसी मूल्यवान सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं। किन्तु अभी तक मेरी उत्कण्ठा को सन्तोष नहीं हुआ था, इसलिए मैंने निश्चय कर लिया कि मैं ब्रिगेडियर जेनरल के बारे में अपने परिचतों से पूछकर और पता लगाऊंगा, तथा उन महत्वपूर्ण

घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करूंगा जिनमें बगाबू एवं किकापू युद्धों के बीच उसने महत्वपूर्ण अभिनय किए थे।

इसके लिए जो पहला अवसर मुझे मिला उसका उपयोग करने का मैंने तुरन्त निश्चय कर लिया। बात यह थी कि एक रविवार को मैं रेवेरण्ड डा. ड्रमममप के गिर्जे में पहुंच गया। यह धर्मोपदेश का समय था। मैं विशिष्टजनों के मंच पर बैठा था और मैंने देखा कि मेरे बगल में ही मेरी योग्य और बातूनी दोस्त कुमारी टबीथा टी बैठी हुई थीं। ऐसी अनुकूल स्थिति के लिए मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया। मैं बहुत अच्छी तरह से समझता था कि कोई आदमी ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए. बी. सी. स्मिथ के बारे में कुछ जानता है तो वह निश्चय ही टबीथा है। मैंने पहले कुछ भूमिका बांधी और फिर एकदम निजी बातचीत छेड़ दी।

मेरे प्रश्न के उत्तर में उसने कहा–"स्मिथ! जेनरल जॉन ए. बी. सी. क्यों नहीं कहते! ओह! मैं तो समझती थी कि उसके विषय में तुम सब कुछ जानते हो। यह तो विलक्षण आविष्कारों का युग है। भयानक बात है वह। किकापू लोग तो ख़ूनी राक्षस होते ही हैं। वह वीर की भांति लड़े–शौर्य की विलक्षणताएं–अमर ख्याति! स्मिथ! ब्रेवेट ब्रिगेडियर-जेनरल जॉन ए. बी. सी.।–"तुम तो जानते ही होगे कि वही है वह आदमी...."

इसी क्षण डाक्टर ड्रमममप ने ऐसा पदाघात किया कि मुझे लगा मानो वेदी ही लुढ़ककर मेरे कानों में आ गई है, फिर उन्होंने बड़ी ऊंची आवाज़ में कहना शुरू किया–"मनुष्य–जो मनुष्य नारी के पेट से पैदा हुआ है, उसे जीने के लिए बहुत थोड़ा समय मिला है–वह जन्मता है और फूल की भांति तोड़ लिया जाता है!" मैंने मंच की छोर की ओर देखा और धर्माध्यक्ष की उत्तेजित नज़र देख समझ गया कि जिस रोष के कारण वेदिका टूटते-टूटते बची, वह उक्त महिला और मेरे बीच की फुसफुसाहटों से और तीखा हो गया है। इसका कोई उपाय नहीं था, इसलिए मैं शान्त होकर बैठ गया और मर्यादायुक्त मौन की शहादत के बीच उस महत्वपूर्ण उपदेश का शेषांश सुनता रहा।

दूसरे दिन रात को ज़रा देर से मैं रैण्टीपोल थियेटर पहुंच गया। मुझे पूरा विश्वास था कि वहां सुशीलता एवं सर्वज्ञता के उन नमूनों, अर्थात् कुमारी अराबेला तथा कुमारी मिराण्डा कागनोसेण्टी के बाक्स (स्वतन्त्र दर्शक-कक्ष या कटाघरा) में प्रवेश करते ही मेरी आकांक्षा और उत्सुकता तृप्त हो जाएगी। थियेटर दर्शकों से खचाखच भरा था और वह श्रेष्ठ दुःखान्त अभिनेता, क्लाईमाक्स, अभिनय कर रहा था। मुझे अपनी बात समझाने में कुछ कठिनाई हुई क्योंकि हमारा बाक्स स्लिप (वह स्थान जहां अभिनेता रंगमंच पर आने के

पूर्व खड़ा होता है) के बिल्कुल निकट ओर मंच के सामने ही था।

अन्त में मेरे प्रश्न का आशय समझकर कुमारी अराबेला ने कहा–"स्मिथ? स्मिथ? जेनरल जॉन ए. बी. सी. तो नहीं?"

मिराण्डा ने भी ध्यानावस्थित होकर पूछा–"स्मिथ? ईश्वर मंगल करे। कभी आपने उससे अच्छी सूरत देखी है?"

"कभी नहीं मैडम, किन्तु मुझे बताइए..."

"या ऐसी अनुपम शोभा देखी है?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं।....किन्तु कृपया मुझे बताइए...."

"अथवा मांचिक प्रभाव का ऐसा उदाहरण?"

"मैडम!"

"अथवा शेक्सपियर के यथार्थ सौन्दर्यचित्रों का इससे अधिक सूक्ष्म चित्रण? कृपया उस पांव को तो देखिए।"

"बकवास!" और मैं पुनः उसकी बहिन की ओर पलट गया।

वह बोली–"स्मिथ? क्यों, जेनरल जॉन ए.बी.सी. क्यों नहीं? भयानक घटना थी वह, थी न? वे राक्षस, वे बगाबू लोग। जंगली! किन्तु हम विलक्षण अविष्कारों के युग में रह रहे हैं।....स्मिथ।....हां, हां। महान व्यक्ति। पूरा द्वन्द्वयोद्धा....अमर....ख्याति-शौर्य की विलक्षणताएं आपने नही सुनीं! (ये शब्द उसने चीखते हुए-से कहे)। ईश्वर कल्याण करे....क्यों, वही है वह आदमी....."

इस समय क्लाईमाक्स मेरे कानों में चीख उठा–

"यह मधुर द्राक्षालता या और जग के सर्व मधुरस दे न सकते हैं तुम्हें उस मधुर निद्रा का सरस सुख जो तुम्हें कल मिल चुका है।"

इसके बाद वह अपनी मुष्टिका मेरे सामने इस तरह बराबर हिलाने लगा कि मैं बर्दाश्त न कर सका; मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ। मैं काग्नोसेंटी कुमारियों को छोड़ तुरन्त दृश्यपट के पीछे चला गया। मैं चाहता था कि उस बदमाश अभिनेता की अच्छी तरह खबर लूं।

एक दिन सुन्दरी विधवा श्रीमती कैथलीन ओ ट्रम्प की सांध्यगोष्ठी में मैं इस विश्वास के साथ गया कि कहां इस प्रकार की निराशा का अनुभव नहीं होगा। तदानुसार, ज्योंही ताशक्रीड़ा वाले टेबल के सामने बैठा और मेरी कमनीया आतिथेया मेरी पार्टनर बन गई, त्योंही मैंने वे प्रश्न छेड़ दिए जिनका समाधान मेरी शान्ति के लिए इतना ज़रूरी हो उठा था।

मेरी पार्टनर ने कहा–"स्मिथ? जेनरल जॉन ए.बी.सी. क्यों नहीं?–भयानक राक्षस, वे किकापू लोग। मि. टैटिल, आप ख्याल करें तो हम लिस्ट (ताश का एक खेल) खेल रहे हैं–जो भी हो, यह आविष्कारों का युग है–निश्चित रूप से जिसके विषय में कोई कह सकता है सर्वोत्तम युग। आप फ्रेंच बोलते हैं? आह, बड़ा वीर-पूर्ण द्वन्द्व योद्धा।....नहीं, हार्ट्स (पान), मि. टैटिल...मैं इसमें विश्वास

नहीं करती...अमर ख्याति और वह सब शौर्य की विलक्षणताएं। कभी नही सुना? ओह, ईश्वर रक्षा करे, वही है वह आदमी... ('मैन')..."

कमरे के सुदूर कोने में कोई स्त्री (मैन अर्थात् आदमी को किसी कैप्टेन मैन का नाम समझाकर) बीच में रोककर बोल पड़ी–"मैन? कैप्टेन मैन? क्या तुम लोग कैप्टन मैन और द्वन्द्वयुद्ध की बात कर रहे हो?–ओंह, मैं ज़रूर सुनुंगी। कहो, कहते चलिए, श्रीमती ओ ट्रम्प।....हां आगे चलिए, सुनाइए।" और श्री ओ ट्रम्प सचमुच आगे चलने, कहने लगी–"किसी कैप्टेन मैन के बारे में, जो या तो गोली मार दिया गया था या फिर फांसी पर लटका दिया गया था, या फिर उसे गोली भी मारी गई होगी और फांसी पर भी लटकाया गया होगा।"हां! श्रीमती ट्रम्प।" और वह आगे कहती गई, और मैं बस भाग खड़ा हुआ। उस रात ब्रवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए. बी.सी. स्मिथ के बारे में और कुछ जान सकने की कोई सम्भावना नहीं रह गई थीं।

इतने पर भी मैंने इस विचार के साथ अपने को शान्त कर लिया कि दुर्भाग्य का ज्वार मेरे विरूद्ध सदा ही नहीं रहेगा। इसलिए मनोरमा देवी सुशीला श्रीमती पिराउती के 'राउट' (संध्याकीलन प्रतिभोज) में जाकर जानकारी प्राप्त करने का मैंने पूर्ण निश्चय कर लिया।

जब हम दोनों पार्टी के बीच चक्कर लगा रहे थे तो श्रीमती पी. मेरे प्रश्न के उत्तर में बोलीं–"स्मिथ?–स्मिथ? जेनरल जॉन ए. बी.सी. क्यों नहीं? बगाबुओं का वह भयानक काण्ड। था न? भयानक प्राणी, वे इण्डियन! अपने पदांगुष्ठों को मोड़ लो, मैं शर्मिन्दा हूं–बड़े साहस का आदमी, बेचारा! किन्तु यह अविष्कार का विलक्षण युग है। अरे प्यारे दोस्त, मेरी सांस रुक रही है...निपट दुस्साहसी...शौर्य की विलक्षणताएं...कभी नहीं सुनीं? मैं इसे विश्वास ही नहीं कर सकती...मुझे बैठना पड़ेगा और तब तुमसे कहूंगी–स्मिथ! क्यों वही है वह आदमी..."

ज्योंही मैं श्रीमती पिराउती को एक आसन पर बैठाने को लिए जा रहा था कि कुमारी बास-ब्लू चीख़ उठीं–"मैन-फ्रेड, मैं कहती हूं। क्या किसीने उसकी-सी कथा कहीं सुनी है। वह मैन-फ्रेड ही है। मैं कहती हूं–मैन फ्राइडे नहीं।" और मिस बास-ब्लू ने बड़े शासकीय ढंग पर मुझे संकेत किया, और मुझे श्रीमती पी. को छोड़कर लार्ड बायरन के किसी पद्य-नाटक के शीर्षक झगड़े का फ़ैसला करने के उद्देश्य से जाना पड़ा। यद्यपि मैंने अतिशीघ्रता के साथ घोषित किया कि संध्या शीर्षक मैन फ्रेड नहीं मैन-फ्राईडे है किन्तु जब मैं लौटकर पिराउती को खोजने लगा तो वह मुझे नहीं मिली। और मैं वहां से बास-ब्लुओं की सारी जाति के विरुद्ध तीव्र शत्रुता की भावना लेकर चला आया।

अब मामला सचमुच गम्भीर हो चला, इसलिए मैंने अपने एक विशेष मित्र श्री थियोडोर सिनवेट से तुरन्त मिलने का निर्णय किया, क्योंकि मैं जानता था कि कम से कम यहां तो मुझे निश्चित जानकारी-जैसी कोई न कोई चीज़ मिल ही जाएगी।

उन्होंने शब्दों को खीचते हुए, अपने ख़ास लहजे में कहा–"स्मिथ? स्मिथ? जेनरल जॉन ए. बी. सी. तो नहीं? किका-पु....पु...पू लोगों के साथ भीषण मामला था, था न? बोली। क्या तुम ऐसा नहीं समझते?–निपट दु स्....सा-ह....सी। बड़ी करुणा की बात है। विलक्षण आविष्कारक युग है। शौर्य की कि....लक्....क्षणता.....एं। और हां, यह तो बताओ तुमने कभी कैप्टेन मैन के बारे में सुना है?"

"भाड़ में जाएं कैप्टेन मैन।" मैंने कहा–कृप्या तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

"ओह! अच्छा! अच्छा! ! स्मिथ? ब्रिगैडियर-जनरल जॉन ए. बी. सी.? मैं कहता हूं–(इस समय श्री एस. ने अपनी नाक की ओर उंगली रखना उचित समझा)। मैं कहता हूं, तुम इस समय यह कहना तो नहीं चाहते कि सचमुच, ईमानदारी के साथ, दरअसल, तुम स्मिथ के उस मामले को उस तरह नहीं जानते जैसा मैं जानता हूं? स्मिथ? जॉन ए. बी. सी.? क्यों, मुझे माफ़ करो, वही है वह आ....दा.... द......मी......"

मैंने विनयपूर्वक पूछा–"श्री सिनीवेट! क्या वह छद्मवेशी है?"

"न....नहीं। पर न तो वह चांद में रहनेवाला आदमी है!"

मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि ऐसा जवाब देकर जान-बूझकर मेरा अपमान किया गया है। मैंने घोर असन्तोष के साथ तुरन्त वह स्थान छोड़ दिया, और पक्का निश्चय कर लिया कि इस असज्जनोचित आचरण तथा दुःशील के लिए शीघ्र ही मैं श्री सिनीवेट से समझ लूंगा।

किन्तु जो जानकारी मैं चाहता था उसके लिए इस तरह की बाधाओं के बाद भी मैं निराश नहीं हुआ। अभी इसके लिए एक स्त्रोत बाकी था। मैं सीधे फुहारे के पास ही जाऊंगा; मैं खुद जेनरल से भेंट करूंगा और उनसे इस जघन्य रहस्य-खण्ड का साफ़ शब्दों में समाधान करने के लिए कहूंगा। कम से कम वहां तो वाक्छल के लिए कोई अवसर नहीं रहेगा। मैं स्पष्ट, निश्चयात्मक और निर्णायक रूप ग्रहण करूंगा। मैं गुझिया की भांति छोटा और टैसीटस या माण्टेस्क्यू[1] की भांति संक्षिप्त रहूंगा।

मैं बड़े तड़के ही वहां जा पहुंचा। मालूम हुआ कि जेनरल अभी परिधान-सज्जा में लगे हुए हैं। मैंने कहलाया कि मैं अविलम्बनीय कार्य से आया हूं। एक बूढ़े हब्शी ख़िदमतगार ने, जो उस समय

1. माण्टेक्यू–प्रसिद्ध विचारक और लेखक

मौजूद था, तुरन्त मुझे शयनागार में पहुंचा दिया। कमरे में पहुंचते ही मैंने गृहस्वामी के लिए इधर-उधर नज़र दौड़ाई किन्तु मुझे उस समय उसका दर्शन नहीं हुआ। मेरे रास्ते में पांव के पास बहुत भद्दा दिखनेवाला कोई एक गट्ठर पड़ा था, चूंकि उस समय मैं बहुत प्रसन्न मुद्रा में नहीं था, मैंने उसे ठोकर मारकर एक तरफ हटा देने की कोशिश की।

"ओह! ओह! कैसा शिष्टाचार है!" गट्ठर से बहुत धीरे से, दुर्बलतम और अत्यन्त विचित्र स्वर में, कीक और सिसकारी के बीच, एक आवाज़ निकली–ऐसी आवाज़ जो मैंने जीवन में और कभी नहीं सुनी।

मैंने आतंकित होकर, करीब-करीब चिल्लाकर, कहा–"हां, मैं देखता हूं कि यह शिष्टाचार तो है ही।" और तेज़ी से कमरे के दूसरी छोर पर जा पहुंचा।

गट्ठर से फिर सिसकारी-सी फूटी–"मेरे प्यारे दोस्त! ईश्वर मुझपर कृपालु हों। क्या.....क्या.....क्या......क्यों......क्या मामला है? मुझे सचमुच विश्वास है कि आप मुझे बिल्कुल नहीं जानते।"

जहां तक मेरे लिए सम्भव था, दीवार के पास जाकर और प्रतिवाद की मुद्रा में दोनों हाथ उठाए हुए मैंने कहा–"नहीं.....नहीं......नहीं। तुमको नहीं जानता–तुमको जानता–तुमको जानता–तुमको

बिल्कुल नहीं जानता।" और गट्ठर पर आंखें गड़ाए हुए मैंने उस हब्शी ख़िदमतगार की ओर एक बार असन्तोषपूर्ण तिरछी नज़र फेरते हुए पूछा–"तुम्हारे मालिक कहां हैं?"

"हा! हा! हा! ही! ही! ही!" मानव-परिवार के उस मजेदार नमूने ने ठहाका मारकर कहा। उस समय उसका मुंह कानों तक फैल गया था और उसकी तर्जनी उंगली मुंह के पास तक उठाकर उस गट्ठर की ओर इस प्रकार इशारा कर रही थी जैसे पिस्तौल से उसका निशाना साध रही हो।

"हा! हा! हा! ही! ही! ही!" क्या? आप मास (मास्टर, मालिक) स्मिफ (स्मिथ) को चाहते हैं? क्यों, वही तो है।"

इसपर मैं क्या कह सकता था–क्या कह सकता था? लड़खड़ाकर मैं एक आरामकुर्सी पर बैठ गया, और फैली हुई आंखों तथा खुले मुंह से उस महदाश्चर्य के समाधान की प्रतीक्षा करने लगा।

उसी गट्ठर से फिर आवाज़ आई–"विचित्र बात है कि आप मुझे नहीं जानते, है न ऐसा ही?" मैंने देखा कि वह गट्ठर फर्श पर पड़ा अव्याख्येय रूप में, कुछ विकसित होता जा रहा है। किन्तु अब भी सिर्फ़ एक पांव दिखाई पड़ रहा था।

"आश्चर्य है कि तुम मुझे नहीं जानते। यही बात है न? पाम्पी, वह पांव मुझे दो।" बस, पाम्पी ने गट्ठर को एक बहुत सुन्दर कार्क

का बना पांव, जो अच्छी तरह वस्त्राच्छादित था, दे दिया। गट्टर ने उसे क्षण-भर में पेंच से कस लिया और तब मेरी आंखों के सामने सीधा खड़ा हो गया।

जैसे स्वागत कहते हुए वह बोला–"बड़ी खूंखार लड़ाई थी वह। किन्तु किसीको बगाबुओं और किकापुओं से लड़ना ही नहीं चाहिए, क्योंकि उनसे लड़ते हुए यह सोचना कि सिर्फ नोच-खरोंच के साथ लौट आवेंगे, मूर्खता है। पाम्पी, यदि तुम वह बांह उठा दो तो मैं तुम्हारा धन्यवाद करूंगा। (फिर मेरी ओर मुड़कर) कार्क के नकली पांव के लिए टामस निश्चय ही सर्वोत्तम कारीगर है, वह 79 नम्बर रेस स्ट्रीट में रहता है। मैं तुम्हं उसके पते का कार्ड ही दे दूंगा, किन्तु मेरे दोस्त, यदि तुम्हें कभी बांह की ज़रूरत पड़े तो उसके लिए मैं बिशप के नाम की सिफारिश करूंगा।" अब पाम्पी ने बांह उठाकर कस दी।

"तुम कह सकते हो कि उस लड़ाई में हमें बड़ी मुसीबत उठानी पड़ी। ओ सुअर! मेरे कंधे और सीना भी लगा दे न। पेटिट सर्वोत्तम कंधे बनाता है किन्तु सीने के लिए तुम्हें डकरो के पास जाना पड़ेगा।"

"सीना!" मैंने कहा।

"पाम्पी, क्या तुम अभी तक उस गलमुच्छे को तैयार नहीं कर

पाए? खोपड़ी का ऊपरी आचरण बनाना मुश्किल काम है, किन्तु तुम दाल ओर्मे के यहां सिर का ऐसा सुन्दर केशावरण प्राप्त कर सकते हो।"

"सिर का केशावरण?"

"अरे ओ हब्शी के बच्चे! मेरी दंतावली? अच्छी दंतावली के लिए तुम्हें तुरन्त पार्मलीज़ के यहां जाना चाहिए; दाम तो ज़्यादा लेता है परन्तु काम अच्छा करता है। बगाबू नायक ने अपनी राइफल के कुंदे से मेरा भुर्ता बना दिया तो मुझे कितनी ही चीज़ें निगलनी पड़ीं (दांत टूटकर पेट में चले गए)।

"राइफल का कुंदा! गिराकर भुर्ता कर दिया–अरे मेरी आंखें! हां, हां मेरी आंखें–पाम्पी, सुअर के बच्चे, इन्हें लगा दे न । ये किकापू आंख निकाल लेने में सुस्ती नहीं करते। किन्तु वह चतुर शिल्पी है, वह डाक्टर विलियम्स। तुम कल्पना नहीं कर सकते कि उसकी बनाई हुई आंखों से मैं कितनी अच्छी तरह देखता हूं।"

अब मेरी समझ में यह साफ-साफ आने लगी कि मेरे सामने जो व्यक्ति है वह मेरा नव-परिचित ब्रेवेट बिगेडियर जेनरल जॉन ए. बी. सी. स्मिथ के सिवा और कोई नहीं है। पाम्पी द्वारा विविध अंगों के लगा देने के बाद उस आदमी के रूप-रंग में विचित्र परिवर्तन दिखाई पड़ा। हां, आवाज़ अब भी मुझे परेशानी में डाले

हुए थी, किन्तु वह रहस्य भी शीघ्र ही खुल गया।

जेनरल ने चीखकर कहा–"पाम्पी, ओ सुअर! मैं समझता हूं कि जीभ के बिना ही मुझे बाहर जाना पड़ेगा।"

अब हब्शी माफ़ी मांगते हुए, अपने मालिक के पास गया और उनका मुंह खोलकर विचित्र-सी दीख पड़नेवाली कोई मशीन ऐसी चतुराई के साथ फिट कर दी कि मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सका। परन्तु वैसा करते ही, पलक मारते, जेनरल का सारा चेहरा-मोहरा बदल गया। अब जब वह बोला तो उसकी आवाज़ में वहीं सुरीलापन और शक्ति आ गई थी जो मैंने पहिली बार परिचय के समय देखी सुनी थी।

"बदमाशों का नाश हो।" उसने ऐसी स्पष्ट वाणी में कहा कि मैं चकित हो उठा–"बदमाशों का नाश हो। उन्होंने न केवल मेरे मुंह और तालू पर आघात किया बल्कि कम से कम सात बटे आठ भाग मेरी जीभ भी काट ली। जीभ आदि बनाने में, सम्पूर्ण अमेरिका में बोनफाण्टी के बराबर दूसरा आदमी नहीं है। मैं विश्वासपूवर्क तुमसे उसकी सिफ़ारिश कर सकता हूं (यहां जेनरल अभिवादन की मुद्रा में झुका) और ऐसा करने में मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है।"

मैंने यथासम्भव सर्वोत्तम रूप में उसकी इस कृपा को स्वीकार किया और अपने मित्र से तुरन्त विदा लेकर आ गया। इस समय

मैं सारे मामले को अच्छी तरंह समझ चुका था और उस रहस्य का भी मुझे पूरा ज्ञान हो चुका था, जिसने इतने लम्बे अर्से तक मुझे परेशान रखा था। अब सब कुछ प्रत्यक्ष। मामला बिल्कुल साफ़ था। ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए.बी.सी. स्मिथ ही वह आदमी था,–

वह आदमी जो चुक गया था!

ड्यूक आमलेट

(डक दी ल आमलेत)

सद्यः किया प्रवेश (मित्र ने) शीतलतर जगती में।

–काउपर

आलोचना ने ही कीट्स का विनाश-साधन किया। और वह कौन था जिसकी मृत्यु एन्ड्रीमाशे[1] के कारण हुई? पतित प्राणी! दी ल आमलेत एक अबाबील से नष्ट हो गया। इसकी कहानी बहुत संक्षित है–एपीसियश की आत्मा! मेरी मदद कर।

सुनहले पिंजड़े की यह छोटे पंखोंवाली, सैलानी, मोहक, द्रवणशील और तन्द्रिल चिड़िया अपने दूर देश पेरू से 'शोशे द आं' "पेरिस

1. मांटफ्लुरी। 'पारनेंसी रिफार्म' के लेखक ने उसे अपने-आप यों व्यक्त करते दिखाया है–"जो भी मेरी मृत्यु का कारण जानना चाहे उसे यह नहीं पूछना चाहिए कि मैं बुखार, जलोदर या गठिया किस रोग से मरा; उसे जानना चाहिए कि मेरी मृत्यु एन्ड्रोमाशे से हुई।"

का एक भाग) लाई गई थी। प्रथम शाही मालकिन ला बेलिसीमा से साम्राज्य के छः सामन्तों ने इस आनन्दी चिड़िया को ड्यूक आमलेट तक पहुंचाने का काम किया था। और यह सब श्रम 'केवल प्रेम-वश' किया गया था।

उस रात ड्यूक अकेले ही भोजन करनेवाला था। अपने निवास के एकान्त में वह एक नायब सोफे पर लेटा हुआ था। इस सोफे को प्राप्त करने के लिए उसे अपने बादशाह, केडेट के मशहूर सुलतान, के प्रति स्वामिभक्ति का बलिदान करना पड़ा था और उससे भी बढ़कर बोली बोलनी पड़ी थी।

वह अपना चेहरा तकिये में छिपा लेते हैं–घड़ी घंटा बजाती है। अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ हो वह एक ज़ैतून निगल जाते हैं। इसी समय मधुर संगीत के साथ द्वार धीरे-धीरे खुलता है, और ओह! वह सबसे नाज़ुक चिड़िया सबसे अनुरक्त मनुष्य के सामने है! पर ड्यूक के चेहरे पर कैसी अकथनीय निराशा छा गई है?–"भयानक! कुत्ता! बपतिस्माकारी! चिड़िया! हे ईश्वर! दीन पंखी! जिसके पंख तुमने नोच डाले है!" अधिक कहना बाहुल्य मात्र है, निराशा के भयानक दौरे में ड्यूक के प्राण-पखेरू उड़ गए।

"हा! हा! हा! श्रीमन्त ने अपनी मृत्यु के तीसरे दिन गुहार गाई।

"ही! ही! ही!" शैतान ने दर्पपूर्वक ऊपर उठते हुए धीरे से उत्तर दिया।

ड्यूक आमलेट ने तुर्की-बतुर्की जवाब दिया–"क्यों, आप यह गंभीर भाव से तो नहीं कह रहे हैं? मैंने पाप जरूर किया है किन्तु श्रीमान् एक क्षण विचार तो कर लें।–मुझे विश्वास है कि ऐसी बर्बर धमकियों को कार्यरूप में परिणत करने का इरादा आपका न होगा।"

"नहीं, क्यों नहीं?" श्रीमन्त सम्राट ने कहा–"चलो , नंगे हो जाओ।"

"नंगा हो जाऊं? वाह वा! बहुत खूब! क्या सुन्दर विचार है! नहीं, महाशय, मैं नंगा नहीं होऊंगा। आप होते कौन हैं? भला, मैं आमलेट का ड्यूक, फ्वाए ग्रास का राजकुमार, जो अभी-अभी वयस्क हुआ है, 'मजूरकियाद' का लेखक, एकादगी का सदस्य, आपके कहने-भर से बूर्दों द्वारा आज तक बनाया सबसे सुन्दर पतलून तथा रोम्बर द्वारा बनाए सबसे अच्छे ड्रेसिंग गाउन को उतारकर रख दूं? फिर कागज़ से अपने बाल बाहर निकालने तथा दस्ताने उतारने में जो तकलीफ मुझे होगी, उसकी तो बात ही क्या की जाए?"

"मैं कौन हूं? आह ठीक! मैं बाल-ज़ेबब हूं, फ्लाई का राजा। मैंने अभी-अभी तुम्हें हाथीदांत जड़े सन्दली ताबूत से बाहर निकाला है। तुम्हें विचित्र तरह से इत्र-फुलेल लगाया गया था और चालान के अनुसार ही लेबिल तुमपर लगा था। मेरे शमशानों (कब्रगाहों) के इंस्पेक्टर बेलियल ने तुम्हें भेजा है। बुर्दों के बनाए जिस पतलून की तुम इतनी तारीफ कर रहे हो वह एक अच्छा-सा सूती जांघिया-भर है और जिस गाउन की तुमने इतनी शेखी बघारी है वह तुम्हारा लम्बा-चौड़ा कफ़न मात्र है।"

ड्यूक ने जवाब दिया–"श्रीमन्त, इस तरह मेरा अपमान करके आप बच नहीं सकते। जल्द ही मैं आपसे इस अपमान का बदला लेने का प्रबन्ध करूंगा। महोदय, मैं शीघ्र ही आपको सूचित करूंगा। तब तक के लिए अलविदा।" और ड्यूक ने शीघ्र ही शैतान की उपस्थिति से दूर चले जाने का यत्न किया किन्तु एक प्रहरी फिर उन्हें पकड़ लाया। इसपर ड्यूक आंखें मल-मलकर घूरने लगे, फिर जमुहाई ली और अपने कन्धों को उचकाया। फिर कुछ सोचा। अपनी अभिज्ञा के विषय में सन्तुष्ट हो जाने के बाद उन्होंने अपनी चारों ओर की परिस्थिती का विहगावलोकन किया।

कक्ष तो बड़ा शानदार था। यहां तक कि ड्यूक आमलेट ने भी कहा कि स्थान जैसा होना चाहिए वैसा ही है। वह न बहुत लम्बा था, न ज़्यादा चौड़ा था, किन्तु उसकी ऊंचाई? ओह! वह भयावह थी। उसमें कोई छत न थी, बिल्कुल नहीं, बल्कि उसकी जगह घने

अग्निवर्णी बादलों के चक्कर खाते हुए पुंज थे। ऊपर की ओर देखते हुए श्रीमन्त का सिर चक्कर खाने लगा। ऊपर से किसी अज्ञात आरक्तिम धातु की एक जंज़ीर लटक रही थी, जिसका ऊपरी सिरा बादलों में जाकर खो गया था। उसके निचले हिस्से में एक बड़ा आकाशदीप लटक रहा था। ड्यूक को लगा कि कोई लालमणि है किन्तु उससे निकलनेवाली ज्योति इतनी घनी, इतनी शान्त और इतनी भयंकर थी कि फारस ने भी कभी वैसी ज्योति की पूजा न की होगी, घेबर ने कभी उसकी कल्पना न की होगी, और अफीम के नशे में, फूलों की सेज पर पड़े हुए, अपोलो देवता के सामने मुंह किए किसी मुसलमान ने भी उसका सपना न देखा होगा। ड्यूक उसकी प्रशंसा में कुछ बुदबुदाकर रह गया।

कमरे के कोने गवाक्ष–आले–के रूप में मोड़ दिए गए थे। इनमें से तीन पर मदहाकार मूर्तिया रखी थीं। उनका सौंदर्य यूनानी, उनकी विरूपता मिस्री तथा उनका समष्टिगत प्रभाव फ्रांसीसी, था। चौथे आले पर जो मूर्ति थी उस पर पर्दा पड़ा हुआ था और वह बहुत बड़ी भी नहीं थी किन्तु उसका गावदुम टखना और पादुकायुक्त चरण दिखाई पड़ रहे थे। ड्यूक आमलेट ने (घबराकर) एक हाथ अपने हृदय पर रखा, अपनी आंखें बन्द कर लीं और फिर जो उन्हें ऊपर उठाया तो देखा कि श्रीमान् शैतान मुस्करा रहे हैं।

किन्तु चित्र! क्यूप्रिम! एस्तार्ते! एस्तोरेथ! हज़ारों के चित्र! (चित्रकार) राफेल ने भी इन्हें देखा होगा। ज़रूर, राफेल यहां आ चुका है, क्योंकि उसने भी... का चित्र नहीं बनाया था जिसके कारण उसकी निन्दा हुई थी? चित्र! ये चित्र! क्या वैभव है! हाय रे! इन निषिद्ध सुन्दरियों की ओर देखते हुए उनके सुनहले चौखटों की कलात्मकता पर कौन ध्यान देगा जो स्फीत दीवारों पर सो रहे हैं?

किन्तु ड्यूक का हृदय अपने अन्दर बैठा जा रहा है, बेहोश-सा हुआ जा रहा है। परन्तु जैसा तुम समझ रहे हो, यहां के वैभव से उसका सिर नहीं चकरा रहा है, न उन अनेक गंधपात्रों के मादक श्वास के ही कारण उस पर बेहोशी छा रही है। यह ठीक है कि इन सभी चीज़ों के विषय में उसने बहुत-कुछ विचार किया था किन्तु इस समय तो वह भयाक्रान्त हो गया है क्योंकि एकमात्र पर्दारहित (खुली) खिड़की से जो वीभत्स दृश्य उसे दिखाई पड़ रहा है वह रौरव की अग्नि से भी भयानक है।

बेचारा ड्यूक! यह कल्पना वह कैसे न करता कि उस हाल में जो वैभवपूर्ण, इन्द्रियासक्त तथा अमरण संगीत ध्वनियों फैली हुई हैं वे खिड़की के ऐन्द्रजालिक चौखटों की कीमियागरी से ही छनकर आ रही हैं और वे बेआस और अभिशप्त लोगों के चीत्कार और आर्त्तनाद के सिवा और कुछ नहीं है। और वहां भी, वहां उस सोफे

पर भी वह कौन हो सकता है? वह लघु स्वामी तो नहीं? नहीं, देवता है वह, जो इस तरह बैठा है मानो मर्मर पत्थर को काटकर बनाया गया हो और जिसके विवर्ण मुख पर तीखी मुसकान की रेखा फैली हुई है।

किन्तु इस समय कुछ करंना ज़रूरी है–मतलब यह कहने का है कि कोई फ्रांसीसी एकदम से मूर्च्छित नहीं होता। फिर श्रीमन्त को कोई बखेड़ा खड़ा कर देने से घृणा है। ड्यूक आमलेट फिर अपने होश-हवास में आ जाते हैं। एक टेबल पर कुछ तलवारें रखी हुई थीं, कुछ बर्छे भी थे। ड्यूक ने–से काफी दिनों तक द्वन्द्वयुद्ध का प्रशिक्षण प्राप्त किया था और अब तक उसमें छः आदमियों का सफाया भी कर चुके थे। इसलिए उन्हें अपनी सुरक्षा की कुछ उम्मीद होती है। वे दो बर्छों को उठाकर परखते हैं, और अनुकरणीय शालीनता के साथ, एक चुन लेने के लिए शैतान-राज के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। भयावह! श्रीमन् सम्राट तलवारबाज़ी नहीं करते!

किन्तु ताश का खेल! क्या सुन्दर विचार है? श्रीमन्त ड्यूक की स्मृति सदा ही अच्छी रही है। वह 'एबे गोल्तिये' की पुस्तक 'दायबेल' (शैतान) का मनन कर चुके हैं। उसमें कहा गया है–"शैतान कभी ताश के एकार्ते नामक खेल से इन्कार नहीं कर सकता।"

किन्तु (शैतान के लिए) 'चांस क्या होगा? सच है–वह निराशोन्मत्त

है किन्तु वैसा निराशोन्मत्त नहीं जितना ड्यूक है। फिर वह प्रच्छन्न भी तो है। फिर क्या उसने भी फादर लेब्रा को नहीं पढ़ा है और क्या वह वेतां क्लब का सदस्य नहीं है? उसने कहा–"यदि मैं हारा तो यह मेरी दोहरी हार होगी। (अपने कंधे हिलाकर) और मैं जीता तो इस सबसे मुक्ति पा जाऊंगा। अच्छा, पत्ते फेंटो।"

श्रीमन्त (ड्यूक) सावधानी के साथ, सोच-समझकर खेलने लगे। और श्रीमन् सम्राट को तो अपने विषय में पूर्ण विश्वास था ही। कोई दर्शक देखता तो यही समझता कि फ्रांसिस और चार्ल्स खेल रहे हैं। श्रीमन्त ड्यूक केवल अपने खेल के विषय में सोच रहे थे। श्रीमन्त सम्राट कुछ भी नहीं सोच रहे थे, वह पत्तें फेंट रहे थे। ड्यूक ने काटा।

पत्ते बंट गए। ट्रम्प खोला गया–वह, वह बादशाह निकला। नहीं-नहीं–वह रानी थी। श्रीमन् सम्राट ने उसके मर्दाने परिधान पर कटाक्ष किया। ड्यूक ने अपना हाथ हृदय के ऊपर रखा।

वे खेल रहे हैं। ड्यूक गिनते हैं। एक हाथ पूरा हो गया। श्रीमन्त सम्राट बुरी तरह हार रहे हैं। वह मुस्कराते हैं और मद्यपान कर रहे हैं। इसी बीच ड्यूक एक पत्ता खिसका देते हैं।

शैतान-राज ने काटते हुए कहा–"इस बार तुम्हारी पीसने की बारी है।" श्रीमन्त ड्यूक ने सिर झुकाकर स्वीकार किया, पत्ते बांटे और धीरे से उठाकर छिपाए हुए बादशाह को मेज़ पर रख दिया।

श्रीमान् सम्राट (शैतान) खीझे-से दिखाई पड़े।

यदि सिकन्दर सिकन्दर न होता तो वह दायोजीनिस होता। और ड्यूक ने विदा लेते हुए श्रीमान सम्राट को विश्वास दिलाया कि यदि वह आमलेट का ड्यूक न होता तो उसे शैतान होने से कोई ऐतराज़ न होता।

बोन-बोन

जो भी आदमी—के राज्यकाल में रोयेन की गली 'ले फेब्रे' के उस छोटे-से कैफे (काफी हाउस, स्वल्पाहारगृह) गया होगा, वह इस बात से इन्कार नहीं करेगा कि पियरे बोन-बोन असाधारण गुणों वाला रेस्तरां-मालिक था। इससे तो कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि पियरे बोर-बोन अपने समय के ज्ञान-विज्ञान में भी समान रूप से दक्ष था। इसमें सन्देह नहीं कि अपने समय के अनुसार उसकी मिठाइयां अत्युत्तम थीं किन्तु वह कौन-सी कलम है जो उसके प्रकृति-सम्बन्धी निबन्धों, उसके आत्मा-सम्बन्धी विचारों, उसके प्रेतात्मा-सम्बन्धी पर्यवेक्षणों के साथ न्याय कर सकती है? यदि उसके आमलेट,[1] यदि उसके फ्रिकागंदो[1] अद्वितीय थे, तो उस ज़माने का कौन साहित्यकार ऐसा था जो बोन-बोन के विचारों को सुनने-जानने

1. आभिषाहार के विविध पदार्थ

के लिए उससे दूना समय देने को तैयार नहीं था जितना वह शेष सब विद्वानों के सम्पूर्ण विचारों के कूड़े के लिए देता था? बोन-बोन ने ऐसे पुस्तकालयों को उलट-पुलट डाला था जिसे दूसरे किसी ने कभी पलटा न होगा; उसने इतना पढ़ा था जितना पढ़ने की कल्पना भी नहीं कर सकता; उसने इतना समझा और ग्रहण किया था जिसे समझने की सम्भावना भी किसी के दिमाग में नहीं आ सकती। यद्यपि उसके ज़माने में रोयेन में कुछ ऐसे भी लेखक थे जो कहते थे कि उसकी उक्तियों में न तो अकादमी की विशुद्धता है, न लाइसियम (साहित्यिकी : एक साहित्यिक संस्था) की गहराई है; यद्यपि उसके सिद्धान्त सर्वसाधरण की समझ के बाहर थे, किन्तु इन बातों से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि वे समझ में आने लायक नहीं थे। मैं समझता हूं कि वे इतने स्वयंसिद्ध थे कि बहुत-से लोग उन्हें दुर्ज्ञेय मान बैठते थे। यह बोन-बोन ही था जिसके प्रति काण्ट अपने अध्यात्मज्ञान के लिए ऋणी था। किन्तु वह न तो अफ़लातूनवादी था, न, सच कहें तो, अरस्तूवादी ही था, फिर वह अपना मूल्यवान समय फ्रिकैशे[1] या फैसीली[1] ग्रेदू के आविष्कार में लगाने की जगह आधुनिक लीबनिज़ की भांति किसी संवेदना के विश्लेषण या नैतिक विवादों के बीच तेल-पानी को एक करने में नष्ट करने के लिए तैयार नहीं

1. आभिषाहार के विविध पदार्थ

था। बिल्कुल नहीं। बोन-बोन यूनानी भी था और इतालवी भी। वह पूर्वसिद्ध विधि से तर्क करता था। वह अनुमानात्मक तर्क भी करता था। उसके विचार सहज-निसर्गाजात थे। वह त्रोबिज़ोन के ज्यार्ज में विश्वास रखता था; वह बोज़ेरियों में विश्वास रखता था। असल में वह बस बोनबोनिस्ट (अपना ही अनुयायी) था।

मैंने तत्त्वज्ञानी का उल्लेख रेस्त्रां-स्वामी के रूप में भी किया। पर मैं नहीं चाहता कि मेरा कोई मित्र यह ख्याल करे कि अपने खान्दानी पेशे को बोन-बोन इसलिए करता था कि लोग उस पेशे की मर्यादा और महत्त्व को समझें। ऐसी बात बिल्कुल नहीं थी। यह कहना कठिन था कि वह दोनों कार्यों में से किसमें अधिक गौरव का अनुभव करता है। उसकी राय थी कि मानसिक शक्तियों का पेट की सक्षमता से घनिष्ठ सम्बन्ध है। मेरा मतलब यह हर्गिज़ नहीं है कि तत्त्वज्ञानी के विरुद्ध में पेटूपन का यह कोई दूसरा आरोप लगा रहा हूं। यदि पियरे बोन-बोन में अपनी दुर्बलताएं थीं–और कौन ऐसा महापुरुष है जिसमें हज़ार-हज़ार दुर्बलताएं थीं?–तो वे कुछ विशेष महत्त्व की न थीं, बल्कि वे ऐसी थीं जो दूसरे लोगों में गुण मानकर वर्णित की गई हैं। इस कथा में उसके उल्लेख की ज़रूरत न थी परन्तु जिस प्रबलता के साथ वह उसके सामान्य स्वभाव से सहसा निकलकर सामने आ जाती थी उसके कारण यह

बात लिख रहा हूं कि वह लाभ उठाने का कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता था।

इसका मतलब यह नहीं कि वह लोभी था,–ऐसा कुछ नहीं। तत्त्वज्ञानी के संतोष के लिए यह आवश्यक नहीं था कि सौदा उसी के हित में हो। यदि सौदा हो सके तो किसी भी तरह का व्यापार हो, कोई भी शर्त हो, कोई भी परिस्थिति हो, उसे कर लेता था और उसके बाद कई-कई दिनों तक उसके चेहरे को विजय की मुस्मकान दीप्त करती रहती थी और आंखें चमकाकर वह अपनी बुद्धिमानी का प्रमाण उपस्थित करता रहता था।

किसी भी युग में ऐसे अनोखे विनोद पर लोगों का ध्यान जाना और उनके लिए उसकी चर्चा करना स्वाभाविक था। तब फिर हमारी कथा का सम्बन्ध जिस युग से है उसमें यह अनोखापन लोगों का ध्यान न आकर्षित करता तो एक आश्चर्य की ही बात होती। किन्तु शीघ्र ही इस बात की भी रिपोर्ट सामने आ गई कि ऐसे मौकों पर बोन-बोन की मुस्कान उसकी उस सरल खीज से भिन्न होती है जिसके साथ वह अपने ही मज़ाक़ पर हंसता या अपने परिचितों का स्वागत करता है। अनेक उत्तेजक बातें बताई जाती थीं। ऐसी कहानियां कही जाती थीं कि किस तरह जल्दबाज़ी में उसने फलां-फलां सौदे किए जिसके लिए फ़ुर्सत में उसे पश्चात्ताप करना पड़ा। उसकी

अकथ क्षमताओं, अस्पष्ट कामनाओं, तथा अपने मतलब के लिए अप्राकृत्तिक प्रवृत्तियों के ग्रहण करने के उदाहरण पेश किए जाते थे।

तत्त्वज्ञानी में दूसरी भी दुर्बलताएं थीं, किन्तु वे हमारे गम्भीर विचार के योग्य नहीं है। उदाहरणार्थ, असाधारण गहराईवाले ऐसे मनुष्य कम ही मिलते हैं जिनका झुकाव बोतल की ओर न हो–हां, इस प्रवृत्ति का कारण उत्तेजना है या उस गहराई का ही प्रमाण है, यह कहना असम्भव है। जहां तक मैं जानता हूं, बोन-बोन इसे बहुत सूक्ष्म अनुसंधान के योग्य नहीं मानता था, और मैं भी नहीं मानता। किन्तु यह नहीं माना जा सकता कि ऐसे पुरातन प्रवृत्ति या आदत के विषय में बोन-बोन अपनी साहित्यिकता और अपने आमलेट-प्रेम के बीच स्वयंप्रेरित विवेक न करता रहा होगा। उसके लिए मेदोक[1] और सार्तन[1] वैसी ही थी, जिसे कैटुलए और होमर थे। वह जैसे सेंट पीरे के घूंट लेता हुआ किसी तर्कविधि के साथ खेला करता था वैसे ही 'क्लो द वाउज़ियो' के साथ बैठकर किसी बात के बख़िए उधेड़ सकता था। एकान्त के किसी निश्चित समय में वह मांग द बूर्गोंम[1] (बर्गण्डी मदिरा) के साथ विहार करता था। परन्तु बाद में के दिनों तत्त्वज्ञ बोन-बोन के स्वभाव में एक विलक्षण गहराई एवं

1. विविध फ्रांसीसी मदिराएं

रहस्यवादिता आ गई। इस रहस्यवादिता पर उसके प्रिय जर्मन ग्रंथों के अध्ययन से जादूटोने का रंग चढ़ गया था।

जिस ज़माने की बात हम कह रहे हैं, उस ज़माने में लेफेब्रे बीथी के उस छोटे-से कैफे में प्रवेश करना, किसी प्रतिभावाले व्यक्ति के पवित्रस्थान में प्रवेश करने के समान था। रोयेन में ऐसा एक भी रसोइया नहीं था जो आपसे यह न कहता कि बोन-बोन प्रतिभावान व्यक्ति है। उसकी बिल्ली तक इसे समझती थी और प्रतिभावान व्यक्ति के सामने जाकर अपनी दुम हिलाना भूल जाती थी। उसका बड़ा जल-कुत्ता इसे जानता था और मालिक के आने पर कान और नीचे का ज़बड़ा गिराकर अपनी लघुता प्रकट करता था। पर यह भी सत्य है कि इस अभ्यासजन्य सम्मान का अधिकांश तत्त्वज्ञानी के शारीरिक रूप के कारण था। मैं कहने को बाध्य हूं कि उल्लेखनीय बाह्याकृति का असर पशुओं तक पर पड़ता है। और रेस्त्रां-स्वामी की बाह्याकृति में ऐसी बहुतेरी बातें थीं जो चतुष्पादों को प्रभावित कर सकती है। उस लघु महान की चालढाल में ही एक विलक्षण महनीयता थी, जो केवल शारीरिक आयतन के द्वारा पैदा नहीं की जा सकती। यद्यपि बोन-बोन मुश्किल से तीन फुट ऊंचा रहा होगा और उसका सिर बहुत ही छोटा था, फिर भी उसके पेट की गोलाई को, तोंदीलेपन को उदात्तता की सीमा तक पहुंचती वैभवशालिता

से रहित देखना असम्भव था। उसके आकार में कुत्ता और मानव को निश्चय ही उसकी उपलब्धियों का आभास होता रहा होगा और उसकी विराटता में उसकी अमर आत्मा के लिए उपयुक्त आश्रयस्थान के दर्शन होते रहे होंगे।

यहां मैं ब्राह्य तत्त्वज्ञानी के रूपरंगत तथा परिधान के विषय में और भी कुछ कहना चाहता हूं। मेरे नायक के बाल छोटे थे और कंघी से सिर पर सरलता से फैलाए हुए थे। इन बालों पर एक तिरछी सफ़ेद टोपी शोभायमान थी। उसकी जर्किन उस काल के रेस्त्रां-स्वामियों के सामान्य वर्ग द्वारा पहनी जानेवाली जर्किन के फैशन की न थी, बाहें ज़रा बड़ी थीं और कलाई दोहरी थी,—वह उस असभ्य युग की प्रचलित प्रणाली के अनुसार उसी कपड़े की नहीं थी बल्कि जिनोवा के चितकबरे मखमल की थी। उसके स्लिपर चमकीले बैंगनी रंग के थे और ऐसे चित्र-विचित्र थे कि जापान के बने समझ लिए जाते। उसके ब्रिचेज़ (तंग पायजामा) पीले साटन जैसे किसी वस्त्र के थे। उसका आसमानी रंग का लबादा गहरी लाल पट्टियों से निर्मित था और उसके कंधे से होता शरीर पर यों फैला था जैसे सुबह की धुंध सर्वत्र फैली होती है। उसके दर्शन से होने वाले सामान्य प्रभाव को देखकर बेनेवेनुता के वे उल्लेखनीय शब्द याद आ जाते थे कि यह कहना कठिन है कि "पियरे बोन-बोन सचमुच स्वर्ग का पक्षी था, या पूर्णता का स्वर्ग ही था।"

मैं कह चुका हूं कि ले फेब्र बीथी के उस छोटे-से कैफे में प्रवेश करना. किसी प्रतिभावाले व्यक्ति के पवित्र स्थान में प्रवेश करना था।–किन्तु केवल प्रतिभावाला आदमी ही उस पवित्रस्थल के गुणों का अन्दाज़ लगा सकता था। प्रवेश-द्वार के सामने एक साइनबोर्ड लगा था जिस पर एक ओर बोतल और दूसरी ओर समोसा के चित्र बने हुए थे और दूसरी ओर 'बोन-बोन का बोधगृह' शब्द लिखे हुए थे। इस प्रकार दोनों पेशों का बोध हो जाता था।

ड्योढ़ी पर पांव रखते ही इमारत का सम्पूर्ण अन्तरंग भाग आंखों के सामने आ जाता था। पुराने ढंग का एक लम्बा, नीची उठान का कमरा ही कैफे का एक मात्र स्थान था। इस कक्ष के एक कोने पर तत्त्वज्ञानी की शय्या थी। पर्दों की भरमार तथा यूनानी ढंग से चंदोवे ने उसे शानदार और आरामदेह बना दिया था। विपरीत कोने में भोजनागार तथा पुस्तकालय थे। भोजनालय की अलमारी पर शास्त्रार्थ की तश्तरी चुपचाप पड़ी थी। इधर अद्यतन नीतिशास्त्र से भरा चूल्हा पड़ा था, उधर पुस्तकों की खिचड़ी फैली हुई थी; कहीं मांस भूनने की झंझरी के साथ जर्मन नीतिशास्त्र की जिल्द हाथ मिला रही थीं और कहीं यूसेबियस के पास टोस्ट का कांटा पड़ा था। कड़ाही में प्लेटो (अफलातून) आराम से लेटा था और थूकदानी पर समसामयिक हस्तलिपियां चुनी हुई थीं।

और बातों में बोन-बोन कैफे अपने समय के अन्य स्वल्पाहारगृहों जैसा ही था। दरवाज़े के सामने ही एक बड़ा आतिशदान मुंह बाये पड़ा था। आतिशदान की दाहिनी ओर एक कपबोर्ड पर तरह-तरह की लेबिल लगी हुई बोतलें सज़ी हुई थीं। उनमें मूज़ों, चेम्बरटिन, सेंटज्यार्ज, बोर्दे, मीदी, सातर्न लाफितें इत्यादि मदिराएं, अपनी अन्य अपेक्षाकृत अप्रसिद्ध बहिनों के साथ, पान किये जाने के लिए, मौजूद थीं। छत से सांकल के सहारे लौहनिर्मित एक लैंप लटका हुआ था, जिससे कमरे में धुंधला प्रकाश फैल रहा था।

इसी जगह की बात है। घोर सर्दी–शिशिर–के दिन थे, जब एक रात को बारह बजे, अपनी विलक्षण मोटाई के विषय में कुछ देर तक पड़ोसियों की बातें सुनने के बाद, पियरे बोन-बोन ने सबको बाहर निकाल दिया, और विक्षुब्ध मन से चमड़े की गद्दीवाली आरामकुर्सी पर लेटा दहकती हुई आग का सुख भोगने लगा।

यह रात उन भयानक रातों में से एक थी जो शताब्दी के बीच एक ही दो बार आती हैं। बर्फ बड़ी-बड़ी शिलाओं के रूप में नीचे फिसलती जा रही थी और भयानक अन्धड़ में बोन-बोन का कैफे जड़ से कांप उठता था। उग्र वायु चिमनी से आकर तत्त्वज्ञानी की शय्या के पर्दों को बुरी तरह हिला देती थी और उसके कारण खाद्यपात्र तथा पुस्तकें इधर-उधर बिखर गई थीं। बाहर का साइनबोर्ड

तूफान के झोंकों में ज़ोर से खड़खड़ा उठता था और ठोस बलूत के स्तंभों से टकराकर रुदनशील ध्वनि उत्पन्न करता है।

मैंने ऊपर कहा है कि आतिशदान के पास अपने नित्य के स्थान पर बैठते हुए बोन-बोन अपनी शान्त मुद्रा में नहीं था। दिन-भर ऐसी कई चिन्ताजक बातें होती रहीं थीं कि उसके चिन्तन की शान्ति भंग हो गई थी। बनानी एक चीज़ थी, और बन दूसरी गई थी; जब वह नीतिशास्त्र के एक सिद्धान्त की खोज में लगा था तब चूल्हे पर रखा पात्र उलटकर गिर पड़ा था, और सबसे बड़ी बात तो यह कि जिस सौदे को तय करने में वह सदा ही हर्ष का अनुभव करता था वह किसी तरह न तय हो सका था। इन चिन्ताओं में रात की भयानकता भी मिल गई थी जिससे उसकी घबराहट बढ़ गई थी। जिस बढ़े जल-कुकुर का जिक्र पहिले किया जा चुका है, उसे सीटी देकर उसने नज़दीक बुला लिया और अशान्त भाव से कुर्सी पर बैठ गया। अब उसकी नज़र कक्ष के दूरस्थ भाग की ओर गई जिसके दुराग्रही अन्धकार को दहकती आग का प्रकाश भी पूरी तरह दूर नहीं कर पा रहा था। किस मतलब से वह उधर देख रहा था, उसे खुद नहीं मालूम, परन्तु उसका निरीक्षण-कार्य पूरा कर लेने पर उसने एक छोटा टेबुल, जो किताब-कागज़ों से भरा हुआ था, अपने नज़दीक खींच लिया और अगले दिन प्रकाशित होने वाली एक बृहदाकार पाण्डुलिपि के संशोधन में डूब गया।

कमरे में एक कराहती फुसफसाहट आई–"मोशिये बोन-बोन, मुझे कोई जल्दी नहीं है।"

घबड़ाकर टेबुल को गिराता हुआ हमारा नायक उठ खड़ा हुआ और आश्चर्य से चतुर्दिक देखता हुआ बोला–"राक्षस।"

"बिल्कुल ठीक।" आवाज़ ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

शय्या पर अपनी पूरी लम्बाई में परसी हुई चीज़ को देखकर तत्त्वज्ञानी बोला–"बिल्कुल ठीक। क्या चीज़ बिल्कुल ठीक है? तुम यहां कैसे आए?"

अनाधिकार प्रवेशकर्ता ने कहा–"मैं कह रहा था,–हां, मैं कह यह रहा था कि मुझे समय का कोई अभाव नहीं है और जिस काम के लिए मैं आया हूं उसकी तुरन्त आवश्यकता भी नहीं है। संक्षेप में मेरा मतलब यह है कि आपके अपना व्याख्या-कार्य पूरा कर लेने तक मैं ठहर सकता हूं।"

"मेरी व्याख्या! यह बात है!–तुम कैसे जानते हो, तुम्हें यह बात कैसे समझ में आई कि मैं व्याख्या लिख रहा हूं? हे ईश्वर!"

"हुश!" उस आकृति ने पतली तीखी आवाज़ में कहा। फिर वह जल्दी से शय्या पर से उठकर एक ही छलांग में हमारे नायक के पास आ गया और उसके कारण सिर पर झूलता लैंप बल खाकर पीछे हट गया।

यद्यपि तत्त्वज्ञानी विस्मित था किन्तु इसके कारण अजनबी के चेहरे-मोहरे और परिधान का पर्यवेक्षण करने में उसे कोई बाधा न हुई। वह मूर्ति बहुत दुबली किन्तु सामान्य से कहीं ज़्यादा ऊंची थी, काले कपड़े का एक धूमिल चुस्त सूट पहिने थी जो एक शती पूर्व की शैली में कटा-बना था। देखने से मालूम होता था कि ये वस्त्र उससे कहीं नाटे कट के आदमी के लिए बनाए गए होंगे। उसके टखने और कलाइयां कई इंच तक खुली हुई थीं। किन्तु उसके जूतों में जो एक जोड़ी शानदार बक्सुए लगे हुए थे वे उसके परिधान के दूसरे हिस्सों की ग़रीबी को झुठला रहे थे। उसका सिर खुला हुआ और पूर्णतः गंजा था, केवल पिछले भाग में कुछ बाल थे जिससे एक काफी लम्बी चोटी लटक रही थी। पार्श्वकांचयुक्त हरा चश्मा प्रकाश की चमक से आंखों की रक्षा कर रहा था; साथ ही हमारे नायक को उनके रंग या बनावट का पता नहीं चलने देता था। सारे शरीर पर कहीं कमीज का नामोनिशान न था। हां, एक गंदा सफ़ेद गलबन्ध कण्ठ के चारों ओर बड़ी सफ़ाई के साथ बंधा हुआ था, और उसके सिरे दोनों पार्श्वों में लटक रहे थे जिससे अनजाने ही सही उसके पादरी होने का शुबहा होता था। उसकी सूरत-शकल और रंग-ढ़ंग में और भी कई ऐसी बातें थीं जिनसे इस सन्देह की पुष्टि होती थी। अपने बायें कान के ऊपर, आधुनिक क्लर्क की

भांति, वह प्राचीनों की लेखनी जैसी कोई चीज़ रखे हुए था। उसके कोट के समाने वाली एक जेब में एक छोटी काली पुस्तक, जो फ़ौलाद की क्लिप में बंधी हुई थी, दिखाई पड़ रही थी। पता नहीं संयोगवश या कैसे पुस्तक कुछ इस तरह रखी हुई थी कि पुश्ते पर अंकित उसके नाम 'कैथालिक क्रिया-पद्धति' (रायचुएल कैथलीक) के सफ़ेद अक्षर बाहर से दिखाई पड़ रहे थे। उसके शरीर पर ऊपर से नीचे तक विषण्णता, यहां तक कि मुर्देसा पीलापन छाया हुआ था। माथा ऊंचा था उस पर गहरे चिन्तन की रेखाए थीं। मुख के कोने नीचे की ओर इस प्रकार खिंचे हुए थे कि उनसे अत्यन्त विनीत विनम्रता का पता लगता था। जब वह हमारे नायक की ओर आया तो उसके हाथ जुड़े हुए थे। उसने एक दीर्घ निःश्वास लिया। उस समय उसकी दृष्टि में इतनी पवित्रता थी कि उसका प्रभाव पड़े बिना रह नहीं सकता था। तब तत्त्वज्ञानी ने अजनबी का सन्तोषजनक रूप से पर्यवेक्षण कर लिया तो रोष के समस्त चिह्न उसके चेहरे से दूर हो गए; उसने बढ़कर उससे हाथ मिलाया और लाकर एक आसन पर बैठा दिया।

किन्तु तत्त्वज्ञानी के मनोभाव में जो आकस्मिक परिवर्तन हो गया उससे यह समझना कि अजनबी के प्रभाव से वैसा हुआ, बिल्कुल गलत होगा बोन-बोन ऐसा नहीं था कि उस पर किसी की बाह्याकृति

का कोई प्रभाव पड़ता। जो आदमी मनुष्यों एवं वस्तुओं का ऐसा खरा ज्ञाता था उसके लिए यह असम्भव था कि वह अपने आतिथ्य की सीमा में अनधिकार प्रवेश करने वाले अजनबी के वास्तविक चरित्र को न समझ पाया हो। अजनबी के पांवों की बनावट काफी महत्त्वपूर्ण थी। उसके नितम्ब के पिछले भाग में सूजन थी जो हिल रही थी और उसके कोट का निचला भाग स्पन्दित हो रहा था। ज़रा ख्याल तो कीजिए कि जिस आदमी के लिए सदा ही उसके मन में शुद्ध सम्मान की भावना रही हो सहसा उसका सत्संग-लाभ होने पर हमारे नायक को कितना सन्तोष हुआ होगा। फिर भी वह इतना विलक्षण था कि अपने वास्तविक मनोभावों का पता नहीं लगने देता था। उसे सहसा जो स॰ न प्राप्त हुआ था उसके प्रति वह अपनी चेतना को प्रकाशित नहीं करना चाहता था। उसका उद्देश्य इतना ही था कि अजनबी से बातचीत करके कुछ ऐसे नैतिक विचारों की जानकारी प्राप्त कर ले जिन्हें अपने आगामी प्रकाशन में शामिल करके मानव जाति का प्रकाश दे सके और खुद अपने को भी अमर कर ले,—ऐसे विचार को अजनबी की बड़ी उम्र और सदाचार-शास्त्र में उसके विख्यात पाण्डित्य से प्राप्त हो सकते थे।

ऐसे प्रबुद्ध विचारों में प्रेरित होकर हमारे नायक ने अजनबी से बैठने का अनुरोध किया, इसके साथ ही आग में कुछ और लकड़ियां

डाल दीं और टेबुल पर विन द मुज़ाओ (एक तीक्ष्ण मदिरा) की चन्द बोतलें लाकर रख दी इतनी तैयारी कर लेने के बाद वह अजनबी के सामने अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया और इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि कैसे बातचीत शुरू करे। किन्तु कभी-कभी बड़ी चतुराई से बनाई हुई योजनाएं भी व्यवहार में असफ़ल हो जाती हैं। आगन्तुक के प्रथम शब्दों से ही वह हक्काबक्का होकर रह गया।

उसने कहा—"मैं देखता हूं कि तुम मुझे जानते हो, बोन-बोन! हा! हा! हा! हे! हे! हे! ही! ही! ही! हो! हो! हो! हू! हू! हू!" और अपने चेहरे की सारी पवित्रता को दूर फेंकते हुए ऐसा मुंह बनाया कि वह कानों तक फैल गया और उसके विषैले, टेढ़े-मेढ़े दांत दिखलाई पढ़ गए। फिर वह अपना सिर पीछे की ओर फेंक कर इतने ज़ोर से, भयानक रूप में और देर तक हंसता रहा कि काले कुत्ते ने भी चूतड़ के सहारे बैठे हुए, मुंह ऊंचा करके उस कोरस में उसका साथ दिया। और बिल्ली घबराकर दूर कोने में भाग गई और वहां से चीखने-गुर्राने लगी।

तत्त्वज्ञानी ने ऐसा कुछ नहीं किया। वह दुनियादार था और कुत्ते की तरह हंसता या बिल्ली की तरह अशिष्ट आचरण करना उसके लिए सम्भव न था। हां, उसे यह देखकर कुछ विस्मय ज़रूर हुआ कि उसके अतिथि की जेब की किताब पर जो 'रायचुएल कैथलीक'

(कैथलिक क्रियापद्धति) शब्द सफ़ेद अक्षरों में उभरे हुए थे उनका रूप और रंग दोनों बदल रहा था। कुछ ही क्षणों में मूलनाम की जगह 'रूज़ीशेर दे कोंगदाने' (Registre of Condmnes) अर्थात् 'सज़ायात्फाओं का रजिस्टर' शब्द वहां लाल अक्षरों में चमकने लगे। इस चमत्कारपूर्ण परिस्थिति के कारण बोन-बोन के जवाब में परेशानी का रंग आ गया, जो दूसरी अवस्था में शायद न आ पाता।

तत्त्वज्ञानी ने कहा–"क्यों, महाशय, सच्ची बात कहें, तो मेरा विश्वास है कि आप हैं, मेरा आशय है कि मैं सोचता हूं, कल्पना करता हूं–मुझे एक हलका, बहुत हलका-सा खयाल है कि यह उल्लेखनीय सम्मान..."

महापुरुष ने बीच में बाधा दी–"ओह! आह! हां!–बहुत ठीक, ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं; मैं समझ रहा हूं कि क्या बात है।" यह कहते हुए उसने अपना हरा चश्मा उतार लिया और उसे अपने कोट की बांह से पोंछकर अपनी जेब में रख लिया।

किताबवाली घटना से तो बोन-बोन पहले ही चकित था, अब उसने जो कुछ देखा उससे तो उसके आश्चर्य का आर-पार ही न रहा। अपने अतिथि की आंखों का रंग देखने की उत्सुकता से जो उसने नज़र ऊपर उठाई तो देखा कि न वे काली हैं, जिसका उसे पूर्वानुमान था,–न तो भूरी हैं, जिसकी कल्पना की जा सकती थी–न

तो पिंगलवर्णी हैं, न नीली हैं; वे पीली, लाल, सफेद, हरी या ऊपर आकाश, नीचे पृथ्वी या सागर में पाए जाने वाले किसी भी रंग की नहीं है। पियरे बोन-बोन ने साफ-साफ देख लिया कि हिज़मेजेस्टी की न केवल आंखें नहीं हैं बल्कि कभी वहां थीं, इसका भी कोई चिह्न नहीं है क्योंकि जिस जगह प्रकृत्या आंखों को होना चाहिए था वहां मरे मांस का एक लोथड़ा था।

ऐसे विचित्र दृश्य के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने का तत्त्वज्ञानी कैसे भूल सकता था। उसे आश्चर्य हुआ कि हिज़मेजेस्टी ने तुरन्त शिष्ट एवं सन्तोषजनक उत्तर दिया।

"आंखें! मेरे प्रिय बोन-बोन् तुमने आंखों के बारे में पूछा? ओह! आह! मैं देख रहा हूं! जो भद्दी चीज़े छपकर फैल गई हैं, मैं देखता हूं कि उन्होंने मेरे शारीरिक रूप के बारे में तुम्हें गलत विचार दिए हैं। आंखें! सच है, आंखे, पियरे बोन-बोन, अपनी ठीक जगह पर है। तुम कहोगे–ठीक जगह तो सिर है। तुम्हें इन आंखों की अनिवार्य आवश्कयता है। फिर भी मैं तुम्हें विश्वास करा दूंगा कि मेरी दृष्टि तुम्हारी दृष्टि से कहीं ज़्यादा पैनी है। मैं देख रहा हूं कि उस कोने में एक बिल्ली है–एक खूबसूरत बिल्ली। उसे देखों। अच्छी तरह देखो। हां, अब बताओ, बोन-बोन, क्या तुम उसकी खोपड़ी से निकलते विचारों, धारणाओं, चिन्ताओं को देख रहे हो?

यह बात! तुम नहीं देख सकते। वह सोच रही है कि हम उसके मानस की गहराई की तारीफ़ कर रहे हैं। अभी-अभी वह इस निर्णय पर पहुंची है कि मैं पादरियों-पुरोहितों में सबसे सम्मान्य हूं, और यह कि तुम दार्शनिकों में सबसे ज़्यादा दिखाऊ हो, फालतू हो। इस तरह तुम देख सकते हो कि मैं पूर्णतः अन्धा नहीं हूं। मेरे पेशे के लिए जिन आंखों की बात तुम पूछ रहे हो, वे भारमात्र हैं; किसी भी समय टोस्ट पकाने वाले लोहे या चम्मचवाले कांटे से निकाल दी जाने के लायक। मैं मानता हूं कि तुम्हारे लिए ये अनिवार्यतः आवश्यक हैं। और बोन-बोन तुम उनका ठीक तरह से उपयोग करने की कोशिश करो। मेरी दृष्टि तो मेरी आत्मा है।"

इस जगह अतिथि ने टेबुल पर रखी शराब खुद डालकर पी और एक बड़ा प्याला बोन-बोन, के लिए भरकर उससे अनुरोध किया कि सोच-विचार के पी जाए और बिल्कुल आराम से बैठे।

जब आगन्तुक के अनुरोध का पालन करते हुए बोन-बोन ने अपना चश्मा उतार लिया तो हिज़मेजेस्टी उसके कन्धे को थपथपाते हुए फिर बोलने लगे–"तुम्हारी किताब बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण है पियरे! बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण है तुम्हारी किताब! मेरे मन के अनुकूल है। किन्तु मेरे विचार से विषयक्रम में कुछ सुधार की ज़रूरत है। तुम्हारी बहुत-सी धारणाएं मुझे अरस्तू की याद दिलाती हैं। वह तत्त्वज्ञानी

मेरे अत्यन्त घनिष्ठ परिचितों में से था। जिस तरह गलती करके खुश होने के उसके स्वभाव को मैं पसन्द करता था, वैसे ही उसकी दु:शीलता के लिए भी उसे चाहता था। उसने जो कुछ लिखा है उसमें केवल एक ही ठोस सत्य है, और उसके लिए भी उसकी मिथ्या बातों पर तरस खाकर, करुणापूर्वक मैंने ही उसे संकेत दिया था। पियरे बोन-बोन! मेरा अनुमान है जिस दैवी नैतिक सत्य की ओर मेरा इशारा है उसे तुम अच्छी तरह जानते होंगे।"

"मैं नहीं कह सकता..."

"नहीं! अच्छा, मैंने ही अरस्तू को बताया था कि छींक के द्वारा मनुष्य अपनी नासिका से फालतू विचारों को निकाल फेंकते हैं।"

अपने लिए एक बड़ा पात्र मदिरा से भरते हुए तथा आगन्तुक की उंगलियों में सुंघनी की डिब्बी थमाते हुए तत्त्वज्ञानी ने कहा–"सचमुच– (हिचकी)–यही बात है।"

सुंघनी की डिब्बी लेने सें इंकार करते हुए हिज़ मेजेस्टी आगे कहने लगे–"अफलातून के लिए भी, किसी समय, मेरे दिल में मित्रवत् स्नेह था। बोन-बोन, तुम अफलातून को तो जानते ही होगे? नहीं? तो मैं हज़ार बार क्षमा मांगता हूं। एक दिन वह एथेंस के पार्थेनन में मुझसे मिला और कहा कि वह एक विचार के लिए परेशान है। मैंने उसे जो विचार दिया वही उसके दर्शन का मूलाधार है।"

"क्या आप कभी रोम भी गए थे?" रेस्त्रां-स्वामी ने माउज़े मदिरा की दूसरी बोतल ख़तम करते हुए तथा आलमारी से 'विन द चेम्बरतिन' नामक दूसरी मदिरा की बड़ी बोतल निकालते हुए पूछा।

दुष्ट, कुछ इस तरह जैसे किसी किताब से कोई पद गा रहा हो, बोला, "केवल एक बार मोशिये बोन-बोन, केवल एक बार। एक समय ऐसा आया था जब पांच साल तक विद्रोह चलता रहा और उस अवधि में प्रजातंत्र के पास अफसर नहीं रह गए, कोई न्यायालय नहीं रह गया। केवल पंचायतें थीं किन्तु उन्हें कोई शासनाधिकार नहीं था। उस समय, मोशिये बोन-बोन, केवल उस समय मैं रोम में था, इसलिए मुझे उसके किसी दर्शन का कोई पार्थिव परिचय नहीं है।"

"आप एपीक्यूरस के बारे में क्या समझते हैं? आप एपीक्यूरस के बारे में (-हिचकी-) क्या खयाल रखते हैं?"

"किसके बारे में मैं क्या खयाल रखता हूं?" बदमाश ने आश्चर्य के साथ कहा-"निश्चय ही आपका आशय एपीक्यूरस में कोई गलती निकालने का नहीं है। मैं एपीक्यूरिस के बारे में क्या खयाल करता हूं? आप क्या मेरी बात कह रहे हैं? मैं ही तो एपीक्यूरस हूं। मैं ही वह दार्शनिक हूं जिसने दायोजीनिस लारेन्स द्वारा प्रशंसित तीन सौ पुस्तकें लिख़ डाली हैं।"

अब तक तत्त्वज्ञानी के दिमाग़ पर मदिरा का प्रभाव होने लगा था इसलिए उसने कहा-"यह झूठ है!"

हिज़ मेजेस्टी बोले-"बहुत अच्छा महोदय! बहुत ठीक महाशय।"

रेस्त्रां-स्वामी ने फिर दोहराया-"यह झूठ है, यह (-हिचकी-) झूठ है।"

शान्तिपूर्वक बदमाश ने कहा-"आप अपनी ही बात मान लजिए।" उधर बोन-बोन ने हिज़ मेजेस्टी को पराजित करने के बाद चेम्बरतिन (मदिरा) की दूसरी बोतल खतम करना अपना कर्तव्य समझा।

आगन्तुक बोला-"जैसा मैं अभी कुछ देर पहले कह रहा था, आपकी उस किताब में बहुत-सी बलात् निकाले हुए निष्कर्ष हैं, पेशिये बोन-बोन! उदाहरण के लिए, आत्मा-सम्बन्धी वाहियात बातों का क्या मतलब है? ज़रा बताइए तो महोदय, आत्मा क्या है?"

अपनी पाण्डुलिपि की ओर इशारा करते हुए तत्त्वज्ञानी ने कहा-"आत्मा! (-हिचकी-) असंदिग्ध रूप से..."

"नहीं, महोदय"

"संशयरहित।"

"नहीं, महोदय।"

"अखण्डनीय..."

"नहीं, महोदय।"

"प्रामाणिक रूप से..."
"नहीं, महोदय।"
"निर्विवाद..."
"नहीं, महोदय।"
(हिचकी)
"नहीं, महोदय।"
"और सब प्रश्नों के परे एक..."
"नहीं, महोदय! आत्मा ऐसी कोई चीज़ नहीं है।" (इस समय तक तत्त्वज्ञानी चेम्बरतिन की तीसरी बोतल समाप्त कर चुका था।)
"तब-(हिचकी)-कृपया बताइए वह क्या है?"
"वह न यहां है, न वहां है, मोशिये बोन-बोन!" हिज़ मेजेस्टी ने विचार की मुद्रा में कहा-"मैंने स्वाद लिया है-मतलब यह है कि मुझे कुछ बहुत बुरी, और कुछ बहुत अच्छी आत्माओं को जानने का अवसर मिला है।" यहां बदमाश अपने ओंठ चाटने लगा और अज्ञान में ही उसका हाथ अपनी जेब की किताब पर पड़ गया। अब तो उसे छीकों का दौरा ही आ गया।
हिज़ मेजेस्टी ने कहना जारी रखाः-
"एक आत्मा थी क्रेटिनस की-गनीमत। एरिस्तोफेनीस; गतिशील। अफलातूनः उत्कृष्ट-आपका अफलातून नहीं बल्कि हास्यरस का कवि

अफलातून। आपका अफलातून तो सेरबेरस के पेट को उलट देता। फोः। और देखने दीजिए। नोवियस, एन्ड्रोलिस, प्लेरस और तेरेंसियश भी तो थे। फिर लुसीलियस और कैटुलस, नासो, तथा क्विन्तियस फ्लैक्स के नाम याद आते हैं-प्यारा क्विन्ती! जब वह मेरे दिल बहलाव के लिएं एक पार्थिव गान गा रहा था तब मैं एक कांटे पर उसे शुद्ध श्रेष्ठ हास्य में, सिझा रहा था।-टोस्ट बना रहा था। तब से मैं उसे इसी नाम से पुरारता। हूं किन्तु ये रोमी तो सुवास चाहते हैं। एक मोटा यूनानी उनके-जैसे एक दर्जन के बराबर होता है; फिर वह अपनी शक्ति स्थिर रखता है जो क्विराइत के लिए नहीं कहा जा सकता। आइए आपके सार्तन[1] का स्वाद लें।"
बोन-बोन ने मदिरा की बोतलें हाथ में दे दीं परन्तु इस समय उसे कमरे में दुम हिलने की-सी ध्वनि का बोध हुआ। हिज़ मेजेस्टी में यह बड़ी भद्दी बात थी किन्तु तत्त्वज्ञानी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया हां, काले जलकुक्कुर को लात मारकर चुप रहने को कह दिया। आगन्तुक आगे कहने लगा...
"मैंने देखा कि होरेंस में भी बहुत कुछ अरस्तू-जैसा ही स्वाद है-आप जानते हैं, मुझे विविधता का शौक है। मीनाण्डर से मैं तेरेंसियश का अनुमान नहीं लगा सकता था। मुझे यह देखकर

1. एक फ्रांसीसी मदिरा

आश्चर्य हुआ कि नासो प्रच्छन्न रूप में निकान्दर ही है। वर्जीजियस में थर्योक्राइतस की झंकार थी। मार्तियल को देखकर मुझे आर्किलोकस का ख्याल आता था। और टीरस लिवी निश्चित रूप से पालीबियस के सिवा दूसरा कुछ नहीं था।"

बोन-बोन ने हिचकी के रूप में जवाब दिया और हिज़ मेजेस्टी ने आगे कहना शुरू किया।

"परन्तु मेरा एक झुकाव है मोशिये बोन-बोन! यदि मुझमें कोई झुकाव है तो वह तत्त्वज्ञानी के लिए है। फिर भी मैं यह कहना चाहता हूं महोदय, कि हर आदमी नहीं जानता कि तत्त्वज्ञानी का चुनाव कैसे किया जाता है। लम्बे (तत्त्वज्ञानी) अच्छे नहीं होते, और जो सर्वोत्तम होते हैं, उनकी यदि सावधानी के साथ खाल नहीं उधेड़ी जाती तो ईर्ष्या के कारण उनसे बदबू आने लगती है।"

"खाल नहीं उधेड़ी जाती?"

"मेरा आशय है कि यदि उन्हें लाश से बाहर नहीं किया जाता।"

"आप चिकित्सक के (–हिचकी–) बारे में क्या सोचते हैं?"

"उनका नाम न लीजिए।–उख! उख! (इस समय हिज़ मेजेस्टी को ज़ोर की उबकाई आ गई) मैंने एक के सिवा किसी का स्वाद नहीं चखा है। वह बदमाश पाखण्डी! उससे हींग की गन्ध आती थी! उख! उख! उख! पकड़कर उसे शूकरालय के ठण्डे जल में खूब

गच्चा दिया, तब उसने मुझे हैज़े की गोलीं दी।"

"बदमाश! (हिचकी) बटिका-मंजूषा का गर्भस्राव!" और तत्त्वज्ञानी ने एक बूंद आंसू गिरा दिया।

आगन्तुक ने कहना जारी रखा–"अन्ततोगत्वा, यदि कोई भद्रजन जीवित रहना चाहता है तो उसे एक-दो से कहीं ज़्यादा चतुर होना चाहिए। हम लोगों के विचार से मोटा चेहरा कूटनीतिज्ञता का प्रमाण है।"

"यह कैसे?"

"क्यों कभी-कभी हम लोगों को खाद्यसामग्री के लिए कैसी परेशानी होती है। आपको जानना चाहिए कि जैसी उभसदार जलवायु हमारी है उसमें दो-तीन घण्टे से ज़्यादा देर तक स्फूर्ति बनाए रखना असम्भव है, और मृत्यु के अनन्तर तो यदि तुरन्त ही नमक के घोल में नहीं रखा गया तो शरीर से दुर्गन्ध आने लगती है–समझ रहे हो? जब आत्माएं सामान्य ढंग से हमें समर्पित की जाती है तो उनसे संड़ाध आने का भय बराबर बना रहता है।"

"(हिचकी!-हिचकी!) हे ईश्वर। तब आप कैसे काम चलाते हैं?"

अब लोह लैम्प और उग्रता के साथ हिलने लगा। राक्षस अपने आसन पर थोड़ा उठ गया, किन्तु किंचित निःश्वास छोड़कर उसने अपने ऊपर पुनः नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

"काम चलाने के कई ढंग हैं। हममें से अधिकांश तो अधभूखे

रहते हैं; दूसरे कुछ नमक-चटनी से काम चला लेते हैं। अपने तई तो मैं अपनी स्फूर्तियां जीवित शरीरों से ही खरीद लेता हूं, उस अवस्था में वे ठीक बनी रहती हैं।"

"किन्तु शरीर (–हिचकी–) शरीर?" तत्त्वज्ञानी ने सातर्न की बोतल खाली करते हुए कहा।

"शरीर, शरीर? पर शरीर का क्या? ओह! आह! मैं देख रहा हूं। पर महोदय, शरीर तो इस सौदे से प्रभावित होता नहीं। मैंने अपने समय में इस तरह की असंख्य खरीदें की हैं, किन्तु पार्टियों को कभी कोई असुविधा नहीं हुई। केन थे, निमरोद थे, नारी एवं कैलीगुला थे; दायोनीसियश तथा पिसीट्रेटस थे; इनके इलावा हज़ारो और थे जो अपने जीवन के उत्तरकाल में यह नहीं जानते थे कि आत्मा का होना, आत्मा का रखना किस चिड़िया का नाम है। महोदय, फिर भी इन आदमियों ने समाज को शोभित किया। आज भी अ–हैं जिन्हें हम आप दोनों ही जानते हैं। क्या उनकी सारी मानसिक एवं शारीरिक शक्तियां उनके काबू में नहीं है? उनसे अच्छीं सूक्तियां कौन लिखता है? उनसे अधिक विचक्षणता के साथ कौन तर्क करता है? कौन–पर ठहरिए। उनका अनुबन्धपत्र मेरे पाकिट बुक में हैं।"

इतना कहकर उसने लाल चमड़े का एक बटुआ निकाला। बटुए में से उसने बहुत से कागज़ बाहर निकाले। बोन-बोन ने एक झांकी

में देख लिया। कि उनमें से कुछ पर माछी–माज़ा–रिच अक्षर तथा फैलीगुला एवं एलिज़ाबेथ शब्द लिखे हुए हैं। हिज़ मेजेस्टी ने इनमें से एक छोटा-सा कागज़ निकाला और उनमें से निम्नलिखित शब्द ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना शुरू किया।–

"कतिपय मानसिक धर्मस्वों का, जिनका ब्यौरा देना आवश्यक है, विचार करते हुए और एक हज़ार लुइज़े[1] के बदले में, एक साल एक मास की उम्र में इसके द्वारा अनुबन्धवाहक को उस छाया पर जिसे आत्मा कहते हैं, सम्पूर्ण अधिकार, अंग-उपागों सहित, दे रहा हूं। (हस्ताक्षर) अ... (यहां हिज़ मेजेस्टी ने एक नाम दोहराया जिसे और अधिक स्पष्ट करना मैं अपने लिए उचित नहीं समझता।)

उसने और ओ कहा–"अ...एक बुद्धिमान मनुष्य है किन्तु मोशियें बोन-बोन, आपकी तरह उसे भी आत्मा के विषय में भ्रम है। आत्मा एक छाया। बेहूदी बात है यह मोशिये बोन-बोन! आत्मा एक छाया है! हा! हा! हा!–हे! हे! हे! हू! हू! हू!" सिर्फ कीमा की हुई छाया (Fricasseed Shadow) का खयाल कीजिए।

"सिर्फ कीमा की हुई (हिचकी) छाया का ख्याल कीजिए।" हमारे नायक ने, जिसकी क्षमताएं हिज़ मेजेस्टी के प्रवचन से ऊर्जस्वित हो उठी थीं, प्रतिध्वनिमात्र की।

1- एक सिक्का।

"केवल कीमा की हुई–(हिचकी)–छाया का खयाल कीजिए। हत्तेरे की! (हिचकी, आक् छीं) यदि मैं ऐसा ही (हिचकी) लंठ था, तो मेरी आत्मा मिस्टर (आक् छीं)!"

"मोशिये बोन-बोन, तुम्हारी आत्मा?"

"हां, महोदय–(हिचकी)–मेरी आत्मा–"

"क्या?"

"छाया नहीं है। धुत्!"

"मेरे कहने का आशय यह नहीं था–"

"हां महोदय, मेरी आत्मा (हिचकी, आक्छीं) हां, महोदय।"

"मेरा आशय इस बात पर ज़ोर देने का नहीं था–"

"मेरी आत्मा (हिचकी) विलक्षण रूप से इसके योग्य–(हिचकी)"

"क्या, महोदय?"

"स्ट्यू[1]।"

"हा!"

"साउफली; सूफी[2]।"

"आड!"

"फ्रिकाशे[3]।"

"ऐसा!"

1.2.3. मांस के विविधव्यंजन।

"रैग आउट या फ्रिकांदो। और देखिए मैं आपको (हिचकी) सस्ते में दे दूंगा।"

हिज़ मेजेस्टी ने शान्तिपूर्वक, साथ ही अपने आसन से उठते हुए, कहा–"ऐसी बात मैं सोच भी नहीं सकता।"

तत्त्वज्ञानी टकटकी लगाये देंखता रह गया।

"इस समय मेरा पेट भरा है।" हिज़ मेजेस्टी ने कहा।

"(हिचकी) ओह!" तत्त्वज्ञानी ने कहा।

"मेरे पास अभी पैसे नहीं हैं"

"क्या?

"फिर यह मेरी अशिष्टता होगी–

"महाशय।"

"–कि मैं आपकी वर्तमान परिस्थिति..."

(हिचकी)

"–का लाभ उठाऊं।"

हिज़ मेजेस्टी ने अभिवादन किया और विदा हो गए–किस ढंग से, इसका तत्त्वज्ञानी को ठीक पता नहीं लगा, किन्तु बड़े प्रयत्न से बदमाश पर फेंकी हुई बोतल से छत से झूलती पतली चेन टूट गई और लैम्प के ऊपर गिरने से तत्त्वज्ञानी ज़मीन पर चित पड़ गया।

छाया
(एक अख्यायिका)

तुम जो इसे पढ़ रहे हो, अब भी जीवितों में गिने जाते हो किन्तु मैं जो लिख रहा हूं बहुत दिनों पूर्व छायाओं के लोक में जा चुका हूंगा। क्योंकि निश्चय ही विचित्र बातें घटित होंगी, और गुप्त बातें जानकारी में आएंगी, तथा ये स्मारक जब आदमियों की नज़र से गुज़रेंगे उसके पहिले कितनी ही सदियां गुज़र चुकी होंगी। और जब लोग इन्हें देखेंगे तब भी कुछ ऐसे होंगे जो इन पर अविश्वास करेंगे; कुछ ऐसे होंगे जो सन्देह करेंगे और बहुत थोड़े ऐसे होंगे जो लोहे की कलम से अंकित इन चरित्रों में सोच-विचार की पर्याप्त सामग्री पाएंगे।

वह साल आतंकों का साल था–वह आतंक से भी अधिक गहरी ऐसी भावनाओं का साल था, जिनके लिए धरती पर कोई नाम नहीं है। अनेक चिह्न एवं लक्षण दिखाई पड़ चुके थे, और दूर-दूर तक, जल और थल पर, महामारी के काले पंख फैल गए थे। जो ग्रहों और नक्षत्रों के जानकार थे, उन्हें यह मालूम था कि आकाश-मण्डल में अमंगल की छाया है, और दूसरों के साथ मुझ यूनानी ओइनोज़ को भी स्पष्ट हो गया था कि सात सौ चौरानवेवां वर्ष का वह परिवर्तन काल आ गया है जब मेषराशि के आगमन के साथ गुरु भयंकर शनि के रक्तवृत्त में आ मिला है। यदि मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं तो आकाश की विलक्षण प्रकृति, न केवल पृथ्वी के भौतिक-मण्डल में बल्कि मानवजाति के प्राणों, कल्पनाओं एवं चिन्तनों में भी परिलक्षित होने लगी थी।

टोलेमायस नाम के एक धुंधले नगर कि भव्य हाल की दीवारों के अन्दर, रात के वक़्त हम सात आदमी गुलाबी मदिरा की बोतलें खोले बैठे थे। पीतल के एक बहुत ऊंचे द्वार के अलावा हमारे उस कमरे में आने का कोई दूसरा रास्ता नहीं था। इस द्वार की रचना मिस्त्री कोरीनोज़ द्वारा हुई थी और दुर्लभ कारीगरी की चीज़ होने के कारण वह अन्दर से सांकलों में बंधा था। उस धुंधले कमरे में जो काले पर्दे लटक रहे थे उनके कारण हमारी नज़रों से चांद, फीके तारे तथा निर्जन सड़कें ओझल थीं। किन्तु अमंगल की स्मृति एवं आभास इस तरह दूर नहीं किए जा सकते कि हमारे चतुर्दिक ऐसी वस्तुएं थीं जिनका कोई स्पष्ट-विवरण नहीं दे सकता–भौतिक एवं आध्यात्मिक वस्तुएं। वातावरण में भारीपन–दम घुटने की अनुभूति–चिन्ता–और हम सबके ऊपर अस्तित्व की यह भयंकर अवस्था जो स्नायुओं को उस समय अनुभव होती है, जब ज्ञानेन्द्रियां जीवित तथा जाग्रत रहती हैं। किन्तु चिन्तन की शक्तियां, सुस्त पड़ी होती हैं। एक प्रकार का मृत भार हमारे ऊपर छाया हुआ था। वह हमारे अंग-प्रत्यंग

पर, घर के फर्नीचर पर, यहां तक कि उन बोतलों पर भी, जिनसे हम मदिरापान कर रहे थे, फैला हुआ था। सभी चीज़ें दमित दबी हुई-सी थीं और उस बोझ से झुक गई थीं—हमारे कक्ष को प्रकाशित करने वाले सप्त लौह प्रदीपों की ज्योतियों के अलावा सभी चीज़ों का यही हाल था। प्रकाश की ऊंची पतली रेखाओं में अपने को ऊपर उठाए हुए वे प्रदीपलैम्प पाण्डुर एवं निष्कंप जल रहे थे। आबनूस के जिस गोलमेज के इर्द-गिर्द हम बैठे हुए थे उस पर उनकी चमक से दर्पण बनता था उसमें हम सब बैठे हुए लोग अपने ही चेहरे-मोहरे का पीलापन तथा अपने साथियों की झुकी हुई आंखों की अशान्त चमक देखते थे। फिर भी हम हंसते थे और अपने ढंग से खुश भी नज़र आते थे। हमारा यह बातोन्मत्त जैसा (हिस्ट्रीरिकल) था। हम हंसते थे और अनाक्रियोन के गीत भी गाते जा रहे थे, जिसे पागलपन ही कहा जा सकता है। हम खूब छककर पी रहे थे—यद्यपि वह गुलाबी मदिरा हमें खून की याद दिला रही थी। क्योंकि तरुण, ज्वायलस शक्ल में हमारे कमरे का एक अधिवासी और था। वह मुर्दा, पूरी लम्बाई में लेटा हुआ था, कफ़न ये ढका हुआ—इस दृश्य की प्रतिभा और प्रेत! हाय! वह हमारी हंसी-खुशी में शरीक नहीं था—सिवाय इसके कि उसका प्लेग से विकृत चेहरा तथा उसके नयन, जिनमें से मृत्यु महामारी की आधी ही आग बुझ पाई थी, हमारे रागरंग में उतना ही

भाग लेते जान पड़ते थे जितना मुर्दे उन लोगों के राग-रंग में ले सकते हैं जिनको अभी मरना है। किन्तु, यद्यपि मैं ओइनोज़ अनुभव कर रहा था कि मृतात्मा की आंखें मुझ पर लगी हुई हैं, फिर भी मैं अपने को जबर्दस्ती उनकी अभिव्यक्ति की तीक्ष्णता का दर्शन करने से वंचित रखे रहा था तथा उस आबनूसी दर्पण की गहराई में स्थिर रूप से ताकते हुए तियोस के पुत्र के गाने अपनी तेज़ एवं सुरीली आवाज़ में गाता जा रहा था। किन्तु क्रमश; मेरे गाने बंद हो गए और उनकी प्रतिध्वनियां भी, दूर कमरे के रोमल पर्दों पर लहराती हुई क्षीण एवं अस्पष्ट होती गईं, और अन्त में समाप्त हो गईं। और यह लो! जिन रोमल पर्दों में जाकर गायन की ध्वनियां समाप्त हो गई थीं, उन्हीं से एक काली और अस्पष्ट छाया निकली—कुछ ऐसी छाया, जैसी आकाशस्थ धूमिल चांद किसी मानव की आकृति से रच देता है। किन्तु वह छाया न तो मानव की थी, न देवता की, न और किसी परिचित चीज़ की थी। कुछ देर तक तो वह कमरे के पर्दों पर कांपती-हिलती रही, अन्त में पीतल के द्वार की सतह पर पूरी तरह दृष्टि में आती हुई, ठहर गई। किन्तु छाया अस्पष्ट, आकारहीन तथा अनिश्चित थी; वह न तो मनुष्य की छाया थी, न देवता या ईश्वर की—वह न तो यूनान के ईश्वर की, न चैल्डिया के ईश्वर की; न किसी मिस्री ईश्वर की छाया थी और वह छाया पीतल के दरवाज़े पर द्वार के स्तम्भपीठ के गुम्बद के नीचे,

ठहरी रही। वह न तो हिलती थी, न कुछ बोलती थी; बस वहां स्थिर हो गई और बनी रही। और यदि मेरी याददाश्त ठीक है, तो जिस दरवाज़े पर वह छाया स्थित थी, वह कफ़न से ढके हुए तरुण ज्वायलस के पैरों के ठीक सामने ऊपर की ओर था। किन्तु हम सात, जो वहां एकत्र थे, उन पर्दों के बीच से छाया को जाते हुए देखकर भी, उसकी ओर स्थिर आंखों से देखने का साहस न कर सके, बल्कि हमने अपनी आंखें झुकालीं और आबनूस के दर्पण की गहराई में बराबर ताकते रहे। और अन्त में, मैं ओईनोज़, ने धीरे से कुछ शब्द बुदबुदाते हुए उस छाया से पूछा कि उसका घर कहां है और नाम क्या है। और छाया ने उत्तर दिया–"मैं छाया हूं, और मेरा निवास टोलेमायस के भूगर्भस्थित समाधिस्थान–मर्दों के तहखाने–में है। दूषित कैरोनियन नहर की सीमा पर स्थित हेल्यूज़न के धुंधले मैदानों के समीप ही वह जगह है।" सुनते ही हम सब सातों अपने स्थान से भयग्रस्त हो और हड़बड़ाकर उठ गए और कांपने तथा थरथराते हुए भौचक्के-से खड़े रहे, क्योंकि छाया की आवाज़ की ध्वनि में किसी एक प्राणी की ध्वनि नहीं थी वरं बृहत् प्राणिसमूह की ध्वनि थी; उसके शब्द की लय में भिन्नता थी और वह दुनिया से विदा हो गए हज़ारों दोस्तों के सुस्मृत एवं परिचित स्वरों में हमारे कानों को सुनाई पड़ी।

घंटाघर का शैतान

आम तौर पर हर आदमी जानता है कि दुनिया में सबसे अच्छा स्थान है–या, हाय, था–वोण्डरवोटीमिटिस नामक डच गांव। किन्तु चूंकि वह रास्ते से हटकर और मुख्य सड़कों से दूर रह जाता है इसलिए मेरे पाठकों में से बहुत कम ने उसके दर्शन किए होंगे। इसलिए जिन्हें उसे देखने का सौभाग्य नहीं मिला है उनके लाभ की दृष्टि से मैं उसका कुछ हाल-चाल यहां लिख रहा हूं। और वहां के निवासियों के प्रति सार्वजनिक सहानुभूति प्राप्त करने के लिए मैं उन दुर्घटनाओं का इतिहास यहां देना चाहूंगा जो उसकी सीमा के अन्दर अभी पिछले दिनों हुई है। जो कोई मुझे जानता है उसे इस बात में कोई शंका नहीं होगी कि मैं स्वयं अपने ऊपर ओढ़े हुए इस कर्त्तव्य को अपनी सम्पूर्ण योग्यता, कठोर निष्पक्षता, तथ्यों के सावधान परीक्षण तथा इंगलिश-सज्ञ के लिए योग्य विशेषज्ञों के प्रमाण-संकलन के साथ पूरा करूंगा।

पदकों, पाण्डुलिपियों तथा शिलालेखों की सहायता से मैं जो कुछ जान सहा हूं उसके आधार पर निश्चित रूप से कह सकता हूं कि वोण्डरवोटीमिटिस कस्बा अपनी स्थापना के काल से बराबर उसी रूप में रहा है जिस रूप में आज वर्तमान है। जहां तक उसकी स्थापना या जन्म का सवाल है मैं उसका जवाब उस अनिश्चित निश्चितता के साथ ही दे सकता हूं जो बाज़ अवसरों पर गणितज्ञ अलजबरा के किसी सूत्र पर आरोपित करते हैं। उसके स्थापना काल के विषय में मैं यही कहूंगा कि जो भी पुराना काल खोज का हो सकता है वह उसे दिया जा सकता है।

वोण्डरवोटीमिटिस नाम की व्युत्पत्ति क्या है या वह किस शब्द का अपभ्रंश है, इसके विषय में भी, दुःखपूर्वक मुझे कहना पड़ता है कि, मैं निश्चित रूप से कुछ कह सकने में असमर्थ हूं। इस सूक्ष्म विषय पर लोगों की राय अनेक प्रकार की है, कुछ के विचार विद्वत्तापूर्ण कुछ के, मूर्खता से भरे हुए, कुछ के उग्र हैं। उनमें से मैं किसी पूर्णतः सन्तोषजनक बात का चुनाव नहीं कर सकता।

इस प्रकार वोण्डरवोटीमिटिस की स्थापनातिथि या उसके नाम की व्युत्पत्ति के बावजूद, जैसा मैं पहिले भी कह चुका हूं इस बात में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता कि वह सदा से उसी रूप में स्थित रहा है जिस रूप में उसे हम इस युग में पाते हैं। कस्बे के

बूढ़े से बूढ़े आदमी को इसके किसी भाग के किसी दूसरे रूप में होने का स्मरण नहीं है बल्कि इस प्रकार की किसी सम्भावना को वह अपमान समझता है। यह कस्बा एक ऐसी पूर्णतः गोलाकार घाटी में है जिसकी परिधि चौथाई मील के लगभग होगी। वह चारों ओर से सुन्दर पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसकी चोटी पर चढ़ने का कभी किसी आदमी ने साहस नहीं किया। इसके लिए वे बहुत अच्छा कारण यह बताते हैं कि उनको विश्वास ही नहीं है कि उसकी दूसरी और कोई चीज़ है।

घाटी के प्रांगण में (जो बिल्कुल समतल है और जिसमें चौड़े टाइल लगे हुए हैं) एक कतार में गोलाकार साठ मकान एक के बाद एक चले गए हैं। इनका पिछवाड़ा पहाड़ियों की ओर है सब की दृष्टि समान रूप से मैदान के केन्द्रबिन्दु की ओर है। यह केन्द्रबिन्दु हर मकान के अगले मुख्यद्वार से 60 गज की दूरी पर स्थित है। हर एक मकान के सामने एक छोटा बगीचा है। बगीचे में जाने आने के लिए गोलाकार मार्ग बने हैं। हर बगीचे में एक धूपधड़ी और 24 पातगोभी के पौधे हैं। सब मकानों में ऐसी समरूपता है कि एक से दूसरे का भेद करना कठिन है। अत्यन्त प्राचीन होने के कारण उनके स्थापत्य की शैली विचित्र है किन्तु इस कारण उनकी मनोरमता या चित्रोपमता में कोई कमी नहीं आई है। वे अच्छी तरह सिझाए हुए छोटी ईंटों से बने हैं। ईंटों का रंग लाल है; उनके सिरे काले हैं। इसके कारण दीवारें बड़े शतरंज-पटल-सी

दिखाई पड़ती हैं। तिकोने छज्जे आगे की ओर झुके हुए हैं, मुंडेरे ओरी के ऊपर के शेष भावनांश जितने बड़े हैं। खिड़कियां संकरी और गहरी हैं; उनमें छोटे-छोटे शीशे जड़े हैं और कितने ही झरोखे दिखाई पड़ते हैं। छत पर लम्बी और मोड़दार खपरैलों का बाहुल्य है। सारा लकड़ी का काम गहरे रंग में हैं; उनके आस-पास खूब खुदाई हुई है। पर उस खुदाई की शैली में कोई विशेष विविधता नहीं है। वोण्डरवोटीमिटिस के संगतराश केवल दो ही पदार्थों की खुदाई करना जानते थे—एक मेज़घड़ी (टाइमपीस), दूसरा पत्तागोभी। किन्तु इन चीज़ों को वे बहुत अच्छी तरह बनाते थे और जहां भी छेनी चलाने का मौका मिलता था, वहां वे उन्हें विलक्षण चतुराई के साथ उत्कीर्ण करते थे।

बाहर से देखने में ये मकान जैसे एक-से थे, अन्दर से भी उसी प्रकार समान थे। उनमें जो फर्नीचर था वह भी एक ढंग का था। फर्श चतुष्कोण टाइलों से बनी हुई थी; मेज़-कुर्सियां कालेरंग की लकड़ी की बनी थीं; उनके पाए पतले और टेढ़े थे। अंगीठी के ऊपर के आले चौड़े और ऊचे थे; उनके सामने की ओर न केवल—घड़ियां और गोभियां उत्कीर्ण थीं बल्कि असली टाइमपीस भी थी, जो ज़ोरों से टिक-टिक करती थी। यह घड़ी बिल्कुल बीच में ऊंचे पर रखी थी और आले के दोनों? पर एक-एक पातगोभी दिखाई पड़ रही थी। प्रत्येक पातगोभी और घड़ी (टाइमपीस) के बीच एक चीनी की मूर्ति रखी हुई थी। इस चीनी का पेट खूब बड़ा था और उस पेट के बीच

एक बड़ा गोला छेद था जिसके ज़रिए एक जेबघड़ी का मुंह दिखाई पड़ रहा था।

अंगीठियां बड़ी-बड़ी और गहरी थीं और उनकी सलाखें वक्र और भयानक दिखाई पड़ती थीं। उनमें बराबर दीप्त अग्नि जलती रहती थी। आग पर एक बड़ा बर्तन रखा था जिसमें शूकर-मांस तथा अन्य पदार्थ पका करते थे और गृहस्वामिनी उसकी देख-रेख में लगी रहती थी। वह नारी, मोटी वृद्ध महिला है, उसकी आंखें नीली हैं और चेहरा लाल है; लाल-पीली किनारियों से चित्रित बड़ी-सी टोपी लगाए हुए है। उसकी पोशाक नारंगी-रंग की है और गंगाजमनी-सूत एवं ऊन मिलाकर बनाई हुई है। वह पीछे की ओर काफी बड़ी, और कमर के पास पतली है। दूसरी दृष्टियों से भी वह छोटी है क्योंकि उसके पांव की पिंडलियों के मध्य तक ही पहुंचती है। पिंडलियां मोटी हैं; उनके टखने भी वैसे ही हैं, किन्तु उसके पास उनको ढकनेवाले हरे मोज़ों की जोड़ी हैं। गुलाबी चमड़े के जूते अनेक पीले फीतों से इस प्रकार बंधे हैं कि पातगोभी की आकृति बन जाती है। उसके बाएं हाथ में एक छोटी पर भरी डच (जेब) घड़ी है—दाहिने हाथ से वह मांसादि के लिए कड़छी लिए है। उसके बगल में एक मोटी चितकबरी बिल्ली खड़ी है। जिसकी पूंछ से एक चमकती खिलौने की गज़रघड़ी बंधी है जिसे लड़कों ने विनोद के लिए बांध दिया है।

लड़के, जिनकी संख्या तीन है, सबके सब, बगीचे में है और

सुअरों की देखभाल कर रहे हैं। उनमें हर एक दो फ़ुट ऊंचा है। वे तिकोने हैट टोपी जंघों तक का बेंगनी वेस्टकोट, मृगचर्म का घुटन्ना, लाल ऊनी मोज़े, सफेद बक्सुएयुक्त भारी जूते तथा सीप के बटन लगे लम्बे कोट पहिने हुए हैं। हर एक के मुंह में पाइप तथा दाहिने हाथ में छोटी घड़ी है। वह कश लेता और घड़ी देखता है, फिर घड़ी देखता और कश लेता है। सुअर, चर्बीले एवं सुस्त हैं और इस समय पातगोभी के गिरे हुए पत्तों को खा रहे हैं तथा बीच-बीच में उस खेल-घड़ी को पीछे की ओर लात से मार भी देते हैं जो बच्चों ने उनकी पूंछ में भी इसलिए बांध दी है कि वे भी बिल्ली-जैसे ही सुन्दर दिखाई पड़ें।

दरवाज़े के ठीक सामने ऊंची पीठवाली, नीचे से चर्ममण्डित आरामकुर्सी पर, जिसके पांव मुड़े हुए हैं, वृद्ध गृहस्वामी स्वयं बैठे हैं। वह अत्यधिक मोटा तथा नाटा आदमी है; उसकी आंखें बड़ी-बड़ी और गोल हैं, ठुड्ढी दोहरी, बड़ी-सी है। उसकी पोशाक लड़कों की पोशाक-जैसी है और इस विषय में मुझे कुछ ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं मालूम पड़ती। फर्क इतना ही है कि उसका पाइप लड़कों के पाइप से बड़ा है और वह ज़्यादा ज़ोर से कश ले सकता है। उसकी तरह उसके पास भी एक घड़ी है। किन्तु वह उसे अपने जेब में रखे हुए है। सच पूछिए तो उसे घड़ी देखने से ज़्यादा ज़रूरी काम करने हैं; वह काम क्या है; मैं अभी बताऊंगा। वह अपना

दाहिना पांव बाएं घुटने पर रखे हुए बैठा है; उसकी मुद्रा गम्भीर है और मैदान के केन्द्र में स्थित किसी उल्लेखनीय पदार्थ पर कम से कम उसकी एक आंख तो स्थिर रूप से लगी हुई है।

वह पदार्थ नगर-परिषद् (टाउन कौंसिल) के भवन के शिखर पर स्थिर है। टाउन कौंसिल के सदस्य सब छोटे-छोटे गोलमटोल बुद्धिमान आदमी हैं। उनकी आंखें बड़ी-बड़ी और गोल हैं; मोटी दोहरी ठुड्ढी है; उनके कोट कस्बे के सामान्य अधिवासियों की अपेक्षा ज़्यादा लम्बे और जूतों के बक्सुए ज़्यादा बड़े है। कस्बे में मेरे आगमन के बाद से उनकी कई विशेष बैठकें हो चुकी हैं और उनमें तीन महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किए गए हैं :-

1. पुरानी परम्पराओं को बदलना ग़लत है,
2. वोण्डरवोटीमिटिस के बाहर कुछ भी अच्छा नहीं है।
3. हम अपनी घड़ियों और पातगोभियों पर जमे रहेंगे।

परिषद् के विचारकक्ष के ऊपर ही शिखर के अन्दर एक घण्टाघर है, जहां कस्बे का गौरव और चमत्कार, वोण्डरवोटीमिटिस कस्बे की महती घड़ी स्थिर है और सदा स्थित रही है। और जितने भी बूढ़े लोग अपने दरवाज़ों के आगे आरामकुर्सियों पर बैठे हैं उन सबकी आंखें इसी पदार्थ की ओर लगी हुई हैं।

इस महत् घड़ी के सात पहलू हैं जो घण्टाघर की सात दिशाओं से दिखाई देते हैं, इसलिए उसे सब मकानों से सरलतापूर्वक देखा

जा सकता है। घड़ी के मुख के ये सब पहलू काफी बड़े और श्वेत हैं और उनके बीच सुइयां भारी और काली हैं। वहां एक आदमी रहता है जिसका एक मात्र कर्त्तव्य है घड़ी की देखभाल करना। पर यह नौकरी बड़े ही आराम की, लगभग क्रिया रहित है, क्योंकि वोण्डरवोटीमिटिस की इस महत् घड़ी में कभी कोई ख़राबी पैदा होने की बात किसी को मालूम नहीं है। कुछ दिनों पहिले तक तो इसकी कल्पना करना भी नास्तिकता मानी जाती थी। प्राचीन से प्राचीन जिस ज़माने का पुरातत्वज्ञों का पता है, उस ज़माने से बराबर वह नियमित समय पर घण्टा बजाती रहीं है। यही बात गांव की अन्य छोटी-बड़ी घड़ियों के बारे में भी सत्य है। समय ठीक रखने के लिए उससे अच्छा दूसरा स्थान नहीं था। जब (घंटाघर) की बड़ी घड़ी बारह बजे कहना ठीक समझती तो उनकी सभी आज्ञापालक अनुगामिनियां भी उसी के साथ अपने कण्ठ खोल देतीं और प्रतिध्वनि की भांति उसके शब्द दोहरातीं। संक्षेप में, भले और ग्रामवासी न केवल अपने विशिष्ठ भोजन पर आसक्त थे बल्कि अपनी घड़ियों पर भी गर्व करते थे।

जो लोग आरामदेह पदों पर काम करते हैं उनके प्रति लोगों का न्यूनाधिक सम्मान रहता ही है, और चूंकि वोण्डरवोटीमिटिस का घण्टाघरवाला अत्यन्त आरामदेह पद पर है इसलिए वह दुनिया में

सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति भी है। उसके कोट का पुछल्ला बहुत लम्बा है—उसका पाइप, उसके जूते का बक्सुआ,—उसकी आंखें, उसका पेट गांव के किसी भी बूढ़े अधिवासी से बड़े हैं, और जहां तक ठुड्ढी का सवाल है, वह औरों की न केवल दूनी, बल्कि तिगुनी है।

अभी तक हमने वोण्डरवोटीमिटिस की सुखद अवस्था का ही चित्र खींचा है—हाय! ऐसे सुन्दर चित्र को भी अधोगति का अनुभव करना पड़ा।

वहां के सबसे बुद्धिमान अधिवासियों में बहुत दिनों से एक कहावत प्रचलित रहती है—पहाड़ियों के ऊपर से कोई शुभ वस्तु नहीं आ सकती और सचमुच ऐसा मालूम पड़ता है कि इन शब्दों में भविष्यवाणी का कुछ-न-कुछ अंश था। परसों की बात है, दोपहर होने में सिर्फ पांच मिनट बाकी थे कि पहाड़ी की चोटी पर पूर्व की ओर एक अनोखी चीज़ दिखाई पड़ी। ऐसी घटना ने स्वभावतः सबका ध्यान आकर्षित किया और आरामकुर्सियों पर बैठे हर एक वयोवृद्ध व्यक्ति ने भीतिपूर्वक अपनी एक आंख उस पदार्थ की ओर लगा दी किन्तु अब भी वह एक आंख घंटाघर की घड़ी पर ही लगाए रहा।

जब बारह बजने में तीन मिनट रह गया तो वह विचित्र पदार्थ स्पष्टतः एक क्षुद्राकृति विदेशी तरुण मानव के रूप में दिखाई पड़ा। वह बड़ी तेज़ी के साथ पहाड़ियों से नीचे उतर रहा था इसलिए शीघ्र

ही प्रत्येक आदमी ने उसे अच्छी तरह देख लिया। वोण्डरवोटीमिटिस में जितने आदमी कभी देखे गए होंगे, उनमें वह सबसे विचित्र था। उसका चेहरा गहरे सुंघनी रंग का था; उसकी नाक लम्बी, सुग्गे-जैसी थी, आंखें मटर-जैसी छोटी और गोल थीं; मुंह चौड़ा था; सुन्दर दन्तावली थी, जिसे जान पड़ता है, दिखाने को वह बड़ा उत्सुक था क्योंकि बार-बार खीस निपोरता था। मूंछें और गलमुच्छे ऐसे थे कि मुंह का और हिस्सा अच्छी तरह दिखाई ही न पड़ता था। सिर खुला हुआ था और केश भलीभांति संवारे हुए थे। पोशाक में एक चुस्त, दो-पुंछी काला कोट (जिसकी एक जेब से सफेद रूमाल का काफी बड़ा भाग बाहर निकला हुआ दिखाई देता था), काला पश्मीने का बना घुटन्ना, काला रेशमी मोज़ा, काले सैटिन के फीतों के गुच्छों से युक्त ठिगना पंप-जूता था। एक कांख में वह एक बड़ा टोप और दूसरी में अपने कद से कम से कम पांचगुने आकार का बेला (फिडिल) दबाए हुए था। उसके बांए हाथ में स्वर्ण-निर्मित सुंघनी की डिबिया थी, जिससे नीचे उतरते हुए और हर तरह के कदम ज़मीन पर रखते हुए, अत्यधिक आत्म-सन्तोष के भाव से बार-बार सुंघनी निकालकर सूंघता चलता था। ईश्वर रक्षा करें। वोण्डरवोटीमिटिस के गम्भीर ग्रामवासियों की आंखों के सामने यह एक विचित्र दृश्य था।

यदि साफ-साफ कहें तो खीस निपोरने के बावजूद उस आदमी

का चेहरा धृष्ट और कुटिल था, और जब वह चक्कर काटता गांव में घुसा तो उसके जूतों की शक्ल-सूरत ने लोगों में एक प्रकार की शंका पैदा कर दी, और जिन ग्रामवासियों ने उस दिन उसे देखा उनमें से बहुतेरे उस सफ़ेद रूमाल के नीचे झांकने के लिए बहुत कुछ करने को तैयार थे, जो उसके कोट की जेब से बाहर लटक रहा था। किन्तु जिस बात ने उनके अन्दर सबसे अधिक और उचित असन्तोष पैदा किया वह यह थी कि वह बदमाश छैल कभी स्पेनी नृत्य (फैनडैगो) के से पद रखता, कभी लट्टू की तरह चक्कर खाता हुआ चल रहा था परन्तु उसे इसकी ज़रा भी कल्पना न थी कि पद-संचालन में सम रखने-जैसी भी कोई चीज़ होती है।

किन्तु गांव के भले लोगों को पूरी तरह अपनी आंखे खोलने का मौका ही न मिला क्योंकि दोपहर होने, बारह बजने में सिर्फ आध मिनट रह गया था। ठीक इसी समय वह बदमाश उनके बीच कूद पड़ा और बैलेंस करता तथा एक पांव पर नाचता हुआ कबूतर की भांति झपटकर नगरपरिषद के घंटाघर पर चढ़ गया; जहां आश्चर्यचकित घंटावाला स्तंभित मर्यादा के साथ तम्बाकू के कश लगा रहा था। बदमाश ने उसकी नाक पकड़कर इधर-उधर धक्का दिया, फिर अपना बड़ा टोप उसके सिर पर दे मारा; उससे उसकी आंखों एवं मुंह पर आघात किया, और फिर अपनी वह भीमाकार बेला

उठाकर उससे तब तक उसकी अच्छी तरह पिटाई करता रहा कि घंटेवाले के अत्यधिक मोटे होने और बेला या फिडिल के बिल्कुल खोखले होने के कारण ऐसी आवाज़ होने लगी मानो सारंगी-वादक दल के ढोलकिए फुहड़पन के साथ ढोल बजा रहे हों।

पता नहीं, इस अनुचित आक्रमण की क्या प्रतिहिंसात्मक प्रतिक्रिया वहां के अधिवासियों में होती किन्तु अब बारह बजने में आधा सेकेण्ड ही रह गया था; बड़ी घड़ी बजने वाली ही थी और परम्परा के अनुसार सबके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक था कि वे अपनी घड़ियों की तरफ ध्यान रखते। परन्तु यह भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था कि इस समय वह बदमाश घंटाघर की घड़ी के साथ कुछ छेड़छाड़ कर रहा है यद्यपि उसको ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। परन्तु चूंकि इसी सत्य घड़ी घंटा बजाने लगी, किसी को उसके कार्यों की ओर ध्यान देने का मौका न रहा और सब लोग घंटे सुनने में लग गए।

घड़ी ने कहा–एक।

वोण्डरवोटीमिटिस में आराकुर्सियों पर बैठे हर वृद्ध जन ने दोहराया–येक। उसकी अपनी घड़ी ने भी कहा–येक। उसके घर की आलमारी पर रखी घड़ी ने कहा–येक। लड़कों की घड़ियों ने कहा–येक और बिल्लियों एवं शूकरों की पूंछ से बंधी घड़ियों ने भी दोहराया–'येक'।

बड़ी घड़ी आगे चली–'दो।'

और सबने दोहराया–'दू।'

'तीन। चार। पांच। छः।·सात। आठ। नौ। दस।' घड़ी बोलती गई।

'थीन। तार। फांच। शे। ज़ात। ओत। नाव। डस।' दूसरों ने दोहराया।

'ग्यारह।' बड़ी घड़ी बोली।

'गारः।' छोटियों ने स्वीकृति दी।

'बारह।' बड़ी घड़ी ने कहा।

'वाराः।' दूसरों ने, पूर्ण सन्तोष के साथ, अपनी आवाज़ें धीमी करते हुए, उत्तर दिया।

'ठीक वाराः है।' उन सबने कहा और अपनी घड़ियां रख दीं किन्तु बड़ी घड़ी का काम अभी खत्म नहीं हुआ था।

'तेरह।' कहा उसने।

'यह क्या?' नाटे वृद्ध भलेमानुषों ने कहा। उनके चेहरे भय से पीले पड़ गए; तम्बाकू पीने की नलिकाएं (पाइप) उनके मुंह से गिर पड़ी और सबके दाहिने पांव घुटने से हटकर नीचे आ गए।

"यह क्या?" चीखकर बे बोले–'टेरह! टेरह! हे भगवान, यह, यह टेरह बजे हैं!"

और इसके बाद जो भयंकर दृश्य वहीं दिखाई पड़ा, उसे ध्यान

करने से लाभ क्या है? सारा गांव शोरगुल, चीत्कार-उद्गार की शोकजनक स्थिति में डूब गया।

"यह सब क्या हो रहा?" सब लड़के चिल्ला पड़े।

"मेरे खाने का क्या हुआ? वह सब तो नष्ट हो गया है।" गृहणियां चिल्लाईं।

"हमारा पाइप कहां गया?" सब बूढ़े चीख उठे–"आश्चर्य! इस क्षण सब चुक गए।" और उन्होंने बड़े गुस्से के साथ उन्हें फिर से भरा और अपनी आरामकुर्सियों पर पीछे की ओर लेटते हुए उन्होंने इतने ज़ोर के साथ और इतनी तेज़ी से कश लगाने शुरू किए कि सारी घटना अभेद्य धुंए से भर गई।

इस बीच सारी पातगोभियां लाल पड़ गईं और छोटी घड़ियों पर भी मानो बड़ी घड़ी का जादू चल गया। फर्नीचर पर जो घड़ियां खचित थीं, वे मानो जादू के ज़ोर से नाचने लगीं और आलमारियों पर रखी घड़ियां किसी तरह अपना क्रोध शान्त न कर सकीं और इस तरह बार-बार तेरह बजाने लगीं और उनके लंगर या दोलक (पेण्डुलम) इस तरह घूमने और टकराने लगे कि देखने में भी भयानक लगता था। किन्तु इससे भी खराब बात यह हुई कि न तो बिल्लियां और न शूकर अपनी पूंछों में बंधी घड़ियों के इस दुर्व्यवहार को सहन करने में समर्थ थे और वे जगह-जगह

उछल-कूदकर, शोर मचाकर, भौंककर, धक्के देकर, लोगों के अधोवस्त्रों के नीचे दौड़कर ऐसा तहलका मचाने लगे जिसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। इस दृश्य को और वीभत्स बनाने के लिए घंटाघर में घुसा हुआ वह बदमाश बराबर प्रयत्न करता जा रहा था। धुंए के बीच कभी-कभी उसकी झलक मिल जाती थी। वह घंटाघर में वहां के रक्षक, जो पीठ के बल ज़मीन पर लेट गया था, की तोंद पर सवार था और अपने दांतों से घंटे की रस्सी को दबाए सिर से बराबर उसे इधर-उधर हिलाते हुए निरन्तर ऐसी प्रचण्ड ध्वनि पैदा कर रहा था कि कान नहीं दिया जाता था। वह महती बेला उसकी गोद में पड़ी थी जिस पर अपने दोनों हाथों से वह हर तरह के सुर बराबर बजाता जा रहा था।

वहां की ऐसी बुरी हालत देख, खीझकर मैं वहां से चल दिया और अब ठीक समय एवं सुखाद्य के हर प्रेमी से सहायता की अपील कर रहा हूं। आइए, हम सब बांधकर उस गांव को चलें और उस बदमाश को घंटाघर से निकालकर वोण्डरवोटीमिटिस में पुनः प्राचीन परम्परा तथा व्यवस्था की स्थापना कर दें।

लीजिया

"और उसमें एक संकल्प सोया है जो कभी मरता नहीं। संकल्प के रहस्यों को, उसकी शक्ति को कौन जानता है? ईश्वर स्वयं एक महत् संकल्प है जो अपनी एकाग्रता के कारण सब वस्तुओं में समाया हुआ है। मानव देवदूतों, अथवा मृत्यु के प्रति भी पूर्णतः कंधा कभी नहीं डालताः ऐसा वह तभी करता है जब उसका शिथिल संकल्प दुर्बल हो जाता है।"–जोज़ेफ ग्लैनविले।

मुझे यह बिल्कुल याद नहीं है कि कैसे, या ठीक-ठीक कहां, लेडी लीजिया से मेरा प्रथम परिचय हुआ था। तब से लम्बे युग बीत गए हैं। और बहुत कष्ट सहने के कारण मेरी स्मृति दुर्बल पड़ गयी है। या यह भी हो सकता है कि इस समय मैं इन मुद्दों को ध्यान में ले आने में असमर्थ हो गया हूं, क्योंकि मेरी प्रियतमा के चरित्र, उसकी दुर्लभ विज्ञता, उसके अनोखे पर शान्त सौन्दर्य और उसकी उन्मेषकारी एवं मोहक, मृदु, संगीतमयी वाणी ने धीरे-धीरे पर प्रच्छन भाव से इस प्रकार मेरे हृदय में प्रवेश किया और मार्ग बनाया था कि मुझे कुछ पता ही न चल पाया था। हां, मुझे इतना विश्वास ज़रूर है कि मैं उससे राइन के पास के किसी बड़े, पुराने एवं क्षयशील नगर में मिला था। उसके परिवार के विषय में उसी के मुंह से मैंने सुना है और इसपर अविश्वास नहीं किया जा सकता कि वह पुराने ज़माने से चला आ रहा है। लीजिया! ऐसे अध्ययन में तल्लीन होने के कारण, जिसने दुनिया की सब बाहरी छापों को धुंधला कर दिया है, केवल इसी मधुर शब्द–लीजिया–से मैं कल्पना में अपनी आंखों के सामने उसकी प्रतिमा खड़ी कर पाता हूं, जो अब जीवित नहीं है। और इस समय जब मैं यह लिख रहा हूं, एकाएक बात मुझे याद आ जाती है, कि, जो मेरी सखी और मंगेतर थी, जो अध्ययन में मेरी सहभागिनी बनी और बाद में मेरी प्राणप्रिया पत्नी हुई, उसका पैतृक नाम तो मैं कभी जान ही नहीं पाया। यह लीजिया पर चालाकी से उसे छिपाने का अभियोग है, या मेरे प्रेम की गहराई कि मैंने इस विषय पर जानने-पूछने की कभी कोशिश ही नहीं की? या फिर अपनी सनक थी–अत्यन्त भावोद्वेगमयी भक्ति के मन्दिर में एक भावुकताभरी भेंट? स्वयं इस तथ्य की धुंधली-सी याद मुझे आ रही है; तब इसमें आश्चर्य की क्या बात

है कि मैं उन परिस्थितियों को बिल्कुल भूल गया होऊं जिनमें हमारे इस प्रेम का जन्म हुआ था? और यदि कभी उस भावना ने, जिसका नाम रोमांस है, प्रणय स्वच्छन्दता है, या जैसा वे कहते हैं मूर्तिपूजक मिश्र की वह अज्ञात, धूम्रपंखी आस्तोफेत देवी ने, जो अशुभ विवाहों का अधिनायकत्व करती है, कभी वैसा किया हो तो निश्चय ही मेरे विवाह पर उसने अपनी छाया प्रसारित की होगी।

परन्तु एक प्यारा विषय, ज़रूर है जिस पर मेरी स्मृति मुझे धोखा नहीं देती अर्थात् लीजिया की देहयष्टि, उसकी रूपाकृति। कद में वह लम्बी थी, तन्वंगी थी और अन्तिम दिनों में तो सूख भी गई थी। उसकी महिमा का, उसके चेहरे-मोहरे की शान्त सरलता का, या उसके पद संभार के अचिन्त्य हलकेपन और मृदुलता का चित्रण करने का मेरा प्रयास व्यर्थ है। वह एक छाया कि भांति आती थी और चली जाती थी। अपने बन्द अध्ययन-कक्ष में उसके आगमन का ज्ञान मुझे तभी होता था जब वह मेरे कंधे पर अपने नाज़ुक हाथ रखकर अपनी क्षीण मधुर वाणी में कुछ गा उठती थी। मुख के सौन्दर्य से कोई कुमारिका उसकी बराबरी नहीं कर सकतीः–अफीम की स्वप्नाभा-सा एक काल्पनिक, प्राणोन्मादकारी दृश्य, जो इन्द्रलोक की कन्यायों के निद्रित प्राणों के चतुर्दिक छाए छायाचित्रों से भी अधिक दिव्य है। फिर भी उसका चेहरा-मोहरा उस नियमित सांचे

में ढला हुआ नहीं था, काफिरों या मूर्तिपूजकों के प्राचीन साहित्य में भ्रमवश जिसकी पूजा करने की शिक्षा दी गई है। बेकन ने सभी प्रकार के सौन्दर्य के बारे में लिखते हुए ठीक ही लिखा है–कोई ऐसा असाधारण सौन्दर्य नहीं होता जिसके अनुपातों में कोई विचित्रता न हो। मैं देखता था कि यद्यपिं लीजिया के नाक-नक्श में प्राचीन शास्त्रीय नियमितताएं नहीं है, यद्यपि मैं देखता था कि उसकी सुन्दरता सचमुच असाधरण है, और अनुभव करता था कि उसमें विचित्रता भी समाई हुई है, फिर भी मैं अनियमितता ढूंढ़ने या विचित्र की अपनी कल्पना बनाने में सदा असफल रहा। मैंने उसके उच्च, पीतवर्ण ललाट की परीक्षा की और उसे निर्दोष पाया। ऐसी दिव्य महिला के लिए ऐसे शब्द का प्रयोग कैसा रूखा, प्राणहीन, लगता है। उसकी चमड़ी विशुद्धतम हाथी दांत की बराबरी करती थी; उस (मुख) का उन्नत विस्तार एवं शान्ति, कर्णपटी के ऊपर के प्रदेशों का मधुर उभार, फिर काले, चमकीले, घने एवं प्राकृतिक रूप से घुंघराले, रेशमी-सी लहराती केशराशि। मैंने नाक की नाज़ुक रेखाओं की ओर देखा तो मालूम हुआ कि यहूदियों के सुन्दर पदकों के अतिरिक्त और कहीं मैंने पूर्णता के दर्शन नहीं किए हैं। चर्मतल की वही समृद्ध चिकनाई, वही सुग्गे-सी शान्त उठान वही मुक्त भाव व्यक्त करने वाले सामंजस्यपूर्वक मुड़े हुए नथने। मैंने उसके मधुर

मुख की ओर देखा। यहां तो सम्पूर्ण स्वर्गिक पदार्थों की विजय थी–लघु ओष्ठ की भव्य मोड़, अधर की कोमल, कामनाबहुल तन्द्रा–कपोलकूप की क्रीड़ा एवं रंग की वाणी–दंतपंक्तियों की चमत्कृत करने वाली दीप्ति, उसकी शान्त, मृदु फिर भी उल्लसित प्रकाश से पूर्ण मुस्कान की दंतावली पर पड़नेवाली पवित्र किरणें। मैंने चिबुक की रचना पर ध्यान दिया। वहां भी चौड़ाई की वही सुष्ठुता, महिमा की वही मृदुता, आध्यात्मिकता की वही पूर्णता पाई जो यूनानी सूर्यदेवता (अपोलो) की मुखाकृति में दिखाई पड़ती है। इसके बाद मैंने लीजिया के आयत लोचनों की ओर झांककर देखा।

उसकी आंखों के लिए सुदूर प्राचीन में हमें कोई नमूना नहीं मिलता। वे हमारी जाति की सामान्य आंखों की अपेक्षा बहुत बड़ी थीं। वे नोर्जहड की घाटी में रहने वाले फिर्के के मृगनयनों से कहीं अधिक पूर्ण थीं। फिर भी बीच-बीच में, केवल अत्यन्त उत्तेजना या उत्कण्ठा के क्षणों में ही, लीजिया की इस विशेषता का पता चलता था। और ऐसे क्षणों में उसका सौन्दर्य–शायद मेरी उत्ताप्त कल्पना में ऐसा लगता रहा हो–ऐसे प्राणियों का सौन्दर्य मालूम पड़ता था जो धरती के ऊपर के या उसके प्राणियों से भिन्न हों–तुर्कों की पौराणिक हाउरी के समान। पुतलियां चमकीली और काली थीं और

1. माण्टेक्यू–प्रसिद्ध विचारक और लेखक

उन पर गहरे काले रंग की लम्बी बरौनियां फैली हुई थीं। कुटिल, वक्र भवें भी उसी रंग की थीं। उन आंखों में जो विचित्रता मैंने पाई वह उनकी गढ़न या रंग या दीप्ति से अलग ही थी और *अभिव्यक्ति* से सम्बद्ध थी। परन्तु अभिव्यक्ति शब्द भी अर्थहीन-सा जान पड़ता है क्योंकि उसकी ध्वनि में आध्यात्मिक के प्रति न जाने कितना अज्ञान छिपा है लीजिया की आंखों की अभिव्यक्ति! मैंने न जाने कितने घंटे उस पर विचार करते बिता दिए होंगे। मध्य ग्रीष्म की एक पूरी रात मैंने उसकी गहराई का पता लगाने में बिता दी थी। वह क्या बात थी जिसमें डेमोक्रिप्स के कूप से अधिक गहराई थी और जो मेरी प्रियतमा की पुतलियों के अन्दर छिपी थी? क्या था वह? उस रात मुझ पर इसे जानने का भूत सवार हो गया था। वे आंखें! वे बड़ी-बड़ी, वे दीप्तमयी, वे दैवी आंखें! वे मेरे लिए लीडा की दो तारिकाओं के समान बन गईं और मैं उनका परमभक्त ज्योतिषी-सा बन गया। रात-दिन एक क्षण के लिए भी उनकी चितवन का अगम्य अर्थ मेरी आत्मा से दूर नहीं हुआ।

मनोविज्ञान के अनेक अचिन्त्य विरोधाभासों में इससे अधिक उद्वेकजनक दूसरी बात नहीं है–और जिस पर स्कूलों में कोई ध्यान नहीं दिया जाता–कि जो बात बहुत दिन पहले भूली जा चुकी है, उसको जब हम याद करने की कोशिश करते हैं तो वह स्मृति की

पकड़ में आती-सी, उसके छोर पर उचित होती-सी मालूम पड़ती है किन्तु अन्त में याद आने से रह जाती है। इस प्रकार अनेक बार लीजिया की आंखों की गहरी छानबीन करते हुए मुझे अनुभव हुआ है कि उनकी अभिव्यक्ति के रहस्य के पूर्णज्ञान तक मैं पहुंच रहा हूं किन्तु वह ज्ञान अपना हो नहीं पाया और अन्त में मेरी पकड़ से दूर चला गया है। और सब में विचित्रतम रहस्य तो यह है कि मैंने जगत् के सामान्य से सामान्य पदार्थ में उस अभिव्यक्ति की वृतरेखा के दर्शन किए हैं। मेरे कथन का तात्पर्य यह है कि जब लीजिया का सौन्दर्य मेरे प्राणों में, मेरी आत्मा में इस प्रकार समा गया जैसे वह किसी मन्दिर में प्रतिष्ठत हो, तो भौतिक विश्व के अनेक पदार्थों के प्रति मुझे उसी भावना की अनुभूति होने लगी जो उसी बड़ी-बड़ी और प्रकाश-मान आंखों को देखकर मेरे अन्दर होती थी। तेज़ी से बढ़ती हुई द्राक्षालता देखते हुए या किसी पंतग, तितली और जलधारा को देखकर वह भावना अकस्मात मेरे अन्दर जगमगा उठी है। मैंने सागर और टूटकर गिरते हुए तारे में उसका अनुभव किया है। मैंने अतिवृद्धजनों की चितवनों में उसके दर्शन किए हैं। आकाश-दर्शन में दो-एक तारिकाओं का निरीक्षण करते समय मैंने उसका अनुभव किया है। तंत्रवाद्यों की कुछ ध्वनियों को सुनकर तथा पुस्तकों के कुछ वाक्यों को पढ़ते हुए मैं उससे भर गया हूं। अन्य

असंख्य उदाहरणों में से मुझे जोजेफ ग्लैनविल की किसी पुस्तक के शब्द याद आ रहे हैं जिन्होंने मेरे अन्दर सदा ही वह भावना पैदा की है:–"और उसमें एक संकल्प सोया है जो कभी मरता नहीं। संकल्प के रहस्यों को, उसकी शक्ति को कोने जानता है? ईश्वर स्वयं एक महत संकल्प है जो अपनी एकाग्रता के कारण सब वस्तुओं में समाया हुआ है। मानव देवदूतों, अथवा मृत्यु के प्रति भी, पूर्णतः "कन्धा कभी नहीं डालता; ऐसा वह तभी करता है जब उसका शिथिल संकल्प दुर्बल हो जाता है।"

लम्बे युगों, और उनके बाद के चिन्तन ने मुझे इस पुराने अंग्रेज़ नीतिवादी और लीजिया के चरित्रांश के बीच एक दूरागत सम्बन्ध खोज निकालने में समर्थ किया है। सम्भवतः उसके अन्दर विचार, कार्य एवं वाणी की एक *सघनता* थी, जो ऐसी महती इच्छा शक्ति का परिणाम वा संकेत थी, जिसने हमारे लम्बे सम्पर्क के बीच अपने अस्तित्व का दूसरा और स्पष्ट प्रमाण उपस्थित करने में सफ़लता नहीं पाई। जितनी भी स्त्रियों का ज्ञान मुझे आज तक हुआ है उनमें से बाहर से शांत एवं चिर-अचंचल लीजिया कठोर लालसा के तूफ़ानी गिद्धों की बहुत बुरी तरह शिकार थी। उस लालसा का कोई अन्दाज़ मैं नहीं कर पाता था; केवल उन आंखों के जादुई प्रसार से उसका कुछ संकेत मिलता था जो एक साथ ही मुझे प्रमुदित

और भीत कर देती थीं। इसी प्रकार उसकी अत्यन्त क्षीण वाणी के ऐन्द्रजालिक राग, आरोह-अवरोह, विशिष्टता एवं अनुद्विग्नता से या उसके मुंह से निकले शब्दों की उस प्रचण्ड ऊर्जा से उसका कुछ आभास मिलता था, जो अपने कहने के प्रतिकूल ढंग के कारण दुगना प्रभाव उत्पन्न करती थी।

मैंने लीजिया के पाण्डित्य के बारे में भी कहा है: वह अगाध था,–ऐसा जिसे मैंने औरतों में कहीं नहीं सुना। प्राचीन भाषाओं में वह बहुत विज्ञ थी, और जहां तक यूरोप की आधुनिक बोलियों का ज्ञान मुझे है, मैंने उनमें उसे कभी गलती करते नहीं पाया। कितना ही प्रशंसनीय विषय हो और इस कारण वह चाहे कितना ही दुर्बोध हो, उस पर बिना कोई गलती किए वह बोल सकती थी। कैसी विलक्षणता और भावविह्वलता के साथ, मेरी पत्नी के स्वभाव की यह बात, इतने दिनों बाद भी मेरे ध्यान में आ रही है। मैंने कहा कि उसका ज्ञान ऐसा था, जैसा मैंने स्त्रियों में कहीं नहीं सुना। ऐसा मनुष्य कहां जीवित है, जो उसकी तरह, नैतिक, प्राकृतिक तथा गणितीय विज्ञानों के सम्पूर्ण क्षेत्र को सफ़लतापूर्वक पार कर गया हो? मैं उस समय तो देख नहीं पाया था परन्तु आज स्पष्ट देख रहा हूं कि लीजिया का ज्ञान विराट था, विस्मयकारी था। परन्तु हमारे विवाह के प्रारम्भिक वर्षों में भी उसकी असीम श्रेष्ठता का इतना ज्ञान मुझे

था कि मैं शिशु के विश्वास के साथ, अपने को उसके हाथ में छोड़ देता था और वह आध्यात्मिक शोध के जटिल विश्व में, जिसमें मैं उन दिनों उलझा हुआ था, मेरा पथ-प्रदर्शन करती थी। बहुत कम लोग इन दुर्बोध विषयों के अध्ययन में पड़ते थे और उनका ज्ञान भी लोगों को बहुत कम था परन्तु जब वह मेरे अध्ययन में मेरे ऊपर झुकी हुई मेरा मार्ग दर्शन करती थी तो कैसी विजय-भावना, कैसे गहरे आनन्द, तथा कैसी दिव्य आशा की अनुभूति होती थी और मेरी आंखों के आगे धीरे-धीरे परन्तु निश्चित परिमाण में ऐसा सुन्दर दृश्य-पटल उघड़ता चला जाता था जिसके भव्य और अब जब अगम मार्ग से चलते हुए मैं विवेक के दैवी एवं दुर्लभ लक्ष्य तक पहुंच सकता था।

इसी से समझा जा सकता है कि जब मैंने कुछ वर्षों के बाद अपनी बद्धमूल आशाओं को पंख उगते और फिर दूर उड़ जाते देखा तो मेरी वेदना कैसी तीखी, कैसी अगम होगी। लीजिया के बिना मेरी हालत अन्धकार में टटोलते शिशु की भांति हो गई। जिस इन्द्रियातीत, परम ज्ञान की शोध में हम तल्लीन थे उनके रहस्य उसकी उपस्थिति और उसके पढ़ने मात्र से प्रकाशित हो उठते थे। झिलमिलाते हुए और स्वर्णिम अक्षर शनिश्चरी गति की अपेक्षा भी अधिक निष्क्रिय लगने लगते थे, मानो उसकी आंखों की उज्ज्वल

दीप्ति की आवश्यकता अनुभव कर रहे हों। फिर जिन पृष्ठों के पढ़ने में मैं लगा था उन पर आंखों का प्रकाश कम पड़ने लगा। लीजिया बीमार पड़ गई। उसकी विलक्षण आंखों में अत्यधिक दीप्ति आ गई; पीली उंगलियों पर क़ब्र का पारदर्शक मोमी रंग छा गया और उसके उन्नत भाल की नीली शिराएं अत्यन्त मृंदु मनोभावों के उतार-चढ़ाव में प्रचण्ड वेग से उभरने और बैठने लगीं। मैं समझ गया कि वह मर जायगी–तब मैं जी-जान लड़ाकर मृत्यु से लोहा लेने लगा, और मुझे आश्चर्य हुआ कि मृत्यु के साथ संघर्ष करने में मेरी प्रेममई पत्नी मुझसे भी आगे है। उसके दृढ़ स्वभाव में बहुत-कुछ ऐसा था जिससे मुझे विश्वास हो गया था कि मृत्यु उसके पास अपनी समस्त विभीषिकाएं छोड़कर आएगी, किन्तु वैसा नहीं हुआ। उस काली छाया (मृत्यु) से जिस भीषणता के साथ वह लड़ी, उसे शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता। मैं उस करुण दृश्य पर छटपटाता रह गया। मैं उसे सान्त्वना देता, उसे समझाता किन्तु जीवन की जो प्रबल प्यास उसमें थी, जीने की, केवल जीने की, उसे देखते हुए सांत्वना देना या तर्क करना मुझे बिलकुल गलत मालूम पड़ा। फिर भी, भयानक यंत्रणाओं से जूझते हुए भी उसके चेहरे-मोहरे की बाहरी शान्ति में ज़रा भी कमी नहीं आ पाई, बल्कि उसकी वाणी और मृदु, और धीमी, होती गई। किन्तु तब भी मैंने धीरे से कहे हुए उन शब्दों के

भयानक अर्थ पर विचार नहीं किया। उस मानवेतर राग या संगीत-प्रवाह को मोहित-भाव से सुनते हुए मेरा मस्तिष्क चक्कर खाने लगा था।

इसमें तो मुझे कभी कोई सन्देह था ही नहीं कि वह मुझे प्यार करती थी, और इस बात को भी मैं सरल-भाव से जान सकता था कि उसके समान हृदय में प्रेम की प्रभुता कोई सामान्य भावना की प्रभुता नहीं हो सकती थी। किन्तु केवल मृत्यु में ही मैं जान सका कि उसकी प्रीति में कैसी शक्ति थी। घंटों वह मेरा हाथ अपने हाथ में लिए एक ऐसे हृदय के उद्गार प्रकट करती जाती, जिसकी प्रबल भक्ति मूर्तिपूजा के समक्ष हो उठी थी। ऐसे आत्मस्वीकृतियों के योग्य मैं कहां था? और जब वह मुझपर वह मंगल की वर्षा कर रही थी तब उस कृत्य के बीच में ही मेरी प्रियतमा का उठ जाना ही क्या मेरे भाग्य में लिखा था? क्या मैं इसी के योग्य था? किन्तु इस विषय पर अधिक कुछ कहना मेरी सहनशक्ति के बाहर है। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि लीजिया के स्त्रियोचित से भी अधिक प्रेमोत्सर्ग में–जिसके मैं सर्वथा अयोग्य था, और जो मुझपर व्यर्थ ही व्यय किया गया–मैं उसकी जीवन की सच्ची और प्रचण्ड कामना के सिद्धान्त को पहिचान सका था–उस जीवन की कामना, जो इस तेज़ी के साथ दूर भागा जा रहा था। इस प्रचण्ड कामना

को–जीने की इच्छा की उत्कण्ठापूर्ण प्रबलता को–चित्रित करने की शक्ति मुझ में नहीं है कि मैं उसकी उन्मत्त, लगभग आदर्शान्वित प्रवृत्ति को उस महती छाया (मृत्यु) की शक्ति, भीति और महिमा से भयानक संघर्ष करते फिर देख रहा हूं। परन्तु वह मिट गई। उसका महत् संकल्प और अधिक कठोर शक्ति के सामने पराजित हो गया। और उसकी लाश की ओर देखते हुए मैं जोज़ेफ ग्लैनविक के अनोखे वाक्य के बारे में सोच रहा थाः–"और उसमें एक संकल्प सोया है, जो कभी मरता नहीं। संकल्प के रहस्यों को, उसकी शक्ति को कौन जानता है? ईश्वर स्वयं एक महत् संकल्प है जो अपनी एकाग्रता के कारण सब वस्तुओं में समाया हुआ है। मानव, देवदूतों अथवा मृत्यु के प्रति भी, पूर्णतः कंधा कभी नहीं डालता। ऐसा वह तभी करता है जब उसका शिथिल संकल्प दुर्बल हो जाता है।"

वह मर गई–और शोक से धूल में कुचला हुआ मैं, राइन के पास के उस धुंधले एवं ह्रासोन्मुख नगर की अपने निवास-स्थान की एकांत निर्जनता को अब सहन नहीं कर सका। मेरे पास उस चीज़ का अभाव नहीं था जिसे दुनिया दौलत कहती है। लीजिया अपने साथ उससे कहीं ज़्यादा, बहुत ही अधिक, दौलत लाई थी जितनी सामान्यतः मानव के भाग्य में लिखी होती है। इस लिए थकानभरे

एवं निरुद्देश्य प्रवास के चन्द महीनों के बाद, मैंने इंग्लैण्ड के वनांचल के ऐसे स्थान में, जहां मनुष्यों का आवागमन बहुत ही कम था, एक मठ-भवन खरीद लिया और उसकी मरम्मत कराई। उस इमारत की धूमिल एवं निर्जन विशालता, उस क्षेत्र की जंगली भीषणता तथा दोनों से सम्बद्ध अनेक करुण एवं परम्परागत स्मृतियां मेरे उस सब कुछ भाग्य-भरोसे छोड़ देने की भावना के सर्वथा अनुकूल थीं जिसके कारण मैं इस सुदूर एवं असामाजिक प्रान्त में आने को विवश हुआ था। यद्यपि इस भवन से बाह्यतः हरित ह्रास की छाया लिपटी हुई थी और मैंने उसमें बहुत कम फेर-फार कराया था किन्तु बच्चों की सी विकृति के साथ इस हल्की आशा से मैंने उसे अन्दर शाही शान-शौकत से सजाया कि शायद उसी में मैं अपने संताप को भूल सकूंगा। मैंने अपने बाल्यकाल में भी ऐसी गलतियों का स्वाद लिया था, और अब दुःख में मेरी बुद्धि के सठिया जाने पर वे पुनः लौट आई थीं। मैं अनुभव कर रहा हूं कि उन क़ीमती और शानदार पर्दों तथा सज्जावस्त्रों में, भव्य मिश्री तक्षणों में, विलक्षण फर्नीचर में गुच्छित स्वर्ण की बेडलमी कालीनों में प्रारम्भिक पागलपन तक की रेखाएं खोजी जा सकती थीं। मैं अफीम का पक्का गुलाम बन गया था और मेरे कार्य तथा आदेश सब मेरे स्वप्नों के रंग में रंग गए थे किन्तु मैं उन वाहियात बातों की विस्तार

से चर्चा करना नहीं चाहता। हां, मैं उस कमरे की–सतत शापग्रस्त करने की बात अवश्य कहना चाहूंगा जहां अविस्मरणीय लीजिया की उत्तराधिकारिणी रूप में विवाह-वेदी से त्रिमेन की लेडी रावेना त्रिवेनियम को मैं अपनी पत्नी बनाकर ले गया था।

उस परिणय-कक्ष के स्थापत्य एवं सज्जा की एक भी बात ऐसी नहीं है जो इस समय मेरी आंखों में न फिर रही हो। वधू के दृप्त परिवार के वे प्राणी कहां थे जिन्होंने स्वर्ण की पिपासा के कारण ऐसी कुमारिका और प्यारी कन्या को ऐसे सजे कक्ष में जाने की अनुमति दी? मैंने ऊपर कहा है कि मुझे कमरे का राई-रत्ती ब्यौरा याद है–यद्यपि गम्भीर महत्त्व के विषय मुझे विस्मृत हैं–पर जहां तक मुझे याद है उस सज्जा एवं प्रदर्शन में कोई क्रम, कोई व्यवस्था नहीं थी। यह कमरा दुर्गाकार भवन के एक उच्च शिखर पर स्थित था, काफी बड़ा पंचकुनिया था। इस पंचकोण कक्ष के सम्पूर्ण दक्षिण पक्ष में फैला एक वृहत् वातायन था जिसमें वेनिस से मंगाकर शीशे की एक अखण्ड चादर लगवाई गई थी–एक ही शीशा, जिसका रंग सीसे-जैसा था। उसके इस रंग के कारण सूर्य या चंद्र की किरणें अन्दर की चीज़ों पर पैशाचिक आभा डालती थीं। इस महत् वातायन के ऊर्ध्व भाग में कंगूरे की मोटी दीवारों से लिपटकर फैली सोमलता का जालीदार काम था। उदासदर्शन बलूत की लकड़ियों की छत बहुत

ऊंची थी और उसमें अर्द्ध-गाथिक शैली की सूक्ष्म नक्काशी की गई थी। बीच में बड़ी-बड़ी कड़ियों से बनी सोने की एक सांकल के सहारे सोने का एक वृहदाकार धूपपात्र लटक रहा था, जिसके छिद्रों से निरन्तर रंगीन लपटें निकलती रहती थीं–लपटें जिन्हें देखकर लगता था कि उसमें सर्प की जीवन-शक्ति है। प्राच्यं मूर्तियों के रूप में निर्मित उस्मानी एवं स्वर्णिम शमादान जहां-तहां लटक रहे थे। कक्ष में भारतीय शैली का एक वैवाहिक पलंग था जो नीचे पाए का था और ठोस आबनूस को तराशकर बनाया गया था, तथा जिसके ऊपर एक मण्डप था। कक्ष के हर कोने में काले बिल्लौर के बने भीमाकार सैक्रोफेगस खड़े थे। ये लुक्सर की राजकीय समाधियों से लाए गए थे। उनके ढक्कनों पर अत्यन्त प्राचीन भास्कर्यकला का अंकन था। किन्तु कक्ष की परिधान सज्जा सबसे अधिक मायिक थी। अत्यधिक ऊंची दीवारें, ऊपर से नीचे तक, भारी एवं मोटी चित्रयवनिकाओं से ढकी हुई थीं। फर्श की कालीन, आबनूसी पलंग की चादर, पलंग का मण्डप तथा वातायन को अशंतः ढकनेवाली चादरों का अलंकरण सब उन्हीं चित्रयवनिकाओं के रंग-ढंग का था और एक ही पदार्थ से बना हुआ था। यह पदार्थ स्वर्ण-निर्मित बहुमूल्य वस्त्र था। इन वस्त्रों के ऊपर आसमान दूरी पर लगभग एक-एक फुट व्यास की घोर काली चित्र-विचित्र शक्लें कढ़ी हुई थीं

किन्तु ये शक्लें तभी अपने असली चित्र-विचित्र रूप में दिखाई पड़ती थीं जब एक विशेष बिन्दु से देखी जाती थीं। एक पुरानी तरकीब से, जो अब आम हो गई हैं, वे अपने रूप और पहलू बदल देती थीं। जब कोई कमरे में प्रवेश करता था तो वे उसे दानवी आकृतियों के रूप में दिखाई देती थीं किन्तु जब वह आगे बढ़ जाता था तो उनका वह रूप अकस्मात् विलुप्त हो जाता था और ज्यों-ज्यों आगन्तुक एक-एक पग कक्ष के आगे बढ़ता था वह अपने को भयंकर मूर्तियों की असमाप्य पंक्तियों से घिरा पाता था। और इन पर्दों के पीछे से वायु का जो अविराम प्रबल प्रवाह कृत्रिम ढंग से छोड़ा जाता था उससे ऐन्द्रजालिक प्रभाव और भी बढ़ जाता था क्योंकि इससे वे सब मूर्तियां भीषण रूप वाली एवं चंचल चैतन्य से भरी–जीवित सी–दिखाई पड़ने लगती थीं।

ऐसे हालों में–ऐसे परिणयकक्ष में–मैंने अपने विवाह के प्रथम मास के दूषित घंटे त्रिमेन की उस महिला के साथ बिताए, किंचित् अशान्ति के साथ बिताए। मेरी पत्नी मेरे स्वभाव के भयानक सनकीपन से डरती है, वह मुझसे किनारा करती है, कुछ ज़्यादा प्यार नहीं करती, यह सब मुझसे छिपा नहीं रहा, किन्तु इससे कुछ और परिणाम की जगह मुझे खुशी ही हुई। मैं ऐसी घृणा के साथ उससे विरक्ति प्रकट करता था जो मानव की नहीं दानव की चीज़ है।

पछतावे की किस गहराई के साथ मेरी स्मृति वापिस लीजिया की ओर, प्रियतमा, सुन्दरी और समाधिस्थ लीजिया की ओर दौड़ती थी। मैं उसकी पवित्रता, उसकी प्रज्ञा, उसके उच्च स्वर्गीय स्वभाव, उसके प्रबल बल्कि मूर्तिपूजक प्रेम की स्मृतियों में प्रमुदित रहता था। तब उसकी सम्पूर्ण ज्वाला के साथ मेरी अन्तर्प्रेरणा जल उठती थी। अफीम की अपनी पिनकों में (क्योंकि मैं इस मादक [illegible] की बेड़ियों से स्वभावतः जकड़ा जा चुका था) रात के मौन [illegible] ज़ोर से उसका नाम लेकर पुकारता था; दिन में कन्दरा के परिरक्षित एकान्त में भी मैं ऐसा ही करता था, मानो उस तीव्र उत्कण्ठा, गम्भीर अनुरक्ति और वियुक्ति लीजिया के प्रति अपनी कामना के दाहक उत्ताप से मैं उसे पुनः संसार के उस मार्ग पर लाकर खड़ा कर दूंगा जिसे छोड़कर वह चली गई है।

विवाह के दूसरे महीने के आरम्भ के आस-पास की बात है कि लेडी रावेना पर किसी आकस्मिक बीमारी का आक्रमण हुआ। उसके स्वास्थ्यलाभ की गति बहुत धीमी थी। जिस ज्वर में वह घुल रही थी उसके कारण रात में बेचैनी बहुत बढ़ जाती थी, और अर्द्ध-सुषुप्ति की अशान्त अवस्था में वह शिखर के उस कमरे के अन्दर और आसपास ऐसी ध्वनियों एवं पदगतियों की बात करती थी जिनका उद्गम उसकी कल्पना के अतिरिक्त और कहीं नहीं था; या सम्भव

है, खुद कमरे के ऐन्द्रजालिक प्रभावों के कारण उसे ऐसा अनुभव हुआ हो। धीरे-धीरे वह स्वस्थ्य होने लगी और अन्त में बिल्कुल ठीक हो गई किन्तु थोड़ा ही समय बीता था कि बीमारी का दूसरा और भयानक आक्रमण उस पर हुआ जिसने उसे वेदना की शय्या पर लिटा दिया। इस बार की बीमारी से उसकी काया, जो यों ही दुबली थी, सदा के लिए टूट गई और फिर कभी नहीं पनपी। यह बीमारी बड़ी चिन्ताजनक थी और डाक्टरों के श्रम एवं ज्ञान का उस पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। बीमारी पुरानी हो गयी थी और बढ़ती जा रही थी। देखने से तो यही मालूम पड़ता था कि उसने उसमें ऐसी जड़ जमा ली है कि मानवीय उपायों से दूर नहीं की जा सकती। मैं यह भी देख रहा था कि बीमारी के साथ-साथ उनके स्वभाव में स्नायविक खीझ और उत्तेजना की मात्रा भी उसी परिणाम में बढ़ती जाती है। अब वह भय की ज़रा-ज़रा सी बात से उत्तेजित हो जाती थी। मालूम पड़ता था कि उसके अन्दर का विवेक तेज़ी से लुप्त होता जा रहा है। अब फिर बल्कि बार-बार और दृढ़तापूर्वक वह पर्दों के अन्दर से आती उन ध्वनियों, मृदु ध्वनियों और असाधारण पदचाप की बात करने लगी जो एकाध बार पहिली बीमारी में कर चुकी थी।

सितम्बर का महीना ख़त्म हो रहा था, अब एक रात को उसने

बड़ा ज़ोर देते हुए इस विषय पर ध्यान आकर्षित किया। अशान्त निद्रा से अभी-अभी उसकी आंख खुली थी; उस समय कुछ चिन्ता और कुछ एक शय की भावना के साथ उसके कृशित मुख की ओर देख रहा था। मैं उसके आबनूसी पलंग के पास ही भारत की बनी एक गद्देदार मचिया पर बैठा था। वह किंचित उठंगकर बैंठ गई और फुसफुसाते हुए बड़े विश्वास से कहा कि अभी-अभी मैंने वह आवाज़ सुनी है और किसी को चलते-फिरते देखा है पर मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ी, न मैंने किसी को वहां देखा। हां, पर्दों के पीछे हवा तेज़ी से चल रही थी और (यद्यपि मैं स्वीकार करता हूं कि जो कुछ मैंने उससे कहा उसमें खुद मुझे विश्वास नहीं था, फिर भी) मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि वे क्षीण ध्वनियां और दीवार की शक्लों में परिवर्तन हवा के झोंकों के परिणाम मात्र हैं किन्तु जो सांघातिक पीलापन उसके चेहरे पर फैलता जा रहा था उसने मुझे प्रमाणित कर दिया कि उसे यह सब समझाकर शान्त करने का मेरा प्रयत्न निरर्थक है। मुझे लगा कि वह मूर्च्छित होती जा रही है। आस-पास कोई ख़िदमतगार भी नहीं था। मुझे याद आ गया कि हलकी मदिरा की वह सुराई कमरे में रखी है जो उसके चिकित्सकों के आदेश पर मंगवाई गई थी और मैं जल्दी-से कमरे की दूसरी ओर उसे लेने गया। किन्तु ज्योंही मैं सिर पर

झूलते हुए धूपदान की रोशनी के नीचे पहुंचा, दो विस्मयकारी बातों ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। मुझे मालूम पड़ा कि कोई स्पष्ट चीज़ धीरे-से मेरे पास से गुज़री है और धूपदान से निकलती गहरी दीप्ति के बीच मैंने देखा कि स्वर्णिम कालीन के ऊपर एक धुंधली अस्पष्ट-सी छाया फैली हुई है। किन्तु उस समय मैं अफीम की काफी बड़ी मात्रा ग्रहण करने के कारण उत्तेजित मनोदशा में था इसलिए इन बातों पर विशेष ध्यान न दे सका, न उनके बारे में रावेना से ही कुछ कहा। आगे बढ़ गया, मदिरा लेकर लौटा और उसे मधुपात्र में उड़ेलकर, मूर्छित होती हुई महिला के मुंह से लगा दिया। अब तक वह कुछ-कुछ होश में आ गई थी इसलिए उसने पात्र स्वयं हाथ में ले लिया; मैं अपने पास की गद्दीदार मचिया पर बैठ गया और मेरी आंखें उसके मुख पर पड़ गई। इसी समय मुझे पलंग के पास, कालीन पर किसी के पैरों की मृदु चाप स्पष्ट सुनाई पड़ी। उसके बाद एक सेकेण्ड के अन्दर ही, जब रावेना मदिरापात्र अपने ओठों से लगाने को उठा रही थी, मैंने देखा–या स्वप्न में मुझे मालूम हुआ हो कि मैं देख रहा हूं–कि कमरे के वातावरण के किसी अदृश्य स्रोत से चमकदार लालमणि के रंग की तीन-चार बड़ी बूदें उस पात्र में गिर पड़ी हैं। इसे केवल मैंने देखा, रावेना ने नहीं। वह तो बिना किसी हिचकिचाहट के

मदिरा पी गई, और मैं परिस्थिति की बात उसे बताने से रुक गया, क्योंकि मेरे विचार से वह किसी ऐसी सघन कल्पना का संकेत थी जो महिला के भय, अफीम, तथा उस समय के अभाव के कारण विकृत रूप से सक्रिय हो उठी थी।

फिर भी, मैं इसे अपने से छिपा नहीं सकता कि इस समय के बाद मेरी पत्नी की दशा तेज़ी के साथ बिगड़ने लगी, यहां तक कि तीसरी रात को उसके सेवकगण उसे मकबरे के लिए तैयार करने लगे, और चौथे दिन मैं उसके कफ़न ओढ़े हुए शव के पास उसी सुसज्जित कक्ष में अकेला बैठा हुआ था जिसने एक दिन मेरी नववधू के रूप में उसका स्वागत किया था। अफीम-जनित विलक्षण दृश्य, छाया की भांति, मेरी आंखों के आगे नाचने लगे। मैं अशान्त, उद्विग्न नयनों से कभी कमरे के कोनों में रखे शवाधारों को देखता, कभी यवनिकाओं पर उभरती विभिन्न आकृतियों पर नज़र डालता और कभी अपने सिर पर लटकते हुए धूपदान की बहुरंगी ज्वालाओं का कम्पन देखता था। इसके बाद जब मैं किसी पिछली रात की परिस्थितियों की याद करने लगा तो मेरी आंखें धूपदान की आभा के नीचे उस स्थान पर जा पड़ी जहां मैंने छाया की धुंधली आकृति देखी थी। अब वह वहां नहीं थी इसलिए, कुछ ज़्यादा सरलता से मैंने सांस ली और शय्या पर पड़ी कड़ी और विवर्ण

आकृति पर नज़र डाली। बस, मेरे मन में लीजिया की हज़ारों स्मृतियां उठ खड़ी हुईं और तूफ़ान का दुर्दान्त आघात करती, मेरे हृदय पर वह सब अकथ वेदना आकर महरा पड़ीं जिसके साथ मैंने उसे इसी प्रकार कफ़न से ढके जाते देखा था। रात ढलने लगी, तब भी, अपनी एक मात्र तथा सर्वाधिक प्रियतमा की तीक्ष्ण स्मृतियों से पूर्ण हृदय लिए, मेरी आंखें रावेना के शव पर जमी रहीं।

आधी रात रही होगी, या उससे कुछ कम या ज़्यादा रहा हो क्योंकि समय पर मैंने ध्यान नहीं दिया था, जब धीर, मृदु बिल्कुल स्पष्ट सिसकी ने मेरा दिवास्वप्न तोड़ दिया और मैं चौक उठा। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि वह सिसकी उस आबनूसी पलंग, उस मृत्युशय्या से ही आई है। मैंने मूढ़ाग्रही आंतक के क्लेश के बीच उसे सुनने की चेष्टा की किन्तु फिर वह आवाज़ सुनाई नहीं पड़ी, मैंने अपनी आंखों पर ज़ोर देकर शव में कोई हरकत देखने की कोशिश की किन्तु कोई भी चीज़ दिखाई नहीं पड़ी। किन्तु मुझे धोका तो नहीं हो सकता था। मैंने आवाज़ सुनी थी, फिर चाहे वह कितनी ही धीमी रही हो। मैंने दृढ़ निश्चय के साथ निरन्तर अपना ध्यान शव पर केन्द्रित कर दिया; मेरी सम्पूर्ण आत्मा मेरे अन्दर जाग पड़ी। रहस्य पर प्रकाश डालने वाली परिस्थिति पैदा होने के पूर्व कितने ही मिनट बीत गए। अन्त में यह स्पष्ट हो गया कि गालों पर और पलकों की शिथिल लघु शिराओं के आस-पास एक बड़ी हलकी और

मुश्किल से दिखाई पड़ने वाली रंगाभा फैल गई है। मानव की भाषा जिसे पूरी तरह प्रकट नहीं कर सकती उस अकथ भय और आतंक से मेरा माथा घूम गया और मुझे लगा कि मेरे हृदय की धड़कन बन्द हो रही है तथा मैं जहां बैठा हूं वहीं मेरा अंग-प्रत्यंग कड़ा पड़ता जा रहा है फिर भी अन्त में, कर्त्तव्यभावना ने मुझे अपने ऊपर नियन्त्रण स्थापित करने को प्रेरित किया। मुझे अब सन्देह नहीं रहा कि उसे समाधिस्थ करने की तैयारी में हमने जल्दबाज़ी की है, और रावेना अब भी जीवित है। यह आवश्यक था कि तुरन्त कोई उपाय किया जाय, किन्तु वह शिखर का भाग सेवकों वाले हिस्सों से बिल्कुल अलग और दूर पड़ता था, कोई मेरी आवाज़ वहां से नीचे सुन सकता था। जब तक मैं कुछ मिनटों के लिए कमरा छोड़कर न जाऊं उन्हें सहायता के लिए बुलाने का कोई साधन मेरे पास नहीं था और यह मैं कर नहीं सकता था। इसलिए जो आत्मा अब मंडरा रहीं थी उसे वापिस लाने के लिए मैंने अकेले ही प्रयत्न शुरू कर दिया। किन्तु थोड़ी ही देर में इसका निश्चय हो गया कि फिर उसकी वही दशा हो गई है; इस बार तो गालों एवं पलकों का रंग एकदम उड़ गया और चेहरे पर संगमर्मर से भी अधिक सफ़ेदी छा गई; ओंठ मृत्यु की भीषण अभिव्यक्ति से बिलकुल सिकुड़ गए और शरीर की सतहपर तेज़ी से वीभत्स लिजलिजाहट और शीतलता फैल

गई फिर उसी पर गिर पड़ा और पुनः लीजिया के अनुरक्त जागृतिमय स्वप्नों में डूब गया।

इस तरह घंटा भर बीता होगा कि मुझे दूसरी बार शय्या से निकलकर आती हुई अस्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़ी। अत्यन्त भयभीत होकर मैं उसे सुनने लगा। आवाज़ फिर आई–एक दीर्घ निश्वास की आवाज़। मैं शव के पास झपटा, मैंने देखा, निश्चित रूप से देखा कि ओंठ हिल रहे हैं। एक मिनट के बाद वे कुछ खुल गए और मोती से दांतों की चमकती रेखा दिखाई पड़ी। मेरे कलेजे में अभी तक केवल विस्मय करवट ले रहा था किन्तु अब वह आतक से पूरित हो उठा। मुझे अनुभव होने लगा कि मेरी दृष्टि धुंधली पड़ती जा रही है, मेरा विवेक लड़खड़ा रहा है, और तब मैं एक झटके के साथ अपने को उस कार्य के लिए तैयार कर सका जो कर्त्तव्य ने एक बार पुनः मेरे आगे डाल दिया था। इस समय उसके ललाट, कपोल और कण्ठ पर एक आंशिक दीप्ति थी–सम्पूर्ण शरीरयाष्टि में किंचित् गर्मी फैलती जा रही थी। हृदय तक में हलकी धड़कन होने लगी थी। वह जीवित थी। मैं दूने उत्साह से उसे होश में लाने की चेष्टा करने लगा। कभी कनपटियों और हाथों को रगड़ता, कभी पानी से तर करता, मतलब जो कुछ उपाय अपने अनुभव से या चिकित्सा-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़कर मैं कर सकता था, सब करता रहा।

किन्तु सब कुछ व्यर्थ हो गया। अकस्मात् रंग उड़ गया, नाड़ी बन्द हो गई, होंठों से पुनः मरे हुए की-सी अभिव्यक्ति प्रकट हुई और उसके क्षण-भर बाद ही सम्पूर्ण शरीर ने अपने ऊपर बर्फीली शीतलता, नीली आभा, अति कड़ापन, डूबी हुई रूपरेखा, तथा वे सब घृण्य विशेषताएं ओढ़ लीं, जो कई दिनों से कब्र में पड़े हुए आदमी के शरीर में पाई जाती है।

और पुनः मैं लीजिया के स्वप्नों में खो जाता हूं, और पुनः (कैसे आश्चर्य की बात है कि मैं लिखते हुए भी कांप रहा हूं) आबनूसी शय्या की ओर से मेरे कानों में धीमी सिसकी की आवाज़ आती है। किन्तु उस रात की अकथ भीषणताओं के सूक्ष्म ब्यौरों को मैं क्यों लिखूं? या मैं इस बात का वर्णन ही क्यों करूं के भूरी उषा का उदय होने तक, बार-बार पुनर्जीवीकरण का यह भयानक नाटक चलता रहा और हर बार पहले से कहीं कठोर और अनुद्धार्य मृत्यु की ओर ले जाने वाला रोगाक्रमण होता रहा? अब हमें जल्दी ही परिणाम पर आ जाना चाहिए।

भयावनी रात का अधिकांश बीत चुका था कि रावेना की लाश एक बार फिर हिलने लगी–इस बार का कम्पन अब तक के सब कम्पनों से अधिक ज़ोरदार था, यद्यपि वह अपनी निपट निराशापूर्णता में पहले की अपेक्षा ज़्यादा भयावने अन्त में उद्भूत ज्ञात होता था।

मैंने बहुत पहले से अपना प्रयत्न, यहां तक कि हिलना-डुलना भी छोड़ दिया था और गद्दीदार मचिया पर निश्चल बैठा हुआ था। मेरी हालत उग्र मनोवेगों के बवन्डर में पड़े हुए असहाय शिकार की भांति थी। इन मनोवेगों में निरतिशय आतंक का मनोवेग शायद सबसे कम भयंकर और विनाशक था। मैं फिर दोहराता हूं कि लाश हिली, इस बार पहिले से कहीं ज़ोरों के साथ हिली। चेहरे पर जीवन का रंग अस्वाभाविक ऊर्जा के साथ दौड़ गया, अंगों की अकड़न दूर हो गई, और इसके सिवा कि पलकें अब भी भारीपन के साथ एक कमरे से सटी हुई थीं और कब्र का कफ़न और परिधान अब भी शरीर के शवरूप का परिचय दे रहा था, यह स्वप्न देखना मेरे लिए सम्भव था कि रावेना ने मौत की बेड़ियों को पूरी तरह से तोड़ दिया है। यद्यपि उस समय भी यह धारणा पूरी तरह से ग्रहण नहीं की गई किन्तु उसमें अविश्वास कैसे कर सकता था जब मैंने खुद देखा कि वह शय्या से उठ बैठी है, और लड़खड़ाते, दुर्बल पगों से, आंखे बन्द किए, स्वप्नाविष्ट प्राणी की भांति, अपने शरीर से, स्थूल रूप से, कक्ष के मध्य-भाग की ओर बढ़ रही है?

मैं कांपा नहीं–मैं हिला नहीं, क्योंकि वहां के वातावरण, प्राणी के रंग-ढंग से सम्बद्ध अकथ्य कल्पनाओं की भीड़ मेरी मस्तिष्क में तेज़ी के साथ झपटी आ रही थी और मुझे पत्थर कर दिया था। मैं हिला नहीं–किन्तु उस प्रेत-छाया की ओर टकटकी लगाए रहा। मेरे विचारों में एक उन्मत्त विशृंखलता थी–एक मानसिक संक्षोभ जो शान्त नहीं किया जा सकता था। क्या वह सचमुच जीवित रावेना थी जो मेरे सामने खड़ी थी? मुझे इसमें सन्देह क्यों हो रहा था? मुंह के इर्द-गिर्द भारी पट्टियां बंधी थीं–किन्तु मुझे मुंह तो त्रिमेन की सांस लेती महिला का ही था। और कपोल उन पर वही गुलाब थे जो जीवन की दोपहरी में, प्रौढ़ यौवन में, दिखाई पड़े थे–निश्चय ही वे त्रिमेन की जीवित महिला के ही कपोल थे। और गड्ढे के साथ वह चिबुक, स्वस्थ अवस्था-जैसा ही वह चिबुक, क्या वह उसका नहीं था? *किन्तु क्या वह बीमारी के बाद ज्यादा लम्बी हो गई है?* इस विचार के आते ही कैसे अनिर्वाच्य उन्माद ने मुझे ग्रस लिया? एक छलांग में मैं उसके पैरों के पास जा पहुंचा। मेरे स्पर्श से वह सिकुड़ गई और उसने अपने सिर से वे भयानक पट्टियां खोलकर गिरा दीं और अब उस कमरे के गतिशील वातावरण में खुले केश के बड़े गुच्छे लहरा उठे। वे *निशीथ के कृष्ण पंखों से भी अधिक काले थे।* और अब मेरे सामने खड़ी आकृति ने आंखें खोल दीं। मैं ज़ोर से चीख पड़ा–"कम से कम यहां तो मैं भूल नहीं कर सकता–हर्गिज़ भूल नहीं कर सकता कि ये लीजिया की विकसित, काली और उद्दीप्त आंखें हैं।"

•••

प्रगति पुस्तक माला

नवविधान

शरत्चन्द्र

बंगला साहित्य के कथा शिखर शरत्चन्द्र का समाज की पुरानी मान्यताओं पर तीखा प्रहार करने वाला मार्मिक लघु उपन्यास।

जागरण

शरत्चन्द्र

बंगला के महान् कथा-शिल्पी का एक विचारोत्तेजक उपन्यास, जिसकी हर घटना मन-मस्तिष्क को झकझोर देती है।

मंझली दीदी

शरत्चन्द्र

नारी के प्रति आदर भाव रखने वाले बंगला के प्रसिद्ध लेखक का मन को छू लेने वाला एक लघु उपन्यास मंझली दीदी।

प्रगति पुस्तक माला

घरबारी क़ानून

एम० जे० एंटनी

घर-परिवारों के लिए भी कुछ क़ानून ऐसे हैं, जो घर के मुख्य लोगों को अवश्य जानने चाहिए, ताकि कोई किसी परेशानी में न पड़ जाए। सच्चा ज्ञान कराने वाली महत्त्वूर्ण पुस्तक।

नौकरी, व्यवसाय और क़ानून

एम० जे० एंटनी

आज नौकरी करने वाले और व्यवसाय करने वालों को बहुत ही ज़रूरी है कि वे इस बारे में क़ानून की सीधी जानकारी रखें, ताकि सावधन रह सकें। यह पुस्तक इस मामले में आप की मदद करती है।

क़ानून की बुनियादी बातें

एम० जे० एंटनी

क़ानून के प्रख्यात विद्वान द्वारा हरेक के लिए एक ऐसी पुस्तक जो क़ानून का बुनियादी पाठ पढ़ाती है और उसे ऐसा बना देती है कि वह कहीं मात न खा सके।

प्रगति पुस्तक माला

एक दिन का हाकिम

जी.पी. श्रीवास्तव

हास्य-व्यंग्य से भरपूर कहानियां लिखनेवाले यह एक ऐसे लेखक की पुस्तक है, जो बरसों बाद भी लोकप्रिय हैं और इनकी एक-एक रचना आज भी ढूंढ-ढूंढकर पढ़ी जाती है। हंसाने वाले चित्रों के साथ।

बीरबल ज़िंदा है

जी.पी. श्रीवास्तव

हास्य-व्यंग्य के अमर कथा-शिल्पी की एक-एक पृष्ठ पर छेड़-छाड़ करने और ख़ूब-ख़ूब हंसानेवाली रचनाओं का रोचक-मनोरंजक संकलन। हर पल हंसी के संग-संग और कई कार्टून चित्र।

दुनिया रंग-बिरंगी

देवराज दिनेश

हास्य रसावतार द्वारा लिखित हंसी-मज़ाक़ से भरपूर गुदगुदानेवाली रचनाओं की पुस्तक

प्रगति पुस्तक माला

एक दिन का हाकिम

जी.पी. श्रीवास्तव

हास्य-व्यंग्य से भरपूर कहानियां लिखनेवाले यह एक ऐसे लेखक की पुस्तक है, जो बरसों बाद भी लोकप्रिय हैं और इनकी एक-एक रचना आज भी ढूंढ-ढूंढकर पढ़ी जाती है। हंसाने वाले चित्रों के साथ।

बीरबल ज़िंदा है

जी.पी. श्रीवास्तव

हास्य-व्यंग्य के अमर कथा-शिल्पी की एक-एक पृष्ठ पर छेड़-छाड़ करने और ख़ूब-ख़ूब हंसानेवाली रचनाओं का रोचक-मनोरंजक संकलन। हर पल हंसी के संग-संग और कई कार्टून चित्र।

दुनिया रंग-बिरंगी

देवराज दिनेश

हास्य रसावतार द्वारा लिखित हंसी-मज़ाक़ से भरपूर गुदगुदानेवाली रचनाओं की पुस्तक।

बड़ी दीदी

शरत्चन्द्र

नारी मन के कुशल चितेरे बंगला के अमर कथाकार का उद्वेलित कर देने वाला बहुत अधिक लोकप्रिय उपन्यास है 'बड़ी दीदी'।

छोटा राजकुमार

आंत्वान द सेंतेक्ज़्युपेरी

फ्रांस में जन्मे विमान चालक के विश्व चर्चित उपन्यास 'द लिटिल प्रिंस' का अनुवाद। उनके बनाए 46 चित्रों और आवरण से सज्जित लोक-कथा शैली में लिखी अनूठी पुस्तक। फ़्रांस सरकार द्वारा विशेष संरक्षित, जिस पर 'एयरोग्राम' भी जारी हुआ।

उसने कहा था

गुलेरी

19वीं शताब्दी की सबसे अधिक प्रशंसित और सम्मानित कहानी, जिस पर फ़िल्म भी बनी। आज भी जिसके लाखों पाठक दीवाने हैं।

इंद्रजाल

जयशंकर प्रसाद

महाकवि और सुप्रसिद्ध नाटककार की रोचक औ मर्मस्पर्शी कहानियों का संग्रह। इसमें लेखक की सर्भ। प्रसिद्ध कहानियां हैं।

आकाशदीप

जयशंकर प्रसाद

हिन्दी साहित्य के शिखर पुरुष, महान् कवि और प्रख्यात नाटककार की सर्वाधिक चर्चित कहानी 'आकाशदीप' के साथ अन्य सर्वश्रेष्ठ कहानियां।

प्रगति पुस्तक माला

सूक्ति सुधा

मानसहंस

विषय के अनुसार, अक्षर क्रम सहित, जैसे कि सूक्ति-कोश। हमेशा आपके साथ। हर समय, हर अवसर पर आपका महत्त्व लोगों को बतानेवाली सूक्तियां। पढ़ें, याद करें और जब चाहें इस्तेमाल करें। आपका लोहा मनवाने का दावा।

अनमोल मोती

मानसहंस

शीर्ष पुरुषों और स्त्रियों के मुख से निकल अनमोल वचनों का संग्रह, जिसकी एक-एक सूक्ति आबदार मोती है। आप इन्हें महफ़िलों, भाषणों, पार्टियों और सभाओं में सुनाकर विद्वता की छाप छोड़ें।